जीवन – चरित्र

संत कृपाल सिंह

(उन के अपने शब्दों में)

समर्पित
प्यारे सत्गुरु को

जीवन – चरित्र

संत कृपाल सिंह

(उन के अपने शब्दों में)

कृपाल रूहानी सत्संग सभा (भबात)
चंडीगढ़

प्रकाशक
कृपाल रूहानी सत्संग सभा (भबात)
दफ्तर :
170, सैक्टर 48 ए, मयूर विहार,
चंडीगढ़-160 047 (भारत)
फोनः 0172-2678072

प्रिंटर्ज :
संजय प्रिंटर्ज,
404, इंडस्ट्रियल एरिया फेज़-2,
चंडीगढ़

6 फरवरी, 2009
(115वां जन्म दिवस)

1800 कापियां

प्रकाशक की ओर से

परमात्मा-प्राप्ति का रास्ता इन्सान का नहीं खुद प्रभु का बनाया हुआ है। प्रभु जब जीवों को अपने साथ मिलाना चाहता है तो वह किसी प्रभु-प्राप्त महापुरुष को जन-कल्याण के लिए भेज देता है।

परमात्मा ने इंसान बनाये और इंसान को अपना रूप बनाया। इन्सान ने आगे समाज बना कर उनको अपने रंग में रंग दिया और समाजों की जकड़ों में फंस कर रह गया। कोई भी सच्चा धर्म शुरू में सादा और स्पष्ट होता है लेकिन समय बीतने पर वह एक परम्परा, एक लकीर की फकीरी बन कर रह जाता है और उसमें गिरावट आने लगती है। धीरे-धीरे वह इन्सानों को प्रेम, प्यार और भ्रातृत्व की लड़ियों में पिरोने की बजाय आपसी वैर-विरोध और लड़ाई-झगड़े का, इन्सान को इन्सान से, समाज को समाज से, देश को देश से, जाति को जाति से तोड़ने का कारण बन जाता है। जब दुख और सन्ताप का प्याला भर जाता है तो प्रभु किसी महापुरुष को जगत के उद्धार के लिये भेजता है जो इन्सानी भाईचारे के साथ-साथ जिस्म-जिस्मानियत की जिन्दगी से ऊपर उठकर अपने आपको जानने और प्रभु को पहचानने का सबक सिखाता है। जितने भी महापुरुष- -जोराष्ट्र, महावीर स्वामी, गौतम बुद्ध, यसु मसीह, हजरत मुहम्मद साहब, कबीर साहब, गुरु नानक साहब आदि दुनिया में आये, उन सब का उद्देश्य यही था। ऐसे महापुरुष जीवों के कल्याण के लिए दुनिया में आते हैं और उनका उपदेश सबके लिये सांझा होता है जो न कभी बदला है न बदल सकता है। वे उस प्रभु के अनंत स्रोत से जुड़े हुए होते हैं। वे मन-बुद्धि के घाट पर नहीं बोलते बल्कि अंतर से आ रही अनन्त की धारा के आधार पर बोलते हैं। इसी श्रेणी के महापुरुषों में संत कृपाल सिंह जी का नाम आता है।

संत कृपाल सिंह जी के जीवन के बारे में पिता-पूत पुस्तक में काफी कुछ लिखा मिलता है जिसको यहां दोहराने की आवश्यकता नहीं। उस पुस्तक में सन् 1955 तक के हालात का ही वर्णन है जब कि प्रस्तुत पुस्तक में 1974 तक के हालात को वर्णित करने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक का भाग 1 (अध्याय 1 से 10) पूर्णतया महाराज जी के अपने शब्दों पर आधारित है जिस में उन की शिक्षा तथा जीवन संबंधी भरपूर सामग्री उपलब्ध कराई गई है। भाग 2 में उन के जीवन संबंधी प्रसिद्ध घटनाओं को तिथि-अनुसार क्रमबद्ध किया गया है परंतु वहां भी अधिकतर महाराज जी के अपने वचनों का ही सहारा लिया गया है। भाग 3 में ताई हरदेवी जी जो महाराज जी की निजी सेवादार रहीं, द्वारा वर्णित यादें संकलित की गई हैं तथा भाग 4 में गुरबाणी में वर्णित 'कृपाल' संबंधी तुकें लिखी गई हैं। इस प्रकार स्पष्टतया इस सभा की ओर से पुस्तक में कोई विशेष योगदान नहीं सिवाय इस के कि बहुत सी सामग्री अपनी तुच्छ बुद्धि द्वारा अंग्रेजी भाषा से अनुवाद कर के प्रकाशित की जा रही है। इस सारे कार्य को सम्पन्न करने का श्रेय भी स्वयं महाराज जी को ही जाता है जिनके अदृश्य हाथों, शक्ति, अंतर-प्रेरणा एवं दया-दृष्टि द्वारा यह अनुवाद और संकलन संभव हो सका है।

अपनी ओर से अंग्रेजी के मूल-भाव को ज्यों का त्यों बनाए रखने की भरपूर कोशिश की गई है, फिर भी जाने-अनजाने में अनुवाद, संकलन अथवा प्रकाशन में रह गई त्रुटियों के लिए परमार्थाभिलाषियों तथा महाराज जी से सनिम्र क्षमा-याचना की जाती है।

6 फरवरी, 2009 (115वां जन्म दिवस)

कृपाल रूहानी सत्संग सभा(भबात), चंडीगढ़

विषय सूची

प्रकाशक की ओर से

अध्याय		पृष्ठ
	भाग – 1	
1.	मुख्य शिक्षाएं	1 – 13
2.	बचपन	14 – 18
3.	सत् की खोज	19 – 35
4.	गुरु शिष्य की कहानी	36 – 57
5.	भारत में मिशन	58 – 74
6.	विश्व यात्राएं	75 – 100
7.	मानव केंद्र देहरादून की स्थापना – 1969	101 – 103
8.	विश्व मानव एकता सम्मेलन – फरवरी 1974	104 – 111
9.	भारतीय संसद को संबोधन – 1 अगस्त, 1974	112 – 113
10.	अगस्त 1974 के प्रवचन	114 – 115
11.	हवाले	116 – 121
	भाग – 2	
12.	प्रसिद्ध तिथियां व घटनाएं	122 – 140
	भाग – 3	
13.	कृपाल की यादें – ताई हरदेवी जी	141 – 157
	भाग – 4	
14.	गुरबाणी में 'कृपाल'	158 – 174

भाग – 1

भाग – 1

अध्याय 1

मुख्य शिक्षाएं

सब धर्मों से बड़ा एक धर्म है जो सब के लिए है जिसे सच कहते हैं। पूर्ण महापुरुष जब जब भी आते हैं इस का ही प्रचार करते हैं। हम इसे भूल गए हैं, यही बात है।

मैं सभी जगह जाता हूँ। सभी धर्मों के लोग मुझे बुलाते हैं, वे मुझ से प्यार करते हैं और मैं उन से प्यार करता हूँ। शायद उन का प्यार आपसी संबंध के कारण होता है या मेरा प्यार आपसी संबंध के कारण होता है; इसका मुझे पता नहीं परंतु वे मुझे प्यार करते हैं और मैं उन्हें प्यार करता हूँ। जब भी मैं उन के पास जाता हूँ तो मैं महसूस करता हूँ कि मैं अपने घर पर ही हूँ क्योंकि वे भी उसी सत् के पुजारी हैं।[1]

इसलिए मैंने कहा, "सभी धर्मों से बड़ा एक धर्म है और वह सत् है, वह प्रेम है, वह जीवन है, वह ज्योति है।" और जो महापुरुषों का कहना मानते हैं वे अंधेरे में नहीं रहेंगे। वे ज्योति में जाएंगे; मानव – पुत्र की ज्योति में नहीं, बल्कि उस प्रभु – पुत्र की ज्योति में जो उस के द्वारा चमकती है। हम उस ज्योति के पुजारी हैं।[2]

मौजूदा समय एक प्रैक्टीकल ज़माने का है। लोग बिना प्रैक्टीकल के विश्वास नहीं करते। हमें सत् की प्राप्ति भी प्रैक्टीकली होनी चाहिए, तभी यह लोगों की समझ में आएगी। यह सत् सब से प्रबल है। समय बदल रहा है। केवल यही चीज़ लोगों को जचेगी। इसी मंच पर ही हम सब इकट्ठे बैठ सकते हैं।[3]

मैं आज आप को कोई नई बात नहीं बता रहा क्योंकि यही

शिक्षा भूतकाल में आए सभी महापुरुषों की रही है। हम बार – बार इसे भूलते रहते हैं और महापुरुष इसी सनातन सच्चाई का आकर प्रचार करते रहते हैं। जो भी मुझे अब तक समझ आई है वह अपने सत्गुरु की कृपा से या उन के द्वारा काम कर रही प्रभु – पावर से अथवा धर्म – ग्रंथों के समानांतर अध्ययन से आई है।[4]

एक आदमी जिस ने किसी काम में निपुणता प्राप्त की है पहली नज़र देखने से वह एक साधारण मनुष्य नजर आएगा। असल में वह मनुष्य ही होता है परंतु उस ने किसी खास काम में निपुणता प्राप्त कर ली होती है। जब आप उस के पास बैठेंगे तो उसे अपने क्षेत्र में महान पाएंगे। महापुरुष भी इसी तरह ही होते हैं। जब पहले – पहल आप उस से मिलते हैं तो वह एक आम आदमी की तरह नज़र आता है। वह खुद भी आपको कहेगा, "मैं इन्सानी तौर पर आप से बात कर रहा हूँ। मैं आप की तरह ही इन्सान हूं। मुझे अपने सत्गुरु के चरणों में बैठने का सुनहरा अवसर मिला है जिस से मैं रूहानियत के रास्ते पर तरक्की कर सका हूँ। जो प्रभु – पथ की तलाश में हैं, उनका स्वागत है।"

एक डाक्टर पहले एक इन्सान होता है, बाद में डाक्टर। एक इंजीनियर पहले एक इन्सान है, बाद में इंजीनियर। इसी प्रकार एक रूहानी पुरुष, एक सत्गुरु, पहले एक इन्सान होता है, बाद में रूहानी मार्गदर्शक होता है। मनुष्य में महान संभावनाएं छिपी हैं; मनुष्य महान है। जिसने किसी क्षेत्र में निपुणता प्राप्त की वह आप को, यदि आप उसी क्षेत्र में जाना चाहते हैं, मार्गदर्शन दे सकता है।[5]

योगियों के भी दर्जे हैं। कुछ योगी होते हैं, कुछ योगीराज या योगीश्वर। योगियों के दो दर्जे हैं; योगी आम तौर पर पहले स्थान सहस्रार या सहंसदल कमल तक पहुंचते हैं। योगीश्वर तीसरे स्थान तक जाते हैं और थोड़ी अंदर डुबकी लगाते हैं। संत सच्चे पिता के सच्चे घर सत्नाम तक पहुंचता है। एक परमसंत होता है जो तीनों स्थानों को पार कर के अशब्द में लीन हो चुका होता है। ये दर्जे हैं। कई लोग पहले दर्जे के होते हैं और कुछ दूसरे या तीसरे दर्जे के होते हैं। कुछ थोड़े लोग ही

तीनों स्थानों को पार करते हैं। जो निरन्तर चौथे लोक में जाते हैं, उन्हें संत कहा जाता है। चौथा लोक बंटा हुआ है; कुछ इसे एक ही लोक कहते हैं तो कुछ दो भागों में बांटते हैं। सत् लोक सचखंड कहें या और कुछ, अशब्द रूपी प्रभु के प्रकाश से प्रकाशवान है। आगे के कुछ दर्जे लय होने के हैं; उन्हें अलख, अगम, अनामी, स्वामी, राधास्वामी, निर्मला, महादयाल या किसी और नाम से पुकारिए, यह सर्वोच्च दर्जा है।[6]

मेरे द्वारा बरते शब्दों के अंतर पर ध्यान दीजिए। मैंने कहा कि सत्नाम उस अशब्द प्रभु के इज़हार (प्रकट) होने का पूर्ण रूप है। (इस से) ऊंचे मंडलों में आत्मा लीन हो कर अशब्द रूप हो जाती है, जहाँ ज्योति और नाद नहीं होते। वे ऊंचे मंडल हैं। अंतिम अशब्द रूप मंडल में कोई ज्योति और ध्वनि नहीं है। यह तभी आती है जब आत्मा इज़हार (प्रकट) रूप में आती है। विभिन्न मंडल हैं जिन्हें आप सचखंड, अलख, अगम और अनामी नामों से पुकार सकते हैं; अशब्द रूप को अनाम, महादयाल, राधास्वामी और दूसरे कई नामों से जाना जाता है।[7]

गुरु जब शिष्य को पथ पर चलने के लिए नाम देता है, वह उसको तब तक नहीं छोड़ता जब तक कि उसे सत्पुरुष की गोद में न पहुंचा दे। फिर सत्पुरुष उसे अलख, अगम और अनामी तक पहुंचाता है। गुरु का काम बड़ा कठिन है। गुरु शब्द सुनते ही रूह कांप उठती है परन्तु आजकल लोग गुरु बनने के लिए बड़े उतावले रहते हैं और यह कहो कि वे इसे एक मनोरंजन समझते हैं। सच तो यह है कि गुरु खुद ही प्रभु होता है। जिस मनुष्य देह पर प्रभु खुद इज़हार (प्रकट) कर रहा होता है उसे साधु, संत, महात्मा अथवा महापुरुष कहा जाता है।[8]

अब बसंत का मौसम आया है; और भी कई संत अपनी खुशबू बिखेरेंगे और प्रभु – कृपा से नाम के साथ जोड़ेंगे। यह एक क्रांति है, एक रूहानी क्रांति जो सब तरफ आ रही है। आप देखिए, ये सब लोग क्यों आ रहे हैं? भूतकाल में ये चीज़ें लम्बे समय तक टैस्ट लेने के बाद

लोगों के कानों में बताई जाती थीं। आजकल यह खुले आम दी जाती है। लोग बिना इस भेदभाव के कि उन का बर्तन तैयार है या नहीं, कुछ न कुछ प्राप्त कर रहे हैं। जमाना बदल गया है, इसी चीज़ की जरूरत है। महापुरुष लोगों को इन चीज़ों का अनुभव देने आते हैं क्योंकि मानव – तन में ही हम इसे पा सकते हैं, और किसी दूसरी योनि में नहीं।[9]

पुराने जमाने में शिष्य को गुरु के पास कई – कई साल रह कर सेवा करनी पड़ती थी। फिर तकरीबन एक साल बाद जब गुरु शिष्य को फिट समझता था तो उसे रास्ते पर डाल देता था। अब जमाना बदल गया है। अब सत्गुरु शुरू से ही शिष्य को अपनी संभाल में ले लेता है चाहे वह पापी हो, सबसे बड़ा पापी हो या कम पापी हो, हम सब पापी हैं। वह एक साथ दो काम करता है – एक उसे साफ करने का तथा दूसरा अंतरीय रास्ते पर डालने का। वह डायरी या इसी तरह का कोई दूसरा ढंग बताता है। अगर किसी पेड़ को काटना हो तो पहले तने की बजाय टहनियों को काटना ठीक रहता है। जीवन की पड़ताल टहनियों को काटने के समान है। तना अंतर में शब्द – पावर के साथ जुड़ने से ही कट सकता है।

सैंकड़ों लोगों को रास्ते पर चलने के लिए लिया जाता है और कुछ को ढीला छोड़ दिया जाता है। कभी – कभी वे छोड़ जाते हैं। क्यों? क्योंकि अंतर में गुरु से नहीं जुड़ते । वह आप का सच्चा हमदर्द है।[10]

आप इस को किसी प्रकार भी लीजिए परंतु मेरे ख्याल में दिल की गहराई से हर आदमी जानता है कि वह खुद कैसा है। अगर मैं सच बताऊं कि आप ने पाप किए हैं, दौड़ जाओ; मेरे विचार से कोई भी मेरे पास आने के लिए नहीं बचेगा। मुझे बताइए उस हालात में यहां कितने बचेंगे। महापुरुष सब कुछ जानते हुए भी प्रेमपूर्वक पापों को ध ोने की करते हैं। वे दिलों को नहीं तोड़ते। हर आदमी पापी है। हम सब पापी हैं। महापुरुष पापियों के लिए ही आते हैं। वे पहले उन्हें जगाते हैं और अंतर में जोड़ देते हैं।[11]

अब ज़माना बदल गया है। कोई भी लंबे समय तक सत्गुरु के पास नहीं रह सकता। उन्हें कुछ – न – कुछ देना पड़ता है। जो कुछ उन्हें (शिष्यों को) मिलता है, उसे जीवन की पड़ताल द्वारा बरकरार रखना चाहिए। नाम दान के समय कुछ – न – कुछ ज्योति और नाद का अनुभव दिया जाता है, जो कुछ दिन तक ठीक रहता है परंतु अगर आप का जीवन गंदा होता जाता है तो वह चीज़ खत्म हो जाती है।[12]

जीवन की पड़ताल के विचार अथवा डायरी रखने से आप अपने कर्मों का पता लगा सकते हैं। मैंने इसे काफी सोच – विचार के बाद लागू किया है। शुरू – शुरू में मैंने भी डायरी रखी है। अगर वाल्मीकि जैसा डाकू महात्मा बन सकता है तो आप भी बन सकते हैं। उधम सिंह नामक एक डाकू हमारे हजूर के चरणों में आ कर पूरी तरह बदल गया। कुछ डाकुओं को अब भी नाम मिलता है। नाम एक महान रहमत है। मन – बुद्धि की पहलवानी से मुक्ति नहीं हो सकती। कबीर साहब ने स्पष्ट कहा है:

साखी शब्द संदेश सुन मत भूलो भाई ।
संत मता कुछ और है जिन खोजा तिन पाई।।

रावण सब वेद – शास्त्रों का पंडित था। इस के होते हुए भी उसे दुराचारी माना जाता है। और हम क्या कर रहे हैं? स्वांग रचना और झूठे प्रापेगंडे से आदर्श – प्राप्ति नहीं होगी। हम सब को धोखा दे सकते हैं परंतु प्रभु को नहीं। नाम दान के समय से ही सत्गुरु अदृश्य तौर पर सदा शिष्य के साथ हो बैठता है और उस के सब कर्मों पर नज़र रखता है। सत्गुरु को अपने शिष्यों के सब कर्मों का पता होता है।[13]

डायरी के एक भाग में स्पष्ट कालम मिलेंगे – शायद ज्यादातर लोगों में ये पाए जाते हैं और नतीजा खराब निकलता है जो कि ठीक होना चाहिए। कभी – कभी लोग मेरे पास डायरी लाते हैं और मैं कहता हूं, "ठीक है, प्यारे भाई, आप का जीवन बहुत पवित्र है। क्या यह ठीक है? आप को ऐसी डायरी से तीसरे स्थान पर पहुंचा हुआ होना चाहिए। परन्तु आप के नतीजे कैसे हैं? जो आप ने इस बारे लिखा है

वह बहुत कम है।[14]

हम हमेशा दूसरों की कमियां ढूंढने की कोशिश करते हैं जो गलत बात है। नतीजा यह होता है कि हमारे अंदर भी वही कमी आने लगती है। एक बार मैंने Forethought Minus Fearthought नामक पुस्तक पढ़ी। उस पुस्तक में ज़िक्र था कि प्रचारक जापान गए और उन्होंने हज़रत मूसा के एक हुक्म का प्रचार करना शुरू किया कि आप औरतों को मत पीटो। लोगों ने हैरान हो कर पूछा कि क्या आप के देश में लोग औरतों को पीटते हैं। यह उन के लिए नई बात थी। वे सब आपस में आराम से रहते थे। कहा जाता है कि इस प्रकार के लगातार प्रचार से कई साल बाद उन लोगों ने भी औरतों को पीटना शुरू कर दिया। आप देखिए? जब आप दूसरों को कोई काम करने से रुकने को कहते हैं तो खुद मत करो, मत करो, मत करो नहीं तो उस का विपरीत असर आप पर होगा और समय पा कर आप भी वैसे ही बन जाएंगे। इसलिए हमेशा अपने आप पर ध्यान दो। अपने आप के सामने खुद सच्चे बनो, यही सब से बड़ी योग्यता है।[15]

चालीस – पचास साल पहले मैंने एक पुस्तक पढ़ी थी जिस में उस लड़की का ज़िक्र था जिसका चेहरा इतना भद्दा था कि कोई उस से शादी नहीं करना चाहता था। उस ने मायूस हो कर अपना शहर छोड़ दिया और एक छोटे से गांव में रहने लगी जहां सारा समय वह प्रभु की याद में गुज़ारती थी। इस प्रकार कुछ वर्ष बीत गए। याद रखिए, जैसे हमारे विचार होते हैं, उसी प्रकार चेहरा और शरीर हो जाता है। आदमी के हर रोज़ के काम का अनुमान उस के बाहरी चेहरे की शकल देख कर लगाया जा सकता है। तो कुछ साल बाद एक आदमी ने उस लड़की से शादी करने की इच्छा प्रकट की परंतु लड़की ने हैरान हो कर कहा कि मैं तो वह लड़की हूं जिस को सब ने रिजैक्ट कर दिया है। उस आदमी ने कहा कि वह (लड़की) वाकई बहुत सुंदर है और कहा कि यदि उस के शब्दों पर विश्वास न हो तो शीशे में देख लो। यह एक साधारण सी कहानी है यह बताने के लिए कि किस प्रकार आदमी के

लक्षण, आंखें; माथा और हाव – भाव प्रकट करने के ढंग उस के विचार के अनुरूप बदल जाते हैं। जैसा आदमी सोचता है वैसा बन जाता है।[16]

किसी विशेष समय पर जैसे हर तिमाही निरंतर आप की रूहानी तरक्की के बारे में जान कर मुझे खुशी होगी। जो आप देना चाहते हैं वह संक्षिप्त में दें। लंबी कहानियों का कोई लाभ नहीं। मान लो आप आठ पृष्ठ का पत्र लिखते हैं – कभी कभी तो दस या बारह पृष्ठ के पत्र भी लोग लिखते हैं। फिर मैं क्या करता हूं? छोटे पत्रों का उत्तर मैं पहले देता हूं। लंबे पत्र मैं बाद के लिए रख लेता हूं। ऐसा मुझे करना पड़ता है। इसलिए आप छोटा लिखें, मतलब की बात लिखें कि आप क्या चाहते हैं। वह पावर आप के अंदर हैं, वह सीधे आप की सहायता करेगी।[17]

एक बार इंग्लैंड से किसी ने मुझे लिखा, "आप दो शब्द प्रयोग करते हैं – कभी आप सत्गुरु कहते हैं तो कभी सत्गुरु – पावर। इस से आप का क्या अभिप्राय है?" सत्गुरु – पावर, क्राइस्ट – पावर और शब्द – पावर एक ही हैं। उसने मुझे लिखा, "जब आप कहते हैं कि सत्गुरु – पावर है, इस से आप का क्या मतलब है?" सत्गुरु से अभिप्राय वह सत्गुरु – पावर, क्राइस्ट – पावर या प्रभु – पावर है जो मानव तन में प्रकट होती है। मैं इसे सत्गुरु कहता हूं। वह पावर हमें कभी नहीं छोड़ती; वह शरीर में कंट्रोल करने वाली शक्ति है। मानव देह प्रभु का मंदिर है। हम खुश – किस्मत हैं कि हमें यह मानव तन प्राप्त हो चुका है।[18]

मैं आप को बताता हूं कि यह शिष्य बने रहने का मार्ग है। आप को चौकस रहना पड़ेगा; परंतु अगर आप कुछ समय तक इस पर अमल करेंगे तो यह आप की आदत में शामिल हो जाएगा। फिर आप इस पर ज्यादा देर चल पाएंगे और यह आप का स्वभाव बन जाएगा। आप इस के उलट नहीं चल सकेंगे। इसलिए क्यों नहीं मन की इस आदत से आप पूरा लाभ उठाते? किसी काम को आज करो, कल करो, एक महीना या ऐसे कुछ करो, फिर? फिर कुदरती तौर पर आप का मन उध

र ही जाएगा। आप मन को मित्र बनाओ और कहो, "ठीक है अब हम यह काम करें।" जब आप की आदत बन जाएगी तब आप का बचाव हो जाएगा।

एक बार जब आप को नाम – दान मिल चुका है, सत्गुरु तक पहुंचो। मेरे प्रवचन हैं, मेरी टेपें हैं, उन के पास जाओ। परंतु अगर आप कर्त्ता बनेंगे, आप का ध्यान उधर होगा, आप अध्यापक हैं, आप का अहं बढ़ता है और आप की तरक्की में रुकावट आती है। इस लिए अध्यापक (गुरु) मत बनो।[20]

मैं यह आप को साईस के तौर पर पेश कर रहा हूं, आप क्यों इस पर अमल नहीं करते। समझ लो, यह सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ है। इसी लिए सत्गुरु के पास बैठने से आप को वह चीज़ मिलती है जो आप सैंकड़ों सालों में भी नहीं सीख सकते। जो बातें मैं आप को बता रहा हूं वे बड़ी साधारण हैं। जब आप के घर में आग लगी हो तो आप का क्या फर्ज़ बनता है? क्या यह पूछना कि आग क्यों लगी और किस ने लगाई? पहले उस से बाहर निकलो। पहुंचो, पहुंचो, पहुंचो (शरीर से बाहर निकलना सीखो)। बस यही सब कुछ है। परन्तु क्या आप जानते हैं कि हम क्या कर रहे हैं? हम दूसरों का मार्गदर्शन करने के इच्छुक हैं।[21]

सारे महापुरुष कहते हैं कि उन के पास आने वाले लोगों की रूहानी मंडलों में चढ़ाई होते देख कर वे बहुत खुश होते हैं। हमारे हजूर फरमाया करते थे कि अगर मैं एक आदमी को भी सचखंड ले जाने में सफल हो गया तो मैं समझूंगा कि मेरा जीवन सफल हो गया। आप देखो, बहुत खुशी होती है, यह दूसरों को जीवन – दान देना है। यह जीवन – रौ आंखों द्वारा आती है, यह प्रभु की दात है। वह इसे लुटाना चाहता है। वह चाहता है कि अधिक से अधिक लोग इस से लाभ उठाएं।

मैं चाहता हूं कि यही चीज़ आप अपने दिल में बिठा लें और इस पर अधिक से अधिक अमल करें और फिर हर कदम पर आप की

अंतर से और बाहर से और ज्यादा संभाल होगी। बाहरी तौर पर आप संपर्क बनाए रखें। संपर्क के लिए आप के पास डायरी है। कभी हम सोचते हैं कि हम पूर्ण हो चुके हैं और कभी सोचते हैं कि पूर्ण नहीं हैं। मनुष्य सारी उम्र कुछ – न – कुछ सीखता और भूलता रहता है। शायद आपने मुझे वहां सुना होगा, मैं अभी भी एक विद्यार्थी हूं। न्यूटन महान विद्वान था, उस ने प्रकृति के ये बाहर के नियम खोजे। फिर भी वह कहा करता था कि मैं ज्ञान के अथाह सागर के किनारे से कंकड़ चुन रहा हूं। महापुरुष कभी शेखी नहीं मारता। वह कहता है कि यह सब उस (प्रभु) की कृपा काम कर रही हैं। उसे उस उच्च उद्देश्य का ज्ञान हो जाता है और वह नम्र हो जाता है। नम्रता संतों का श्रृंगार है।[22]

याद रखो जहां आप की तवज्जो होगी आप वहीं होंगे। मैं हमेशा कहा करता हूं कि सौ काम छोड़ कर सत्संग में जाओ और हज़ार काम छोड़ कर भजन करो। जहां एक से ज्यादा लोग सत्संग में बैठेंगे, उस (सत्गुरु) की याद बनेगी, वहां रेडियेशन (दया – धारा) होगी जिस से जिज्ञासा बढ़ती है। रेडियेशन की एक छोटी किरण भी बहुत सहायक होती है, चाहे कितना ज्यादा कड़ा काम आप को करने के लिए मिला हो।

तीर्थ – स्थान इसलिए बने क्योंकि कभी न कभी कोई महापुरुष वहां रहा। जो संभावनाएं किसी महापुरुष में होती हैं वही आप में भी हैं; तो आप अंतर में क्यों नहीं जाते जहां वह प्रभु आप का इंतजार कर रहा है। जब आर्कीमिडीज़ ने गुरत्वाकर्षण का केंद्र खोजा तब वह असल में सृष्टि के केंद्र की खोज में था और उसने ऐलान किया था कि अगर उसे यह केंद्र मिल गया तो वह दुनिया को हिला कर रख देगा। गुरत्वाकर्षण का केंद्र या दुनिया का केंद्र मनुष्य के अपने अंदर है – अंदर पूरे शक्तिशाली होने पर आप दुनिया को हिला सकते हो। महापुरुष जब आते हैं तो उन के साथ रूहानियत की बाढ़ आ जाती है। दूसरे लोग चिंघाड़ते और भाषण देते मर जाते हैं; महापुरुष की जुबान से निकला एक ही शब्द दिलों पर मार करता है। कबीर साहब फरमाते

हैं:

झगड़ा एक निबेड़ो राम, तीर्थ बड़ो कि हरि को दास।

आप को सत् और असत् का निर्णय करने की शक्ति प्राप्त है; तो असत् से सत् का पता निकालो। हज़रत मुहम्मद साहिब ने मक्का में नाद और ज्योति का अभ्यास किया और इसलिए कहा जाता है कि अगर आप ने खुदा की बादशाहत में दाखिल होना है तो आप को एक बार अवश्य इस शहर की तीर्थ – यात्रा करनी चाहिए। इस सवाल का ध्यान पूर्वक अध्ययन कीजिए; तब आप को मालूम होगा कि जिस ज्ञान की आप खोज में हैं वह आप के अंदर है – तो क्यों नहीं अंतर्मुख होते?[23]

मुझे समझ नहीं आती कि लोग गुरु बनने के पीछे क्यों भागते हैं। इस को अपना उद्देश्य बनाने से वे गुरु नहीं बन जाते। जब वे असल में गुरु बन जाएं तब ही उन्हें गुरु कहा जाएगा। ऐसा बनने पर भी वे खुद को गुरु नहीं कहेंगे। गुरु कभी नहीं कहता कि मैं गुरु हूं। वे कहते हैं कि यह प्रभु – पावर काम कर रही है। मेरा पिता मुझ में बैठ कर काम कर रहा है। वे कभी नहीं कहते कि मैं कर रहा हूं। मानव – पुत्र और प्रभु – पुत्र में यही अंतर होता है। दूसरे जिनका अनुभव थोड़ा होता है, इसी तरह ही हाथ – पैर मारते रहते हैं।

लोगों का ग्रुपों में बंटने का यह एक कारण है। कुछ किसी आदमी के श्रद्धालु हैं तो दूसरे किसी दूसरे आदमी के। नतीजा यह कि लोगों में विभाजन हो जाता है, विकास रुक जाता है और यही चीज़ ग्रुपों की आपसी कशमकश का कारण बनती है। मैंने यह देखा है। कुछ अधिकार जमाने लगते हैं; दूसरे भी ताकतवर होते हैं और इस से वे स्वाभाविक तौर पर उन पर श्रद्धा नहीं लाते। तब कशमकश शुरू हो जाती है जो तरक्की में बाधक बनती है। यही बाकियों के लिए बुरी मिसाल साबत होती है।[24]

जब सारे रिश्ते टूट जाते हैं और गुरु ही सब कुछ नज़र आता है, तब आप अपने काम में कामयाब हो जाते हैं। इस रास्ते में कोरे

शब्द – ज्ञान की कोई कीमत नहीं है। आप को उस (गुरु) के हर हुक्म का पालन करना होगा। अपना जीवन सच्चा और सुच्चा बनाओ, दूसरों की सेवा करो, कड़वे शब्दों से बचो। हरेक में प्रभु को हाज़िर समझ कर प्रेम करो। लोगों की सेवा प्रभु की सेवा है।

जब गुरु – रूपी वर्षा आती है तो लोगों के जलते हुए पृथ्वी रूपी दिलों को ठंडक दे जाती है। मेरे सत्गुरु का नाम सावन था। दया वर्षा के रूप में वे प्रभु के हुक्म से आते हैं, हमें उन के सत्संग से अपनी हृदय रूपी धरती की सारी गंदगी धो डालनी चाहिए। अब हमारे विचार बाहर जा रहे हैं परंतु सत्संग में हम उन्हें अंतर्मुख सत् की ओर कर सकते हैं। सब महापुरुष ऐसा उपदेश देते हैं। ईसा मसीह ने कहा है, "जहां दो या तीन लोग मेरी याद में बैठते हैं, मैं उन के बीच होता हूँ।" वहां तीव्र चार्जिंग होगी, चाहे वे शारीरिक रूप से सत्गुरु से हज़ारों मील दूर हों। गुरु गोबिंद सिंह जी फरमाते हैं कि जहां पांच सिख इकट्ठे बैठते हैं, वहां प्रभु होता है। नुकताचीनी और असहमति के वातावरण में कैसे शांति आ सकती हैं।[25]

रूहानी वचन बहुत संक्षिप्त परन्तु सारगर्भित (अर्थ – भरपूर) होते हैं। यह आप की समझ में आ गया, कोई शब्द तोता – रटन भाषा में नहीं कहा गया। बाइबल का एक पृष्ठ पढ़ो और आप को इस में काफी कुछ मिलेगा। एक तुक पढ़ कर उस पर विचार करो। हम केवल ऊपर – ऊपर से पढ़ते हैं। मैं आप को कोई नई बातें नहीं बता रहा, आप समझे। जो भी इस पर अमल करता है, वह पूर्ण लाभ प्राप्त करता है।[26]

मैं चाहता हूँ कि आप सब सत् के दूत बनें, परंतु ऐसे आप तभी बन पाओगे जब आप मेरे कहने के मुताबिक जीवन बनाओगे। डायरी बड़े अच्छे उद्देश्य से बनाई गई है – जैसा मैंने कहा, आप उस पर अमल करें। मुझे खाली डायरी भेज दो, मैं उसे स्वीकार करूंगा परंतु कितनी देर आप खाली डायरी भेजते रहेंगे? हर महीने खाली डायरी भेजने का आप साहस नहीं जुटा पाएंगे। आप नैतिक तौर पर महसूस

करेंगे कि आप गलत कर रहे हैं। आप रास्ते पर आ जाएंगे। मैं बताता हूँ कि डायरियां न तो थाने में भेजी जाती हैं और न ही उनका लोगों में प्रसारण किया जाता है। ये आप के अपने मतलब के लिए हैं ताकि आप जान सकें कि आप में कितनी खामियां हैं और फिर आप एक – एक कर के उन्हें निकालें। वे मुझे केवल आगे मार्गदर्शन के लिए भेजी जाती हैं। रोम का शहर एक दिन में नहीं बना था। वक्त लगना जरूरी बात है।[27]

खुला दिल रखो और सत् को धारण करो ताकि लोग आप को उस रोशनी में चमकता देखें। दूसरे आप जी – जान से मेहनत करें। ये दो चीज़ें बहुत जरूरी हैं। इसे ही प्रशाद कहा जाता है। मेरे ख्याल से मैंने कल रात सत्संग में कहा था कि एक प्रभु कृपा होती है, एक सत्गुरु कृपा होती है और आखिर में आत्म (अपनी) कृपा होती है। आपने देखा? हमारे हज़ूर कहा करते थे कि जो लोग अपना जीवन नेक – पाक बनाते हैं और भजन करते हैं, वे अपने – आप पर रहम करते हैं और जो इंद्रियों के भोगों – रसों में फंस कर इस काम के लिए समय नहीं निकालते, वे अपना गला अपनी छुरी से काटते हैं। इसलिए इन वचनों को पल्ले बांधो और इन पर अमल करो। आप बदल जाओगे, कुछ ही दिनों में बदल जाओगे।[28]

जैसा मैंने आप से कहा, ये कुछ बातें हैं जो मेरे दिल की गहराई से उन लोगों के लिए निकली हैं जो मुझे अति प्यारे हैं। आप सब मुझे अपने पुत्रों से भी ज्यादा प्यारे हो, अपने परिवार से भी प्यारे हो। मैं आप को आध्यात्मिक तरक्की की शुभकामनाएं देता हूँ। प्रभु – कृपा से आप को यह मानव – तन मिला है और प्रभु – कृपा से ही आप को प्रभु की राह का संपर्क मिल गया है। जीवन पड़ताल की डायरी रोज़ाना रखते हुए आप ने अपना विकास करना है, यह डायरी मुझे नियमित समय में, जैसे तीन महीने में एक बार अवश्य भेजें। अगर आप इस पर अमल करोगे तो सब कुछ ठीक हो जाएगा। यदि आग के पास बैठोगे तो ठंडक चली जाएगी। अगर आप बर्फ के समीप बैठोगे तो सब गर्मी चली जाएगी।

यदि आपकी आत्मा ज्योति और श्रुति के साथ जुड़ जाए तो सब शंकाएं मिट जाएंगी। शक – शंकाएं तब ही पैदा होती हैं जब हमारे कहने और करने में अंतर रहता है।

ये कुछ बातें मैं आप को बता रहा हूँ जब मैं शारीरिक तौर पर आप के साथ हूँ। जब मैं शारीरिक रूप से आप के साथ न रहा अथवा आप शरीर कर के मेरे साथ न रहे तो प्रभु – पावर जो सच्चा सत्गुरु है, आप के साथ रहता है। इस दुनिया के अंत तक मैं आप को नहीं छोड़ूंगा। यह पावर आप को सच्चे पिता की गोद में पहुंचाएगी और फिर वह परम पिता की गोद में पहुंचाएगी और इस के बाद वह परम पिता खुद अनामी अवस्था में ले जाएगा। मेरी शुभ – भावनाएं आप के साथ हैं, मैं आप की रूहानी तरक्की चाहता हूँ। प्रभु – कृपा तथा सत्गुरु – कृपा से मैंने इस सर्वोच्च दौलत को पाया है और सत्गुरु – कृपा से मैंने यह दौलत आप को दी है, इस को अपने जीवन में धारण करो। प्रभु ने जो सुनहरी मौका बख्शा है, उस से पूर्ण लाभ उठाओ।[29]

श्रद्धा से गुरु कृपा बढ़ती है परन्तु प्रेम प्रीतम के बोझ को बांटना जानता है। श्रद्धा भार प्रीतम पर डाल देती है। प्रेम देना जानता है, यह याद रखना कि प्रेम करने के लिए प्रीतम की हाज़री लाज़मी नहीं होती। जो प्रेम करता है, वह करता है, बस। वह कभी अकेला नहीं, याद रखो प्रेमी कभी अकेला नहीं होता। जंगलों – बियाबानों में भी उसे प्रभु की याद बनी रहती है। वह उस (प्रीतम) में बसता है – प्रीतम उसमें बसता है चाहे आपस में दूर हों या नज़दीक, वे एक बने रहते हैं। तो श्रद्धा बदले में कुछ मांगती है जबकि प्रेम बिना किसी बाहरी दिखावे के शांत और मस्त रहता है। यही प्रेम का आदर्श है। इस प्रेम का ज़िक्र महापुरुष हमेशा करते हैं, प्रेम करो और प्रेम करो। प्रेम से अति कृपा मिलती है। श्रद्धा में बाहरी दिखावट की जरूरत होती है और श्रद्धा दिखाने के लिए प्रीतम की हाज़री जरूरी है। फिर कौन बड़ा हुआ? प्रेम और समर्पण।

यह उपदेश आज दिन तक आए सभी महापुरुषों ने दिया है। जो जन्म दिन आप मनाने जा रहे हैं, उस पर मैं आप को कोई नई चीज़ नहीं बता रहा। सच्चा जन्म – दिन मनाना इस बात में है कि अगर आप शिक्षा पर अमल करते हैं तो (असली तौर पर) आप प्रेम करते हैं। प्रेम

अध्याय 2

बचपन

आम तौर पर जब लोग मुझे पूछते हैं कि आप की जन्म – तिथि क्या है तो मैं उन्हें बताता हूँ कि मेरे तीन जन्म दिन हैं; पहला जिस्मानी जन्म, दूसरा नाम लेने से सात साल पहले जब मैं हजूर को अंतर में मिला और तीसरा जब मैं उन से जिस्मानी तौर पर मिला।[31]

हम समझते हैं कि जब हम दुनिया में आते हैं, वह हमारा जन्म दिन है। सच में यह उन्हीं लोगों के लिए बधाई का दिन है जो निचली योनियों से मानव – तन में आए हैं परंतु उन के लिए जो ऊंचे स्थानों से आए हैं, दुनिया में जन्म लेना एक जेलखाने में जाना है। फिर भी पिछली श्रेणी के लोगों के लिए यह एक अच्छा जेलखाना है क्योंकि उनका 84 लाख जिया – जून पर राज्य चलता है।

जिस्मानी तौर पर आप कह सकते हैं कि 6 फरवरी मेरा जन्म दिवस है जिस के बारे में मुझे पता नहीं। मेरे माता – पिता ने मुझे ऐसा बताया है, इस लिए यह ठीक ही होगा। क्या किसी को अपने जन्म का पता है? मेरे विचार में आप को एक भी आदमी नहीं मिलेगा जिस को इस घटना का पता होगा, सभी ने ऐसा केवल सुना है। आदमी हर रोज़ पैदा होता है। जैसा कि कुरान में कहा है – नींद मौत की छोटी बहन है। आदमी हर रात को मरता है और हर सुबह पैदा होता है। जब से हम दुनिया में आए, हम इसी जन्म – मरण में लगे हुए हैं। इस हर रोज़ की मौत और आखिरी मौत में यही अंतर है कि जब तक हम अपने प्रारब्ध कर्मों या किस्मत के अनुसार मिले सांस पूरे नहीं कर लेते, सिलवर कोर्ड (Cord) नहीं टूटती।

तो सच्चा जन्म – दिन क्या है? यह सत्गुरु के घर में पैदा होना है जो हमें दुनिया के जन्म – मरण के बंधन से मुक्त कर देता है। जब गुरु नानक देव जी से पूछा गया कि आप का जन्म – मरण कब खत्म हुआ तो उन्होंने फरमाया:

सत्गुरु कै जन्मे गवण मिटाया।।

मेरा सच्चा जन्म मई 1917 में उस दिन हुआ जब मैं शरीर से ऊपर उठकर हजूर के साथ ऊपरी मंडलों की सैर करने लगा (महाराज जी अपने सत्गुरु के चरणों में 1924 में पहुंचे परंतु इस से सात साल पहले वे सत्गुरु के नूरी – स्वरूप के साथ अंतर में रूहानी सफर करने लग गए थे।) जब मैं हजूर से दैहिक तौर पर मिला तब फरवरी का महीना और बसंत – पंचवीं का दिन था। मेरे विचार में यह जो जन्म दिन आप मना रहे हैं, असल में मनाने का दिन नहीं है। यह केवल वह दिन है जब एक आत्मा अपना मिला काम पूरा करने के लिए दुनिया में प्रवेश हुई। सच्चा जन्म वह है जब आत्मा शरीर से ऊपर उठ कर ऊंचे मंडलों में जाए और अपनी मर्जी से वापस आ जाए।[32]

जैसा कि मेरे पहरावे से नज़र आता है, मेरा जन्म एक सिख परिवार में हुआ। आदमी सामाजिक प्राणी है, इसलिए किसी – न – किसी समाज में रहना पड़ता है और किसी एक या दूसरे परिवार में पैदा होता है।

मुझे बचपन से ही प्रभु प्राप्ति की चाहत थी। हर आदमी के अपने संस्कार होते हैं। सिख – धर्म ग्रंथों को मैं ऊपर – ऊपर से नहीं बल्कि पूरे ध्यान से पढ़ता था। मैं सिख – धर्म ग्रंथों का एक शब्द ले कर लिख लेता था। मैं सारा दिन सबक समझ कर सामने रखता था। जितनी ज्यादा बार हम किसी चीज़ को पढ़ते हैं, उतना ज्यादा मिलता है। आम तौर पर जब हम धर्म – ग्रंथों को पढ़ते हैं तो हम पढ़ते चले जाते हैं – दो पृष्ठ, चार पृष्ठ या 10 पृष्ठ, और पढ़ते चले जाते हैं। फिर हमें यह भी पता नहीं रहता कि हम ने क्या पढ़ा है। कब पुस्तक बंद की, यह भी पता नहीं चलता परंतु मैं ऐसा नहीं करता था।[33]

मैं आप को अपनी बात बताता हूं। जब मैं 5 – 6 साल का था, मैंने एक आदमी को देखा जो बड़ा ही जोशीला भाषण दे रहा था। मैं उस के मुंह की तरफ देख रहा था कि यह सारा भाषण कहां से आ रहा है। मैं हैरान था कि यह सब मसाला कहां से आ रहा है।

तो यह सब लैवल (स्तर) का मामला है, भई। आप किसी महापुरुष को उतना ही जान सकते हैं जितना वह आप को जनाए। अगर आप ने उसे जान लिया तो आप महापुरुष बन गए क्योंकि किसी महापुरुष को जानना ही खुद महापुरुष बनना है। किसी महापुरुष की महिमा केवल कोई महापुरुष ही जान सकता है। आप देखेंगे कि ये बहुत छोटी – छोटी बारीक चीज़ें हैं जो मैंने आप के सामने रखी हैं। इन्सानी लैवल पर सत्गुरु का क्या काम होता है? वह नहीं कहता कि मैं आसमान से गिरा हूं बल्कि कहता है कि मुझे प्रभु ने भेजा है। वह इन्सानियत के तौर पर आप को मिलता है, वह इन्सानी जज़बा रखता है।[34]

आज भी मुझे याद है कि जब मैं नौवीं कक्षा में पेशावर में पढ़ता था तो मैं पढ़ने के लिए किताबें उठा कर शाही बाग में चला जाता था। एक दिन मुझे वहां दरबारी लाल नाम का एक आदमी मिला। उस ने मुझ से पूछा कि शाही बाग कहां है। मैंने कहा कि उसी बाग में तो आप खड़े हैं। फिर उसने कहा कि मुझे हिन्दुओं का खुदा मिला था, वह रो रहा था कि मुसलमानों के खुदा ने मुझे पीटा और मेरी टांग तोड़ दी। मुझे उस छोटी – सी उम्र में यह जान कर हैरानी होती थी कि लोग सोचते हैं कि अलग – अलग धर्मों का अलग – अलग खुदा होता है।[35]

कई साल पहले पेशावर में मैं एक डाक्टर के पास बैठा था जो मेरा जानकार था। मैंने देखा कि उसने कंपाऊडर को दवाई बनाने के लिए लंबी – चौड़ी लिस्ट दी परंतु कंपाऊंडर ने दवाई बनाते समय एक या दो शीशियों में से ही दवाई डाली। मेरे पूछने पर डाक्टर बोला कि मैं सिर्फ पेट साफ करने के लिए कुछ दवाई देता हूं। केवल आत्मा ही सारी जिस्मानी बीमारियों को दूर करने की समर्था रखती है। आजकल बहुत

सी बीमारियां केवल इसलिए ही बढ़ती हैं कि हम थोड़ी – सी तकलीफ होने पर ही डाक्टर की तरफ भागते हैं जिस से शरीर में बहुत – सी दवाइयां इकट्ठी हो कर तकलीफ को बढ़ा देती हैं। साधारण बीमारी कम खाना खाने या एक – दो दिन केवल पानी पीते रहने से ही ठीक हो जाती है।[36]

मैं ईसाई स्कूल में पढ़ता था और सदा ही जिज्ञासु स्वभाव का रहा। मैं जानता था कि हम भारत में श्री गुरु नानक देव जी महाराज आदि महापुरुषों के साथ कई उपाधियां जोड़ते हैं जब कि ईसाई लोग अपने ईष्ट को केवल 'यीशू' ही कहते हैं। इसलिए मैं एक ईसाई पादरी के पास गया और उस से पूछा कि आप हज़रत ईसा के साथ क्यों कुछ सम्मानजनक चिन्ह नहीं जोड़ते जब कि एक साधारण आदमी के साथ मिस्टर जोड़ते हैं? पादरी ने कहा, और मुझे आज भी उसका जवाब याद है कि हम ईसा को प्रभु का पुत्र समझते हैं और जैसे हम प्रभु को सम्मानजनक चिन्ह नहीं देते, ऐसे ही ईसा को नहीं देते। अगर हम उस के नाम के साथ कुछ जोड़ना शुरू कर दें तो उसे छोटा ही करेंगे, बड़ा नहीं।[37]

जब मैं लगभग 12 – 13 साल का था, तब मैंने एक दिन रामानुज की जीवनी पढ़ी कि जब रामानुज ने अपने गुरु से नामदान प्राप्त किया तो वे आकर एक चबूतरे पर खड़े हो गए और चारों तरफ भीड़ इकट्ठी कर ली। फिर वे ऊंची आवाज़ में बोले कि मुझे आज अपने सत्गुरु से नामदान मिला है और मैं आप को इस के बारे में बताने जा रहा हूँ। कुछ लोगों ने कहा कि क्या तुम पागल हो गए हो? आप गुरु आज्ञा के उल्लंघन से सीधे नरक में जाओगे। मुझ पर उन के उत्तर का बड़ा असर पड़ा। उस ने कहा कि मैं अकेला ही नरक में जाऊंगा तुम सब तो बच जाओगे। यह पढ़कर मैंने मन में सोचा कि अगर कभी यह रूहानी दौलत मुझे मिल गई तो मैं इसे दोनों हाथों से लुटाऊंगा। मेरे हजूर को शायद मैं फजूल – खर्च मिल गया था, तभी उन्होंने मुझे यह काम सौंपा। यह सब उनकी कृपा है।[38]

इसलिए मैं हमेशा कहता हूँ कि अपने जीवन के लक्ष्य का फैसला करो। जब मैं नौवीं क्लास में पढ़ता था तब एक रिटायर्ड पादरी आया और उस ने भाषण दिया। एक दिन, दो दिन, तीन दिन, चार दिन, फिर उस ने हरेक से सवाल किया कि आप ने अपने जीवन में क्या बनने का फैसला किया है। हर एक ने अपने हिसाब से कहा कि मैं वकील बनना चाहता हूँ; किसी ने कहा – डाक्टर, किसी ने कहा – व्यापारी आदि। मैं पिछली कतार में बैठा था। जब मैं खड़ा हुआ तो मैंने कहा कि मैं ज्ञान – प्राप्ति के लिए पढ़ रहा हूं। उस ने इस टापिक पर एक घंटा प्रवचन किया। कभी – कभी फैसला स्वाभाविक ही हो जाता है, नहीं तो आगे – पीछे हमें यह फैसला करना पड़ता है। दूसरों के अनुभव से हम क्यों फायदा नहीं उठाते और अभी फैसला क्यों नहीं करते? इस से आप का समय बचेगा। यहां रहने के अपने समय का पूरा फायदा उठाओ।[39]

***

अध्याय 3

सत् की खोज

जब मैं सत् की खोज में था तो मुझे बड़ी तड़प थी। मैं रात को एक किताब पढ़ना शुरू करता था, बिना रुके सारी रात पढ़ता रहता था तथा सुबह होने पर ही यह समझ कर उठता था कि अभी कोई रास्ता नहीं निकला। किताबों में बड़े अच्छे विचार दिए हैं– बड़े सब्ज़–बाग भी दिखाए हैं। दिल चाहता है कि उन्हें प्राप्त करें, परंतु कैसे? किताब कहती है कि प्रभु सर्वव्यापक है– कोई जगह उस से खाली नहीं–वह प्रत्यक्ष नज़र आता है। परन्तु उसे कैसे देखें? यह बड़ा सवाल था, क्या नहीं? मैं यही कहता हूं कि यह सिर्फ देखने का मज़मून (विषय) है।[40]

इसी तलाश में मैंने धर्म–ग्रंथों का अध्ययन किया, सब से पहले अपने परिवार संबंधी जिस में मैं पैदा हुआ था। सिख धर्म–ग्रंथ रूहानियत का एक बड़ा खज़ाना है जो बड़े साईज़ के लगभग 1400 पृष्ठों पर फैला हुआ है। इस की यह महानता है कि इस में कई महापुरुषों की वाणी एक जगह मिल जाती है। वेद दुनिया के सब से पुरातन धर्म–ग्रंथ हैं। वेदों में भी एक नहीं, कई ऋषियों की वाणियों का वर्णन मिलता है। उस के बाद के सभी ग्रंथों में किसी एक विशेष महापुरुष जो किसी समय में आये, की वाणी है–चाहे उन की शिक्षा वैसी ही रही है– मैं केवल इन ग्रंथों की महानता बता रहा हूँ। तो अभी करीब 400 साल पहले का लिखा हुआ सिखों का धर्म–ग्रंथ है जिस में, जितनी भी इकट्ठी की जा सकी, सभी महापुरुषों की वाणी दर्ज है।[41]

जब मैं सत् की तलाश में था तो मैंने फारसी भाषा में मौलाना रूम, शम्स–तबरेज़ तथा मध्य पूर्व के दूसरे महापुरुषों की वाणियों को पढ़ा। इन महान ग्रंथों पर मैंने बड़ी–बड़ी टिप्पणियां पढ़ीं और पाया कि

हर टिप्पणीकार ने पुस्तक का असली अर्थ समझाने की बजाय अपने विचार थोपने की कोशिश की है। क्योंकि मैं इन टिप्पणियों से पथ–भ्रष्ट नहीं होना चाहता था, इसलिए मैंने फारसी भाषा का गहन अध्ययन किया। जब मैं इन ग्रंथों को इन की अपनी भाषा में समझने के काबिल हुआ तो पाया कि इन के असली अर्थ उन टिप्पणीकारों से कहीं हट कर हैं।[42]

स्पष्ट है कि सभी धर्म–ग्रंथ हमें बताते हैं कि प्रभु एक है। मुझे जन्मजात भी यही भरोसा था। मुझे परमात्मा के बारे में कभी शक नहीं था। परंतु धर्म–ग्रंथ हमें बताते हैं कि किसी ऐसे की संगति करो जिस ने प्रभु को जान लिया हो। आप उसे गुरु कहें, महापुरुष कहें, अध्यापक कहें या कुछ और, परंतु अगर आप प्रभु को देखना चाहते हैं तो किसी ऐसे के पास जाएं जिस ने परमात्मा को देखा है। यह आम बुद्धि की बात है। फिर आप अपना सब कुछ– – तन, मन और धन उसके हवाले कर दो। जितना ज्यादा समर्पण होगा उतनी ज्यादा तरक्की होगी। पहली बात ऐसी हस्ती से मिलाप की है जिस ने प्रभु को जाना और पाया है, जो प्रभु को ऐसे देखता है जैसे मैं आपको देख रहा हूँ और आप मुझे देख रहे हैं। जितना भी मैं सिख धर्म–ग्रंथों तथा दूसरे धर्मों के ग्रंथों में गहरा उतरा, उतनी ज्यादा सच्चाई का मुझे पता चलता गया।[43]

स्वाभाविक तौर पर जब मैंने चारों ओर देखा तो बहुत से महात्मा नज़र आए। मैं किस के पास जाऊं? हम तीन भाई थे। हम में से दो एक दूसरे की मदद करते थे और हमारा फैसला था कि आप को कोई प्रभु–रूप महापुरुष मिले तो मुझे बताना, अगर मुझे मिलेगा तो मैं आप को बताऊंगा। हम ढूंढ रहे थे।[44]

मैं एक पुरुष से अक्सर मिला करता था जो प्रभु के नशे में मगन रहता था परंतु उसका रहन–सहन ऐसा था कि कोई भी उस के पास आने का साहस न करता था। हम सब दोस्त शाम को इकट्ठे हो कर विचार किया करते थे कि क्या कहीं कोई प्रभु–रूप हस्ती मिल सकती है? तब मैंने उन्हें बताया कि मैंने एक आदमी को देखा है जो

प्रभु के नशे में मस्त है परंतु वह बड़े सख्त स्वभाव का है। आप देखिए, कुछ लोग प्रभु के नशे से भरपूर होते हैं परंतु आप को नज़दीक नहीं आने देते। आप लोग बातें कर सकते हैं, सवाल कर सकते हैं, तर्क – वितर्क कर सकते हैं और आलोचना कर सकते हैं परंतु यह आदमी ऐसा सहन नहीं करता था। हमारे हजूर (बाबा सावन सिंह जी) भी उस के बारे में बताया करते थे, वे भी उस से मिलते थे, उस का नाम बाबा काहन था। वह नंगा रहता था, एक तरफ आग जलती थी, गंदगी पड़ी होती थी, गर्मी के दिनों वह दूसरी तरफ को पंखा चलाता था।

मैंने उन्हें बताया कि इस को कुछ नशा मिला है। जो भी उस के पास जाते थे वह उन को गालियां दिया करता था। अगर फिर भी वे वहां से नहीं जाते थे तो उन्हें पीट भी दिया करता था। परंतु उस के पास चीज़ थी, पास गए लोगों को वह गालियां देता था परंतु वे फिर भी वही करते थे। कभी – कभी उन की पिटाई भी हो जाती थी परंतु जिस मतलब के लिए वे जाते थे वह पूरा हो जाता था और चीज़ उन्हें मिल जाती थी।

मैं उन दिनों स्कूल में पढ़ता था। मैं भी उस के पास जाया करता था। वह अधनंगी हालत में चबूतरे पर बैठा होता था। मैं वहां जा कर खड़ा हो जाता था और लोगों को देखा करता था जिन्हें वह गालियां निकाला करता था। मैं सब लोगों के जाने तक वहां खड़ा रहता था। फिर वह मुझे बुलाता था, "हां, सरदार, तुम क्या चाहते हो?" मैं उस के पास जा कर कहता, "मैं तो केवल दर्शन के लिए आया हूँ।" "अच्छा, अब जाओ।" मेरा उस से बस इतना ही संबंध था।

मैंने एक आदमी को कहा कि उस के पास चीज़ तो है परंतु वह इतना सख्त है कि निकालनी कठिन है। कोई उस की सख्ती को सह नहीं सकता। यह बहुत कीमती वस्तु है। कौन आप को आसानी से देगा? तो उस आदमी ने कहा कि बताओ मुझे क्या करना चाहिए। "जाओ और रात को उस के पास बैठो, यदि वह आप को कुछ कहता

है या गालियां भी निकालता है, तुम अटल रहना।" वह उस रात वहां जा कर उस के पास रहा। रात को 11 – 12 बजे बाबा काहन ने उसे गालियां निकालीं और अपनी लाठी से उसे पीटा। वह भाग गया।

अगले दिन हमारी पार्टी दोबारा इकट्ठी हुई और उस आदमी से पूछा कि वह (महात्मा) कैसा लगा। "कि उस ने मुझे गालियां दीं और अपनी लाठी से पीटा।" मैंने कहा कि ठीक है, महसूस न करो, उस के पास चीज़ तो है, फिर जाओ।

इस प्रकार वह अगली रात फिर गया। बाबा काहन ने न केवल उसे पीटा बल्कि जलती हुई लकड़ी उठा कर उस को मारी। वह आदमी फिर चला आया। अगले दिन उस ने लकड़ी तो न मारी परंतु कुएं में लटका दिया। वह फिर वापस चला आया। तीसरे दिन मैंने उस से पूछा, "सुनाओ कैसा रहा।" "ठीक है," मैंने कहा, "महसूस न करो, कुछ चीज़ उस के पास जरूर है। वह उस दौलत को छिपा कर रखना चाहता है, आप को नहीं देना चाहता। चलो, महसूस न करो, दिल पर न लगाओ, चाहे वह आप को मार भी दे।"

तीसरी रात वह फिर गया। जैसा मैंने आप को बताया, उस आदमी ने वैसा ही किया। उस (बाबा) ने जलती लकड़ी से उसे घायल भी कर दिया परंतु वह न हटा। आधी रात के बाद करीब एक बजे बाबा काहन ने उस से पूछा, "आखिर तुम चाहते क्या हो? तुम मेरे पास क्यों आ रहे हो?" उस आदमी ने विनती की कि महात्मा जी, मुझे कुछ दीजिए। फिर उस ने उस आदमी को शब्द – ध्वनि सुना दी। कुछ लोगों के पास यह दौलत होती है परंतु वे उसे पूरी तरह छिपा कर रखते हैं, उसे किसी को देते नहीं।[45]

1912 में मुझे अपना जीवन – लक्ष्य तय करने में 10 – 11 दिन लगे। रात को मैं उस समय घर से बाहर चला जाता था जब मुझे कोई न देख रहा होता और सोचता रहता कि जीवन में मेरा क्या उद्देश्य होना चाहिए। जीवन में मेरी भी कुछ बनने की अभिलाषा थी, प्रभु कृपा से कुछ पुराने संस्कार भी थे। तो मैंने अंतिम फैसला किया, "प्रभु पहले

और दुनिया पीछे। सब धर्म-ग्रंथ कहते हैं कि आप प्रभु-प्राप्ति करो तो सब चीज़ें अपने-आप प्राप्त हो जाएंगी। दफ्तर में मेरी अच्छी पोज़ीशन थी। मेरा सब से बड़ा अफसर मुझे कंप्ट्रोलर से भी ज्यादा प्यार करता था। तो मेरा कहने का मतलब है कि आप फैसला करो कि आप क्या बनना चाहते हो। क्या अपने घर वापस नहीं जाना चाहते? कहो, नहीं- हाथ उठाओ! नहीं? हर कोई जाना चाहता है, परंतु करना कोई नहीं चाहता। प्रभु आपका इंतज़ार कर रहा है और जाने के लिए किसी की तैयारी नहीं - गंदी नाली के उस कीड़े की तरह जो कहता है कि ले जाने के लिए क्या आप को कोई और नहीं मिलता।[46]

मैंने बताया कि 1912 में मैं एक मुसलमान दार्शनिक (फिलासफर) से मिला जो रूहानी पुरुष था। वह मेरे पास आता था और मैं उसे मिलता रहता था। उस का सख्त हुक्म था कि घर में किसी को न घुसने दिया जाए। मैं जाता था तो देखता कि वह मुसलमानी ढंग से घंटों इबादत में लगा रहता था। एक दिन मैंने उस से पूछा कि मुसलमानों में नमाज़ तो केवल पांच बार पढ़ते हैं, झुके और उठे परंतु आप घंटों लगे रहते हैं, ऐसा क्यों? उसने जवाब में कहा कि पांच बार तो लाज़मी है जो सब ने करनी है। इस से जितना अधिक मैं करूंगा वह खुदा के रिझाने के लिए है। अगर आप सत्गुरु या प्रभु को प्रसन्न करना चाहते हैं तो अधिक से अधिक समय, जितना आप के जरूरी फर्ज़ (दुनियावी काम) अदा करने के बाद बचे, इस काम में लगाएं, यही आप से अपेक्षा की जाती है।[47]

1912 में मैंने कुदरत के नियमों की एक हैरानीजनक घटना देखी। अब्दुल वाहब नाम का एक मुस्लिम फकीर था जो रात को अपने कमरे में किसी को नहीं आने देता था परंतु मुझे आने-जाने की पूरी आज़ादी थी। अभ्यास के समय उस का शरीर फर्श से कई फुट ऊंचा उठ जाता था। आपने प्रसिद्ध भक्त ध्रुव और प्रह्लाद के बारे में सुना होगा; कहा जाता है कि उनका शरीर भी अभ्यास के समय ऊंचा उठ जाता था। यह कुदरत के नियमों को जानने का मामला है। अगर दोनों

पौज़ीटिव साइडें आपस में मिलेंगी तो वे अलग हो जाएंगी और ऊपर उठेंगी। आम तौर पर लोग इन नियमों को नहीं जानते और उन्हें चमत्कार कहने लग जाते हैं। असल में ऐसा कहना ठीक नहीं क्योंकि ऐसा कुदरत के गुप्त नियमों के आधार पर होता है। संतों के जीवन में ऐसी कई घटनाएं घटी हैं और अगर हम भी वैसी रहनी बनाएंगे और उन की हिदायत के मुताबिक चलेंगे तो हम उतने ही ज्ञानवान बन जाएंगे जितने कि वे होते हैं क्योंकि हर महापुरुष का भूतकाल होता है और हर पापी का भविष्य होता है। आप कह सकते हैं कि जो आज महात्मा है, वह पहले हमारी तरह था। एम0 ए0 पास कभी पहली क्लास में पढ़ता था। तो जो सीढ़ी के आखिरी (निम्न) डंडे पर खड़े हैं, यदि वे सही दिशा में चलते हैं तो एक दिन छत्त पर पहुंचेंगे।[48]

लाहौर रिहायश के समय रात को मैं रावी दरिया की तरफ निकल जाया करता था। उन दिनों वहां गूंगा नामक एक आदमी होता था जो बाद में एक मशहूर पहलवान बना। क्योंकि वह बोल नहीं सकता था, इसलिए उसका नाम गूंगा पड़ गया। वह बहुत ही प्रसिद्ध पहलवान था। सर्दी के दिनों ठिठुरती रातों में उस का पिता उसे केवल कच्छा पहना कर बाहर निकाल देता था। सारी-सारी रात वह कसरत करता रहता था। उसे कसरत करते किसी ने नहीं देखा परंतु जब वह मशहूर हुआ तो हर कोई उसे जानने लगा। जहां वह जाता, लोग कहते, "देखो वह गूंगा पहलवान जा रहा है।" इसी तरह महात्मा एक दिन में नहीं बनते। रोम शहर एक दिन में नहीं बन गया था। इन्सान बन रहा है।[49]

लाहौर में एक बार एक नास्तिक ने विभिन्न समाजों के लोगों की एक सभा यह विचार करने के लिए बुलाई कि क्या धर्म की जरूरत है? हर धार्मिक नेता ने बाहरी रीति-रिवाजों को सिद्ध करने की कोशिश की। मैं भी पहली कतार में बैठा था। फिर वह नास्तिक अपने तर्क के साथ उठा कि धर्म की जरूरत नहीं, जिस के लिए उस ने कई उदाहरण पेश किए। उसने कहा कि शादी करनी है, इस में क्या फर्क

पड़ता है, पंडित हो, भाई हो, मुल्ला हो जो उन दोनों पति – पत्नी पर अपना हाथ रख कर कह दे कि आज से इन का ताल्लुक जायज़, ताकि व्यभिचार न फैले। इस से क्या फर्क पड़ता है कि यह काम एक धर्म के रीति – रिवाज से हो या दूसरे से?

इस पर मैंने खड़े हो कर कहा, "भाई साहब, यह ठीक है परंतु अगर दस – बीस हज़ार लोग आप के विचार के हो जाएं तब एक नया फिरका या सोसाइटी तुम्हें बनानी पड़ेगी। तुम संगठनों से बचना चाह रहे हो परंतु ऐसा करने पर तुम दूसरा (संगठन) बनाने जा रहे हो। अगर हर आदमी अपने – अपने धर्म में रह कर अपने आप को या आत्मा को और सब की कंट्रोलिंग उस प्रभु पावर को जान जाए तो क्या यह ठीक नहीं होगा? भले ही वह नास्तिक था, फिर भी उस ने कहा कि जो आप कहते हो वह ठीक है। जब तक मैं लाहौर में रहा, हम प्रेम – पूर्वक एक दूसरे से मिलते रहे।[50]

मैं 1914 के आसपास की अपनी हालत का ब्यान करूं। पुराने संस्कार होते हैं। जिस को प्रभु से मिलने की लगन होती है उस में कुछ पुराने संस्कार उभरते हैं और इस जन्म में विकसित होते हैं। उन दिनों में बिना कारण मेरे आंसू निकल पड़ते थे जिस से दफ्तर में मेज पर पड़े कागज़ खराब हो जाते थे। मैं अपने अंतर में कहता कि हे प्रभु! यह क्या हो रहा है? घरवालों को भी पता नहीं था, वे यही समझते थे कि नई बदली होने के कारण ऐसा हो रहा है। किसी की लगी को कोई क्या जाने? जिस को जीवन की पहेली को हल करने की बात दिल में घर कर जाए, वह आदमी शांत नहीं हो सकता जब तक कि यह पहेली हल न हो जाए। ऐसे सवाल पैदा होते रहते हैं कि जिंदगी क्या है और मैं क्या हूं?

मैं अक्सर बताया करता हूँ कि एक जवान आदमी को मृत्यु – शैया पर पड़े देख कर मैं कैसे एक गहन – विचार में खो गया था। अगर किसी आदमी का जीवन साफ और पवित्र हो तो अंतर के द्वार अपने आप खुल जाते हैं। यह कुदरती बात है। यह सब पाए हुए भी अभी तक

जीवन का भेद मैं हल नहीं कर पाया था और उस मरते आदमी के पास बैठकर मुझे ख्याल आया कि यह आदमी मर रहा है, कोई चीज़ इस में है जो मुझ में भी है परंतु यह शरीर छोड़ रहा है, वह कौन सी चीज़ है। मैं उस समय इस का उत्तर न पा सका क्योंकि मुझे इस का ज्ञान न था। वह कौन – सी चीज़ है जो सब में है परंतु मरते आदमी को छोड़ जाती है? मैं वहां बैठ गया और देखा कि किस तरह से उस आदमी ने अपने रिश्तेदारों को पास बुलाया और उनसे अपने द्वारा भला – बुरा कह दिए जाने या बुरा हो जाने के लिए मुआफी मांगी। इस के बाद आंखें बंद हो गई और आत्मा शरीर को छोड़ गई। मैं यह सब देख कर हैरान हो गया। मेरी आंखों के सामने शरीर पड़ा था परंतु उस को चलाने वाला जा चुका था। मैं नहीं जानता था, वह कहां गया। श्मशान घाट के रास्ते पर मैं इस पहेली को हल करने की कोशिश करता रहा और वापस आते हुए मैंने देखा कि एक बूढ़ा आदमी भी मर गया था जिसका संस्कार हो चुका था। कुछ ही गज के फासले पर बूढ़े और जवान जो जीवन के आखिरी पड़ाव हैं – का संस्कार किया जा चुका था। मेरे दिल पर इस बात का बहुत असर हुआ कि मौत से कोई नहीं बच सकता। पढ़े – अनपढ़ सब धोखे में जा रहे हैं। जीवन की यह पहेली मेरे दिल में घर कर गई। उस दिन से जितनी भी धर्म – पुस्तकें मुझे उपलब्ध हो सकीं, उन सब में मैंने इस चीज़ की दिन – रात तलाश शुरू कर दी। लगातार पढ़ते – पढ़ते सारी रातें बीत जातीं परंतु फिर भी धर्म – ग्रंथों और दर्शन – शास्त्रों में कोई समाधान न मिला। उन में इशारे दिए हैं परंतु प्रैक्टीकल समाधान उन में नहीं मिलता क्योंकि समाधान लिखने में नहीं आ सकता। यह वैज्ञानिक प्रैक्टीकल अनुभव का सवाल है जो कि किसी महापुरुष के चरणों में बैठ कर ही मिल सकता है जो आपको सीधे रास्ते पर डाल देगा। फिर उसे दिनो – दिन बढ़ाया जा सकता है। अंत में 1924 में जब मैं हजूर के चरणों में पहुंचा तो इस अंतरीय अनुभव की प्राप्ति हुई।[51]

हजूर के चरणों में जाने से काफी समय पहले, 1915 में मुझे बुखार आया। तब मैं 8 महीने बिस्तर पर पड़ा प्रभु का सिमरन करता

रहा। मुझे कोई कहने वाला नहीं था कि आप दफ्तर क्यों नहीं जाते अथवा यह या वह काम क्यों नहीं करते? बीमारी के समय आप का टाइम बच जाता है। क्या ऐसा नहीं होता? अगर आप ठीक हैं तो कोई भी – आप के घर वाले भी – आप का घर रहना सहन नहीं करते। "काम पर जाओ भई।"

मैं कहता हूँ कि ये सब झूठे बहाने हैं। हम कहते हैं कि हमारे पास समय नहीं, मैं बीमार था।" ठीक है अगर आप बीमार थे तो आपके पास और ज्यादा समय था। क्या ऐसा नहीं होता? आप को कोई जाने के लिए नहीं कहता और न ही दुकान से कोई चीज़ लाने या व्यापार के लिए जाने को कहता है। आप पड़े रहते हैं और सब आप की सेवा करते हैं। हमें (बीमारी को) इस नज़रिए से देखना चाहिए।[52]

जब मैं दफ्तर में था तो वहां एक टाईपिस्ट था जो 1914 – 18 के युद्ध में फारस (मौजूदा इराक) गया। सरकार वहां महालेखाकार की पोस्ट बनाना चाहती थी परंतु लड़ाई के कारण योग्य लेखाकार न मिला। इसलिए उस नए आए टाइपिस्ट को जिसे अकाऊंटस का बहुत कम ज्ञान था, महालेखाकार की पोस्ट पर बिठा दिया गया। इस से स्पष्ट होता है कि किसी घटना के पीछे पुराने संस्कारों का भी हाथ होता है। ऐसी चीज़ पर हमारा कंट्रोल नहीं होता। एक आदमी मिट्टी में हाथ डालता है तो वह सोना बन जाती है और दूसरा सोने पर हाथ डालता है तो वह मिट्टी बन जाती है। दूसरी मिसाल कि कई बार एक सुलझा हुआ तजरबेकार आदमी और दूसरी तरफ अनपढ़ आदमी दोनों बिज़नस करते हैं तो अनपढ़ आदमी मालामाल हो जाता है परंतु तजरबेकार आदमी का दीवाला निकल जाता है। स्पष्ट है कि पुराने संस्कारों से कई काम होते हैं जिन पर लोगों का कोई खास कंट्रोल नहीं होता। जपजी में गुरु नानक देव जी ने फरमाया है:

जोर ना मंगण देण ना जोर।।

ईसा मसीह ने भी फरमाया है:

जैसा बीजोगे वैसा काटोगे।

फिर भी हम मनुष्य योनि में कुछ ऐसा कर सकते हैं जिस से हमें दुनिया में फिर से आना न पड़े।[53]

नौकरी के समय मेरे नीचे एक ईसाई सुपरिंटेंडेंट काम करता था। उस समय लाहौर का पादरी, जहां हम रहते थे, बहुत बड़ा गिना जाता था। मैंने उस सुपरिंटेंडेंट को कहा कि लाहौर के पादरी से जा कर पूछो कि धर्म-स्थानों में घंटी क्यों बजाई जाती है। पादरी ने पता है क्या कहा? "कि यह केवल लोगों को इकट्ठा करने के लिए है।" परंतु जब हिन्दू मंदिरों में जाकर खुद घंटी बजाते हैं तो? दुनियावी विद्वान जरूरी नहीं इन बातों को समझें।[54]

इन्सान गलती का पुतला है। मुझे याद है कि एक बार मैं छुट्टी गया तो वापस आने पर पता चला कि दो कलर्कों को नौकरी से निकाल दिया गया था। जब मैं उन की अपील का केस कंट्रोलर के पास ले कर गया तो उस ने इस की मैरिट जाननी चाही। मैंने उस से कहा कि क्या कोई ऐसा आदमी है जिस में कोई कमी न हो। आप को ऐसा कोई नहीं मिलेगा जिस ने कभी कोई गलती न की हो लेकिन उन की गलती की सज़ा उन के बीवी-बच्चों को नहीं मिलनी चाहिए। उन्हें उन की गलती का एहसास कराया जा सकता है। इस प्रकार उन्हें फिर से नौकरी पर वापस ले लिया गया।[55]

एक बार नौकरी के दौरान मैं एक सैक्शन का इंचार्ज था तो वहां दूसरी शाखाओं के इंचार्ज भी थे। मेरा सैक्शन बड़ा शांत चलता था और दूसरों के मुकाबले दुगुना काम करता था। एक दूसरी शाखा का सुपरिंटेंडेंट मेरे पास आ कर कहने लगा कि यह क्या है। मैंने उसे कहा कि आप अपने आप को कंट्रोल करो, मेरा खुद पर अनुशासन है। फिर मैंने उसे बताया कि आप के अंदर कोई चीज़ काम कर रही है – अगर आप अपना ध्यान बाहर की चीज़ों से हटा लें...। (मुझे उस समय तक नाम नहीं मिला था।) " थोड़ी देर के लिए सब तरफ से ख्याल हटा कर बैठो; धीरे – धीरे आप की एकाग्रता बढ़ेगी।" उसने घर जा कर बैठना शुरू किया, वहां पानी का पंप काम करता था। 15 दिन बाद उस

ने मेरे पास आ कर कहा कि आप ने मुझे ऐसा करने के लिए कहा था परंतु पानी के पंप की आवाज़ मुझे ऐसा नहीं करने दे रही। "ठीक है, सब तरफ से हट-हटाकर आप एकाग्रता के साथ बैठो और बाहर ध्यान न दो।" 15 दिन बाद वह फिर आया, कहने लगा कि पहले-पहल वह आवाज़ सुनाई देती थी, फिर धीरे-धीरे समाप्त हो गई और अब नहीं सुनती। "ठीक है, करते जाओ।" करीब एक महीने बाद उसने आ कर बताया कि अब जब मैं बैठता हूँ तो कोई आवाज नहीं आती। तो यह तो ख्याल को सब बाहर की चीज़ों से हटाने का मामला है। आप तवज्जो हैं। यह करने से आप को सुख और शान्ति प्राप्त होगी। चाहे आप का शरीर साथ न दे रहा हो, फिर भी आप को ताज़गी मिलेगी। यह जीवन की रोटी है और जिंदगी का पानी है और इसे केवल मनुष्य तन में ही पाया जा सकता है।[56]

मेरे जीवन की घटना है कि बहुत समय पहले रेलवे स्टेशन पर मेरी घरवाली का बटुआ चोरी हो गया। पुलिस ने चोर को पकड़ कर उस से बटुआ बरामद कर लिया। मुझे थाने में रिपोर्ट लिखाने को कहा गया। मैंने पुलिस को कहा कि ऐसा करना फजूल है क्योंकि बटुआ तो मिल गया है परंतु उन के जिद्द करने पर शायद मुझे पहली बार थाने जाना पड़ा। मैंने वहां जा कर कहा कि मैं रिपोर्ट लिखवाने के हक में नहीं हूँ लेकिन अफसर न माना तो आखिरकार रिपोर्ट लिखवानी पड़ी। बाद में मुझे बतौर गवाह कोर्ट में जाना पड़ा। वहां थानेदार ने मुझ से कहा कि इन्साफ होना चाहिए परंतु मैंने कहा कि कानून के दो रूप हैं-एक इन्साफ और दूसरा रहम या दया। दया द्वारा उसे मुआफ किया जा सकता है। प्रेम में दया पैदा होती है जिस से मन, वचन और कर्म से अहिंसा उपजती है। खैर जब मैं कोर्ट में पेश हुआ, मैंने मैजिस्ट्रेट से प्रार्थना की कि अगर आप अपराधी को किसी तरह छोड़ सकते हैं तो मुझे एतराज नहीं होगा। मैजिस्ट्रेट ने यह जांच करके कि उस के खिलाफ पुराना दोषी होने का कोई रिकार्ड नहीं है, उसे वार्निंग दे कर छोड़ दिया। नतीजा यह हुआ कि अपराधी और उस के रिश्तेदार मेरे सदा के लिए श्रद्धालु हो गए। आप ने देखा कि मुआफी का कितना भारी असर पड़ता

है। इन्साफ से ऐसा कभी नहीं हो सकता। 'मुआफ करना' सब गुणों में महान गुण है।[57]

हम ने अपना शीश और तवज्जो सत्गुरु के हवाले कर दिए हैं-हमारे मान और संभाल वहां सुरक्षित हैं। इस से मुझे अपने जीवन की 1917 की एक घटना का ख्याल आता है। इन्सानों में अपने-अपने संस्कारों के अनुसार थोड़ी-बहुत सत् की खोज की संभावना होती है। मुझे एक नशा बना रहता था जो कभी-कभी दो-तीन महीने बाद एक-आध हफ्ते के लिए कट जाता था। उस समय मुझे बड़ी बेचैनी होती थी। मैं बहुत से महात्माओं से मिला ताकि नशा कटे नहीं। एक बार एक महात्मा से मैं मिला तो उसने कहा यहां शीश देना होगा। मैंने मन में सोचा कि शीश तो अपनी मर्जी से दिया जाता है, हुक्म से नहीं। एक बार जब शीश दे दिया तो हक खत्म हो गए। लेकिन जिसको सच्ची तलाश है, उसे मिलता है। शारीरिक मिलाप से सात साल पहले ही बाबा सावन सिंह जी मेरे अंतर में आने शुरू हो गए। शीश का देना अपनी मर्जी और खुशी से होता है। जब आप को पता है कि मांगने वाला खुद भूखा है तो वह आप को क्या देगा? फिर जब मैं हजूर के चरणों में पहुंचा तब उनकी दया से मुझे पता चला कि शीश का देना क्या होता है।[58]

प्रभु सर्वव्यापक है। जो प्रभु से मिलना चाहते हैं उन के लिए उस ने कुछ प्रबंध किए हैं। शुरू में जब मैं प्रभु-प्राप्ति के लिए उत्सुक था तो मैं परमात्मा से प्रार्थना किया करता था कि मेरा किसी ऐसे से मिलाप कराओ जो मुझे आप की तरफ आने वाले रास्ते पर डाल दे परंतु डरता था कि मैं किसी ऐसे के पास न पहुंच जाऊं जो आप तक न पहुंचा हो जिस से मेरी जिंदगी बरबाद हो जाए। तो मैं इस प्रकार प्रार्थना किया करता था। मेरे अंतर बड़ी लगन थी। दुनिया में बहुत साधु महात्मा मिलते हैं। इतने महात्मा मिलते हैं जितने शायद शिष्य भी न मिलते हों। मेरे सत्गुरु से बाहरी मिलाप से पहले ही अंतर में मुझे उनके दर्शन होने लग गए थे। मैं उन्हें गुरु नानक समझता था। जब सात साल बाद शारीरिक रूप से मैं उन्हें मिला तो अर्ज़ की कि आप वही हैं। तो केवल

प्रभु जानता है कि वह कहां प्रकट है और वह उसी रूप में अंतर में प्रकट हो जाता है जिस में कि बाहर काम कर रहा होता है।[59]

मुझे आप के शक और हिचकिचाहटों के बारे में जान कर बड़ी खुशी हुई। सच्चे जिज्ञासु के मन में ये अक्सर पैदा हो जाते हैं। बचपन से ही मेरे मन में ऐसे शक और शंकाएं थीं। मैं किसी महात्मा के पास जाने से इसलिए डरता था कि मैं किसी अधूरे के पास न पहुंच जाऊँ जिस से मेरा जीवन बरबाद हो जाए। तो मैं प्रभु से अपने सामने सीधा प्रकट होने के लिए प्रार्थना किया करता था और मेरी प्रार्थना स्वीकार हो गई। बाहरी तौर पर मिलाप से सात साल पहले एक पूर्ण महापुरुष मेरे अंतर में आने शुरू हो गए जो बाबा सावन सिंह जी थे। अब भी भारत और विदेशों में ऐसी घटनाएं घटती हैं जहां शिष्यों के गुरु से शारीरिक मिलाप अर्थात् नामदान से पहले ही गुरु अंतर में प्रकट होना शुरू हो जाता है। आप के शक – हिचकिचाहटें सही हैं जिन की मैं कद्र करता हूं।[60]

सच बताऊँ, मैं गुरु धारण नहीं करना चाहता था बेशक मुझे पता था कि किसी पूर्ण महात्मा के बिना रूहानियत के रास्ते पर चल पाना कठिन है। मैं अधूरे के मिलाप से डरता था जिन से दुनिया भरी पड़ी है। मैं कैसे सच्चे सत्गुरु की तलाश करूं जब कि दुनिया में अधूरे महात्माओं की बहुतायत है जो डंके की चोट से सब्ज़बाग दिखाते हैं। तो मैं सच्चे दिल से प्रार्थना किया करता था कि हे प्रभु! मुझे अंतर में रास्ता दिखाओ। मेरी प्रार्थना सुनी गई और शारीरिक रूप में मिलने से सात साल पहले ही हजूर मेरे अंतर में आने शुरू हो गए। मुझे उस वक्त पता नहीं था कि वे कौन हैं और मैं उन्हें गुरु नानक समझा करता था। मैंने उन की महिमा में कई कविताएं लिखीं।

मुझे दरियाओं का बड़ा शौक था। जहां भी मैं होता, वहां मैं दरिया खोज कर भजन – अभ्यास के लिए एकांत स्थान ढूंढ लेता। जब मेरी बदली लाहौर की हुई, मैं रावी दरिया पर जाता था और ऐसे ही जेहलम पर जाता था। दरिया के किनारे मैं घंटों अभ्यास में गुज़ार देता

था। जब मैं लाहौर में था तो मुझे ब्यास दरिया देखने का विचार आया। बहते पानी को देखने का यह शौक मुझे ब्यास ले आया। रविवार की एक सवेर को मैंने ब्यास के लिए गाड़ी पकड़ी। ब्यास के स्टेशन मास्टर से पूछा कि दरिया किधर है। उसने हैरानी पूर्वक पूछा कि क्या आप ब्यास के संतों के दर्शन करने आए हैं? मैंने कहा कि क्या यहां कोई संत भी रहते हैं। उस ने तब हजूर (बाबा सावन सिंह जी) के बारे में बताया। इस ब्यास की यात्रा से मुझे बड़ा लाभ हुआ। इस से मुझे एक तो दरिया ब्यास मिल गया और एक अपने भावी सत्गुरु मिल गए।

डेरे पहुंच कर जब मैंने देखा कि हजूर महाराज की शकल मेरे अंतर बरसों से आ रहे नूरी स्वरूप जैसी है, तो मेरी हैरानी की हद न रही। मैंने विनती की, "हजूर! मिलाप में इतनी देर क्यों लगाई?" उन्होंने हंस कर उत्तर दिया, "यही समय मुनासिब था।"[61]

मैं आप को अपना तजरबा बताता हूं। 1912 में मैं भारतीय सेना की एक रैजीमैंट की लेखा शाखा में पोस्टिड था। फौज का एक अर्दली मेरा खाना बनाता था। मेरी उसे सख्त हिदायत थी कि जब तक वह रसोई में रहे तब तक किसी को भी रसोई में न आने दे और सारा समय धार्मिक शब्द बोलता रहे। मेरा रोज़ रात को देर तक भजन बैठने का रूटीन था। एक रात कुछ बुरे विचार अभ्यास में खलल डालने लगे। मैंने अर्दली को जगाया और पूछा कि रसोई में उस के साथ कोई था? उस ने कहा कि कोई नहीं था, परंतु वह झूठ बोल रहा था। आखिर उस ने मान लिया। जहां टनों में गंदगी भरी होती है वहां थोड़ी और पड़ जाए तो कोई फर्क नहीं पड़ता परंतु साफ जगह पर गंदगी का छोटा धब्बा भी नज़र आता है।

नेकपाक सदाचारी जीवन प्रभु – प्राप्ति के रास्ते की पहली सीढ़ी है। इसलिए मैं डायरी रखने के लिए जोर देता हूं ताकि हमें अपनी कमियों का पता चल जाए। हम अहिंसा को धर्म मानते हैं परंतु इसे ध ारण नहीं करते। नतीजा यह कि हम उस सर्व – दर्शी प्रभु को धोखा देना चाहते हैं। हम कैसे उस के कृपा – पात्र बन सकते हैं? वे हृदय मुबारिक

हैं जो पवित्र हैं क्योंकि केवल ऐसे लोग ही प्रभु के दर्शन कर सकते हैं।[62]

जैसा कि मैंने आपको बताया, ईमानदारी की कमाई और पवित्र हाथों द्वारा पकाया गया और प्रभु की याद में परोसा गया भोजन भी इस रास्ते पर चलने के लिए जरूरी है। पुराने ज़मानों में माता खाना बनाते समय किसी को भी रसोई में दाखिल नहीं होने देती थी। शायद मैं आप को बता चुका हूं कि मुझे बतौर लेखा अधिकारी युद्ध क्षेत्र में एक रैजीमैंट में भेजा गया तो वहां खाना बनाने के लिए एक अर्दली मिला। मैंने उस से कहा कि जब तक तुम रसोई में रहो तब तक धार्मिक शब्द गाते रहो या प्रभु की याद करते रहो। इस के अलावा कोई विचार आप के मन में नहीं आना चाहिए। उसने कहा, "ठीक है।" तीन दिन तो ठीक रहा, चौथे दिन अभ्यास में बैठे मुझे रात को जब 12 – 1 बजे तो मन में गलत विचार आया। मैंने रात के 1 बजे उस आदमी को बुला कर पूछा, " सच सच बताओ आज रसोई में कौन आया था?" कहने लगा कि कोई नहीं आया था। "झूठ मत बोलो।" तब उस ने कहा कि एक आदमी आया था और हम ये बातें कर रहे थे। हमें इन चीज़ों का क्यों पता नहीं चलता? क्योंकि हम में काफी गंदगी भरी पड़ी है, अगर एक और औंस पड़ जाए तो हमें क्या पता चलेगा। परंतु जहां गंदगी नहीं है, थोड़ी चीज़ का भी उन पर असर पड़ता है, एक ग्राम का भी पता चलता है। तो ये शुरुआती चीज़ें हैं। आप देखो कि कहां तक आप पहुंचे हो।[63]

मैंने प्रार्थना करनी शुरू की कि हे परमात्मा! मुझे विश्वास है कि किसी महात्मा के मिलाप के बिना, जो तुझे जान चुका हो, तू नहीं मिल सकता। यह अपने शरीर को अमली तौर पर अलग करना सीखने का नाम है। जो उस को देखता है, आप को दिखा भी सकता है। ऐसे महापुरुष की वास्तव में जरूरत है। सभी धर्म – ग्रंथ भी यही कहते हैं परंतु मैं कहां जाऊं। मैंने इस प्रकार प्रार्थना करना शुरू किया कि जैसे पुरातन ज़माने में महापुरुषों के पास आप सीधे प्रकट हो जाते थे तो आज मुझ को दर्शन क्यों नहीं देते। मुझे गुरु की जरूरत का पता है परंतु

दुनिया में कई महात्मा हैं – मैं किसे चुनूं? इस से मेरे हज़ूर (बाबा सावन सिंह जी) मेरे अभ्यास के समय आने शुरू हो गए। मैं उन्हें गुरु नानक समझता था। वे मुझ से बातें भी करते थे। उन दिनों पहला विश्व युद्ध चल रहा था और एक भाई भारत की तरफ से फारस में था। मैं हज़ूर के साथ सफर किया करता था और उन स्थानों पर यहां – वहां जाता रहता था।

मुझे दरियाओं, तालाबों, पानी आदि का बड़ा शौक था। जवानी में भी मैं कहीं पानी के किनारे या दरिया के किनारे कोई शांत और एकांत स्थान ढूँढ कर सारी – सारी रात बैठा रहता था। बहते पानी से थोड़ी एकाग्रता बढ़ती है। कुछ देर ऐसा होता रहा।

उस समय मैं पहले पेशावर रहा, फिर नौशहरा मेरी बदली हो गई जहां एक दरिया बहता है। मैं उस दरिया के किनारे घंटों बैठा रहता था। फिर जेहलम आ गया। वहां पास में दरिया है और मैं वहां भी किनारे पर कई – कई घंटे बैठा करता था। मुझे तैरने का भी शौक था।

फिर मेरी बदली लाहौर हो गई, वहां भी नज़दीक दरिया है। वहां मैंने अपना समय गुज़ारा। एक दिन सोचा कि ब्यास दरिया भी नज़दीक ही है, वहां हो कर आते हैं। एक रविवार को मैंने गाड़ी पकड़ी और ब्यास जा उतरा। एक बूढ़े आदमी वहां स्टेशन मास्टर थे। मैंने उन से पूछा कि दरिया किधर है। वह हज़ूर का नामलेवा था, बोला, "क्या संतों से मिलने आए हो?" "क्या यहां कोई संत भी रहते हैं?" "हां।" "कहां?" "दरिया के किनारे।" मैंने उस से कहा, "चलो, दोनों काम हो जाएंगे, दरिया भी मिल जाएगा और संतों के दर्शन भी हो जाएंगे।" फिर उस ने मुझे उधर रास्ते पर डाल दिया।

हज़ूर चौबारे पर खाना खा रहे थे। मैं गया और बाहर बैठ गया। करीब आधे घंटे बाद वे बाहर आए। यह देख कर मैं हैरान रह गया कि यह तो वही हस्ती है जो मुझे सात साल से (1917 से 1924) दर्शन देती चली आ रही हैं। मैंने माथा टेका और पूछा, "हज़ूर इतनी देर क्यों की?" उन्होंने फरमाया कि यही समय मुनासिब था।

इस प्रकार मैं हजूर से मिला। "शिष्य जब तैयार हो जाता है तो गुरु आता है," चाहे मन कितना भी शंकालु क्यों न हो। शायद मैं आप सब से अधिक शंकालु था। मैं डरता था कि मैं कहीं किसी अधूरे के चरणों में न पहुंच जाऊं जिस से मेरा जीवन बरबाद हो जाए।

जब भी मैं उन के पास जाता – (महीने में) एक या दो रविवार मैं जाता था – वे मेरा ऐसा ख्याल रखते जैसे पिता अपने पुत्र के आने का रखता है।

"यह कमरा तैयार करो, यह बिस्तर लगाओ।" मैं विनती करता, "हजूर आप चिंता न करें, मैं यहीं आप के चरणों में हूं।" ठीक है, आप को डेरे की देखभाल करनी होगी। जो यहां आएंगे आप को उन का ख्याल रखना होगा। ऐसे वचन उन्होंने पहले मिलाप के समय ही फरमाए।

अगली बार मुझे नामदान मिला। फरवरी का महीना था और सभी नामदान के लिए बैठे थे। हजूर ने फरमाया, "आप अंदर जा कर बैठो।" मैं अंदर गया। उन्होंने मुझे अपने कमरे के अंदर नाम दिया। इस प्रकार मुझे नामदान मिला। मैं इंतजार करता रहा, शायद वे मुझे बुलाएंगे या क्या करेंगे? मैं हिलने की हिम्मत न कर पाया क्योंकि उन्होंने मुझे बुलाया ही नहीं। मैं अंदर बैठा था। फिर वे आए। मैंने विनती की, "क्या आप मुझे नामदान देंगे?" हां, जरूर दूंगा।"

जीवन का रहस्य क्या है – इन्सान क्या है, आत्मा क्या है – सारे सवाल उसी समय हल हो गए।[64]

अध्याय 4

गुरु शिष्य की कहानी

जब मुझे नाम मिला तो कुछ लोगों ने पूछा कि आप के हजूर कितने महान हैं। मैंने उन्हें बताया कि इसका तो मुझे ज्ञान नहीं परंतु इतना मुझे यकीन है कि मेरी जरूरत से कहीं ज्यादा बड़े हैं। हजूर को ब्यास में एक अंग्रेज प्रचारक ने पूछा कि आपके सत्गुरु (बाबा जैमल सिंह) तथा ईसा मसीह में कौन बड़ा है। उन्होंने उत्तर दिया, "भई, मैंने बाबा जी के तो दर्शन किए हैं, ईसा मसीह को देखा नहीं। अगर आप दोनों को इकट्ठा मेरे सामने ला कर खड़ा कर दो तो मैं फैसला कर लूंगा। देखा आप ने? ठीक है, ये सब हस्तियां एक होती हैं परंतु मैंने उन्हें इकट्ठे देखा नहीं, मैं कैसे फैसला कर सकता हूं? वे हस्तियां एक होती हैं और अपना काम करके वापस चली जाती हैं।[65]

शुरू में जब मैं अपने हजूर के पास गया तो लोग पूछने लगे, "वे कितने महान हैं?" मैंने सहज ही में कहा, "मुझे पता नहीं परंतु जो कुछ मैं प्राप्त करना चाहता हूँ वे उस से कहीं महान हैं।" आप देखो कि शुरू में ही कहां कोई महापुरुष की महानता का पता लगा सकता है? आप उतना जान सकते हैं जितना वह जनाये।[66]

शुरू में मैंने हजूर से एक बार पूछा कि शरीर से ख्याल सिमट जाने पर अपनी तवज्जो कहां लगानी चाहिए। उन्होंने हंसते हुए फरमाया, "हम अक्सर अपने बच्चों, मित्रों और दुनियावी धन – दौलत का ध्यान करते हैं तो साधु के स्वरूप का ध्यान करने में क्या हर्ज़ है?"

साध रूप अपना तन धारेया।। (गुरबाणी)

कुछ समय बाद जब ध्यान के बारे में दोबारा अर्ज़ की तो

उन्होंने स्पष्ट तौर पर फरमाया, "गुरु जब शिष्य को नाम देता है तो सूक्ष्म रूप में उस के अंदर बैठ जाता है। ध्यान में बैठते समय चाहे आप उस का ख्याल करें या न करें परंतु जब आप अंतर में तरक्की करेंगे, आप को उस के दर्शन जरूर होंगे।" जैसा कि कुछ लोग आम तौर पर सोचते हैं, गुरु जिस्म का नाम नहीं बल्कि वह ऐसा पोल होता है जिस पर दुनिया की भलाई के लिए प्रभु – पावर पूर्ण रूप में काम कर रही होती है। जिन भाग्यशाली रूहों को वह नाम देता है उन्हें उस समय तक नहीं छोड़ता जब तक सुरक्षित ढंग से प्रभु के देश न पहुंचा दे। वे लोग धन्य हैं जिन्हें हजूर महाराज के चरणों में बैठना नसीब हुआ। उनके पवित्र स्वरूप का ध्यान करना चाहिए।[67]

जब मैं हजूर के चरणों में गया तो कुछ दिन बाद मैंने पूछा, "यह मार्ग पूर्ण है। इस का क्या सबूत है कि आप के बाद भी यह जारी रहेगा?" यह गुस्ताखी – भरा सवाल था परंतु मैंने फिर भी पूछा क्योंकि मैं इस मार्ग की पूर्णता जानना चाहता था। हरेक को अनुभव मिलता है और हर कोई रास्ते पर तेजी से तरक्की करता है जिस के बारे में हम कम बहुत जानते हैं। यह आखिरी चीज़ है जिस को हम ने पाना है परंतु सत्गुरु की दया – मेहर बनी रहती है जिसे वह नामदान के दिन ही बख्श देता है।

तब उन्होंने फरमाया, "जिस को मैं कह जाऊंगा, उस का तो मैं जिम्मेदार हूँ दूसरों का मैं जिम्मेदार नहीं और यह काम आगे भी जारी रहेगा।" जब भी कोई महापुरुष चोला छोड़ता है तब इसे आत्म – सम्मान तथा धन – दौलत का साधन समझते हुए कई लोग गुरु बन बैठते हैं। तो उन्होंने फरमाया, "जिस को मैं कह जाऊंगा उस का मैं जिम्मेदार हूँ और यह काम आगे भी चलता रहेगा। बाकियों का मैं जिम्मेदार नहीं।"

मैंने फिर सवाल किया, "तो वह किस शकल में होगी?" उन्होंने कहा, "वह सिख शकल में होगी।" आप देखो कि कुछ लोग जिन की सिख शकल नहीं थी, गुरु बन बैठे और सिख शकल बनानी

शुरू कर दी। मैंने आगे सवाल किया, "आप पहले दिन शुरू से आखिर तक सारी शिक्षा दे देते हैं । क्या यह ठीक नहीं होगा कि आप कदम – दर – कदम आगे शिक्षा दें?" इस पर उन्होंने उत्तर दिया, "क्या आप जानते हैं कि यह साईस आज इतनी लोप क्यों हो गई ?" उन्होंने फिर फरमाया, "मान लो एक आदमी गुरु के पास गया, तो अगर शिष्य ने दूसरे या तीसरे मंडल तक तरक्की कर ली और तभी गुरु चोला छोड़ गया तो नतीजा यह हुआ कि उस शिष्य ने उसी तरक्की को अंतिम निशाना समझना शुरू कर दिया। एक दूसरा आदमी अपने सत्गुरु के पास गया और उस ने दो मंडलों (स्थूल, सूक्ष्म) तक तरक्की की, तभी गुरू ने चोला छोड़ दिया। उसने उसी स्टेज को अंतिम निशाना मान लिया। तीसरा आदमी भी अपने गुरु के पास गया और वह केवल पहले मंडल तक ही तरक्की कर सका। उस ने उसी स्टेज को अपना अंतिम लक्ष्य मान लिया।" तो हजूर (बाबा सावन सिंह जी) ने फरमाया, "इसलिए आज कल सारी शिक्षा पहले ही दिन नाम दान के समय समझा दी जाती है। अगर (शिष्य) सत्गुरु को दोबारा शारीरिक तौर पर न भी मिल सके तो भी उसे मालूम रहे कि वह कहां खड़ा है। इसलिए सारी चीज़ नाम दान के समय ही दे दी जाती है– –साथ में कुछ अनुभव भी दे दिया जाता है।"

ये तीन सवाल थे जो मैंने उन से पूछे। बाकी सब कुछ मुझे चुपचाप उन के चरणों में बैठने मात्र से ही प्राप्त हो गया। ज़रा देखो, जो ऐक्टर होता है वह जीवन की हर स्थिति में ऐक्टिंग करता है। चाहे वह घर में हो या विदेश में, आप को उस के हर काम में सुंदरता मिलेगी। अभी हमें वह चमक नज़र नहीं आती। क्यों? हम अपनी ऐनक से उसे देखने की कोशिश करते हैं। उस लैवल से हम आगे नहीं देख पाते। अगर ध्यानपूर्वक केवल उस को ही देखोगे, तब आप को उस की खासियत का पता चलेगा।

आंखें रूह की खिड़कियां हैं। रेडियेशन आंखों तथा शरीर से आती हैं। अगर (आप) केवल अपना ध्यान ही उधर टिका कर

रखेंगे – रेडियेशन के दायरे में रहेंगे, आप को जीवन की रौ मिलेगी। शब्दों द्वारा जो आप मांगते हैं, केवल वही मिलता है। अगर आप सब कुछ उन पर छोड़ कर शांति धारण कर लो तो आप को रेडियेशन मिलेगी। इस प्रकार इन्सान को ज्ञान की प्राप्ति अधिक होती है।[68]

अपने गांव में सब से पहले मुझे नाम दान मिला जिस पर कुछ लोगों को आपत्ति हुई। मुझे गुरद्वारे में बुलाया गया जहां मैंने उन्हें इस के बारे में समझाने की कोशिश की और अंत में कहा कि ठीक है, थोड़ा फर्क है, आप क्यों नहीं चार – पांच ज्ञानी लोगों को चुन लेते और फिर हम आपस में बात करते हैं। कुछ लोगों ने मुझे मार डालने की कसम खाई। मीटिंग का समय इसी लिए रात 10 बजे रखा गया ताकि गांव की गलियों से गुज़रते समय वे मुझे कत्ल कर दें। वे लोग रास्ते में मुझे मिले परंतु मुझे मारने का दुस्साहस (हौसला) न कर पाए। इस घटना के कुछ महीने बाद इस ग्रुप का लीडर मुझे लाहौर में मिला। मैंने उसे अपने घर चलने को कहा। "चलो भई, मेरे साथ आज खाना खाओ।" जब हम घर पहुंचे तो वह बैठ कर रोने लगा, "आप को पता है कि आप को मारने की योजना मैंने बनवाई थी और फिर भी आप मुझे अपने घर लाए हैं।" उस ने अपने आप को बड़ी मुश्किल से शांत किया। जीवन में नम्रता भरा व्यवहार होना चाहिए। आपको मालूम होगा कि ईसा ने कहा, "हे पिता! उन्हें मुआफ कर दो क्योंकि उन को पता नहीं कि वे क्या कर रहे हैं।" ऐसे व्यवहार से ही लोगों को पता चलेगा कि आप सत्गुरु के पास जाने वाले हैं। जब हालात आप के विरुद्ध हों और हर कोई आप को घृणा की दृष्टि से देखता हो तो आप उस समय भी अपने अंतर शांत रहोगे और बाहर के हालात का आप पर कोई असर न होगा। दूसरी तरफ अगर आपको आदर – सत्कार मिले तो आप शांत और बेअसर रहोगे, आदर – सत्कार से फूलोगे नहीं। लोग आप को इन बातों से जानेंगे और आप भी अपने आप को इस से टैस्ट कर सकोगे।[69]

मुझे नाम मिला ही था कि बीमे का एक एजैंट जीवन का बीमा करने के लिए आया। मैंने कहा कि मेरे जीवन का बीमा तो हज़ूर के

हाथों हो चुका, आप तो असल में मेरी मौत का बीमा करने आए हो कि अगर मैं दस साल के अंदर मर गया तो किसी को पालिसी की पूरी रकम मिलेगी, ठीक है। जान तो एक दिन जानी ही है, क्यों न यमों को देने की बजाय किसी ऐसे प्रभु – प्राप्त महापुरुष के हवाले कर दें जो आप को जीते – जी मरना सिखा दे? आप को ऐसा मौका मिले और आप उस से फायदा न उठाएं तो असल में हम खुद आप सत्लोक जाने में देरी कर रहे हैं।

गुरु ग्रंथ साहब के आखिरी शब्द ये हैं: –

हर दरस तिहारा हो।।

हमारे हज़ूर अपने पांवों पर खड़ा होने के लिए दो बार भजन में बैठने को कहते थे, तीन घंटे हर बार। उन्होंने फिर मुझे चलते – फिरते भी भजन करने को कहा। मुझे ऐसा करना पड़ा। प्रभु सब की मदद करता है।[71]

शुरू में मैं भजन में ज्यादा समय देता था। मेरी रावलपिंडी बदली हो गई। पहले ही दिन वहां सब को पता चल गया कि यह बाबा सावन सिंह का शिष्य है। कोई कुछ कहता था, कोई कुछ। इस बात का पता बीबी हरदेवी को भी चला जो वहां बैठी थी। इस से पहले वह मुझे नहीं जानती थी। लोगों ने उसे बताया कि वह बाबा सावन सिंह का पक्का शिष्य है। उस ने पूछा कि उस की क्या महानता है। "वह छः घंटे अभ्यास में बैठता है।" उस ने कहा कि अगर ऐसा है तो मैं भी 6 – 7 घंटे की बैठक बनाऊंगी और फिर उस से मिलूंगी। इस प्रकार की तुलना सही होती है। आप देखिए, हम दूसरों पर इसलिए लांछन लगाते हैं ताकि हम आगे नज़र आएं। मैं आप को बताऊं, वह कई महीने तक मुझे नहीं मिली। जब उस ने 6 – 7 घंटे की बैठक कायम कर ली, तब वह अपने पति के साथ मुझे मिलने आई और वह भी उस समय जब मेरे पुत्र की मृत्यु हुई थी।

मैं निश्चिंत था। डाक्टर ने रात के समय आ कर दवाई दी। मैंने उस से कहा, "अपनी मर्ज़ी अनुसार जो ठीक समझो, उसे दो। उस

(पुत्र) ने जाना है, मुझे उस का लेना-देना निपटाना है।" लगभग आधी रात को उस ने अंतिम सांस ली, उस को लंबे समय तक उलटियां लगी रही थीं और उस का शरीर ठंडा पड़ गया था। तब मैंने डाक्टर को बुलाया था। उसने आ कर कुछ दवाई दी और कहा कि वह ठीक हो जाएगा। फिर उस ने कहा कि वह अचानक ठीक नज़र आ रहा है। मैंने कहा, "बाहर इंतजार करो, वह अभी जा रहा है।" मैंने उस की तरफ देखा और उस ने शरीर छोड़ दिया।

उस समय कई लोग मुझे मिलने आए। मैं बता रहा हूँ कि किस प्रकार यह परिवार (ताई जी तथा उनके पति राजा राम) मेरे संपर्क में आया। वह और उनका पति मुझे मिले और हैरान हुए, "आप का पुत्र गुज़र गया है परंतु आप पर कोई असर नहीं है। ऐसे समय में दुखी होना कुदरती बात है।" बहुत से लोग मिलने आए और उन्होंने बताया कि किसी ने गुरद्वारे से ऐलान करवाया है कि एक सिख ऐसा है, उस से हमारे धर्म का नाम ऊंचा हुआ है। उस के पति ने सुना और सोचा कि जरूर वह हमारे हजूर का शिष्य होगा। वह पहले मुझे नहीं जानता था। उसने जा कर पता किया तो मालूम हुआ कि उस का ख्याल ठीक है। उसने उन्हें बताया कि वह मेरा भाई है जो हमारे सत्गुरु के पास जाता है। फिर वे मेरे पास अफसोस करने के लिए आए और हैरान रह गए। मैंने क्या किया? उन्हें चाय पिलाई और साथ कुछ खाने को दिया।[72]

सरकारी सेवा के समय एक बार भारतीयों की प्रतियोगिता रखी गई। हजूर के हुक्म के अनुसार मुझे 5-6 घंटे भजन-सिमरन में देने होते थे। मेरे पास समय नहीं था। जीवन में 5-6 घंटे निकालना काफी मुश्किल होता है। किसी ने मेरे सत्गुरु से कहा कि उस की परीक्षा नज़दीक आ रही है। हजूर ने मुझ से पूछा कि क्या यह बात ठीक है? "यह बात सही है और अगले दो महीने में मेरा इम्तिहान है।" "अच्छा, आप के पास दो महीने हैं। ज्यादा समय दो।" एक महीना तो मुझे किताबें सही करने में निकल गया जिन को सरकारी हुक्म तथा भारत सरकार के हुक्म पढ़ कर ठीक करना था। एक पूरा महीना, क्योंकि

किसी ने भी गुम हो जाने के डर से मुझे किताबें उधार न दीं। यह कुदरती स्वभाव होता है। तो जब तक मैंने पुस्तकें सही कीं तब तक एक महीना रह गया था। मैंने हिसाब लगाया कि अगर मैं हर रोज़ 500 पृष्ठ पढ़ूं तो एक बार सब किताबों में से निकल सकता हूँ। इम्तिहान आ गया। सब पर्चे साधारण ज्ञान और दूसरी सूचना पर आधारित थे और मैंने अच्छी तरह हल कर दिए। बुक-कीपिंग का एक पर्चा रह गया। मुझे उसे देखने तक का समय न मिला था। यह नया विषय था। तो जब मैं परीक्षा भवन से एक अन्य पर्चा दे कर आया तब से अगले दिन सवेरे तक का समय ही मेरे पास बचा था। मैंने पिटमैन का बुक-कीपिंग का प्रीमियर लिया। वह एक अति प्रैक्टीकल किताब है। तो जल्दी से मैंने एक बार किताब पढ़ ली। उस रात मैं केवल एक घंटा ही सोया क्योंकि और कुछ करने से पहले मैंने किताब में से गुज़रना था। एक या दो प्रश्न इस पुस्तक में न थे तो मैंने किसी और से पूछा, उस ने मुझे उत्तर बताए। ऐसा हुआ कि जिस से मैंने पूछा था वह वही आदमी था जिस ने मुझे गुम हो जाने के डर से पुस्तकें न दी थीं। वह अपनी जगह सही था। वही प्रश्न परीक्षा में आ गए। वह भाई उत्तर न दे पाया परंतु मैंने उत्तर लिख दिया जिस से मुझे उस में 150 में से 125 अंक मिले। मैंने सारा समय पढ़ने में लगा दिया और सोया भी नहीं क्योंकि मैंने वह परीक्षा पास करने की ठान रखी थी। क्या हम इतनी मेहनत करने को तैयार हैं? अगर हम तैयार हैं तो जरूर सफल होंगे। यह काम (भजन) तो उस से कहीं जरूरी है; चाहे इस के लिए (सब का) समय निश्चित है परंतु हमें पता नहीं कि कब हम तीसरे मंडल तक पहुंचेंगे। तो खुद फैसला करो और उस पर अमल करो।[73]

महापुरुष किसी दूसरे महापुरुष को मिलते समय एक दूसरे से गले लगकर प्रसन्न होते हैं। छोटे-बड़े का कोई सवाल नहीं है। मेरे जीवन की एक घटना है जब बाबा सावन सिंह जी राय सालीग्राम के एक शिष्य शिवव्रत लाल से मिले। वे एक ऊंचे दर्जे के महापुरुष थे। पहली बार जब वे हजूर से मिले तब मैं भी उन के साथ था। वे हमारे हजूर के पांवों पड़ते थे और हजूर उन के पांवों पड़ते थे। वे आपस में

गले मिल रहे थे। जो इस मार्ग पर चलने वाले हों, वे क्यों नहीं गले मिलेंगे? इस पर उन को खुशी क्यों नहीं होगी? अगर कोई आपस में मिलना नहीं चाहते तो ज़ाहिर है कि वे अपनी – अपनी डफली बजा रहे हैं और उन्होंने प्रभु को नहीं पाया।[74]

मुझे खुशी होगी अगर देने वाले और हों। मेरा काम आसान हो जाएगा। परंतु दे कौन सकता है? गुरु को कौन नियुक्त करता है? जब गुरु नानक देव जी चोला छोड़ने लगे तो लोगों ने कहा, "हम दोबारा आपको कैसे पहचानेंगे?" उन्होंने बड़ी सुंदर मिसाल दी कि अगर आप का दोस्त कपड़े बदल कर आ जाए तो क्या आप उस का आदर नहीं करोगे? वहां (ऊपरी मंडलों में) बड़ा सख्त कानून है। जब मेरे हजूर ने मुझे सत्संग करने के लिए चुना तो मैंने प्रार्थना की कि मुझे यह काम न सौंपें, कोई और काम मुझे दे दें। आप की बड़ी कृपा है (यह सौंपने के लिए) लेकिन मुझे कोई और काम सौंप दें।[75]

हमारे हजूर फरमाया करते थे, "मुझे भाई समझ लो, दोस्त समझ लो, पिता समान समझ लो लेकिन जो मैं कहता हूँ, कर के देखो। जब कमाई कर के आप ऊपरी मंडलों में पहुंचो, फिर जो मर्जी मुझे कह लेना।" जितना – जितना आप उस का अनुभव करोगे, उतना – उतना आपको मालूम होगा कि दुनिया की कोई भी चीज़ उस का मुकाबला नहीं कर सकती । लोगों को उन के लैवल पर ही की हुई बात समझ पड़ती है। मैं अपने प्रवचनों में सभी बातें लोगों के लैवल पर ब्यान करता हूँ? बहुत ऊंचे लैवल पर नहीं बोलता। भाषण में कठिन भाषा से परहेज़ करना चाहिए। वह मानव रूप में आखिर प्रभु होता है। हम जितनी – जितनी तरक्की करते जाएंगे, हमें महसूस होगा कि वह इस से भी ऊंचा है।

जिस को प्रभु – प्राप्ति की दात नहीं मिली वह कैसे आप को प्रभु – प्राप्ति करवा सकता है? एक बार एक फिलासफर, जो अंधा था और बाहरी तौर पर बड़ा विद्वान था, हमारे हजूर के पास आया। मैं वहां मौजूद था। हजूर ने सत्संग किया। सत्संग के बाद वह बोला, "देखिए, पिछले सब वाद – विवादों में मैंने सारे धर्मो के लोगों को हरा दिया है

परंतु आज पहला दिन है कि मैं एक बच्चा बन कर आपके चरणों में बैठा हूँ।" तो यह अनुभव की चीज़ है। आप धन्य हैं कि आप को अंतर में प्रभु – प्राप्ति का यह रास्ता मिल चुका है। आप और धन्य होंगे अगर आप इस रास्ते पर आगे बढ़ेंगे।[76]

मुझे याद है कि कैसे एक बार मेरा लड़का जो 4 – 5 साल का था, मेरे साथ हजूर के पास गया और नामदान के लिए प्रार्थना करने लगा। हजूर ने उसे कुछ मिठाई दी और वह खुशी – खुशी वापस आ गया। दूसरी बार जब वह दोबारा गया तो उस ने प्रार्थना की कि मुझे वह नाम दो जो मेरे पापा को दिया है। हजूर उसे अंदर कमरे में ले गए, अपने सामने बिठाया और अंतर में ध्यान टिकाने को कहा। थोड़ी देर में बच्चे को तारों से भरा आकाश नज़र आया। हजूर ने उसे आंखें खोलने के लिए कहा और बताया कि इस समय इतना ही काफी है। वह भागा – भागा आया और कहने लगा, "पापा – पापा, मुझे तारों तक नाम मिला है, आप को कहां तक मिला है?" यह उस महापुरुष की महानता है।[77]

एक बार पहले – पहल जब हमारे हजूर की फोटो खींची गई तो मैं वहीं था। वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते, मैं उन के साथ – साथ चला जाता। एक स्थान पर एक बड़ा धनवान व्यक्ति कमरे में दाखिल हुआ और हजूर के पास खड़ा हो गया। मैं बाहर दरवाजे पर बैठा था। उस ने हजूर से विनती की कि क्या आप मुझे अपनी एक फोटो देंगे? हजूर ने फरमाया, "देखो, कृपाल सिंह भी यही मांग रहा था परंतु मैंने उसे नहीं दी।" उन के अजीब ढंग थे। बाद में मैंने कहा, "हजूर, मुझे पता है कि आप का अपने सत्गुरु से कितना गहरा प्यार है। आप भी इस को माप नहीं सकते। परंतु थोड़ा प्यार आप ने मुझे भी बख्शा है तो क्या आप मुझे एक फोटो नहीं देंगे?" "नहीं, नहीं .....मैं यह आप को जरूर दूंगा।" उस समय पहली बार हजूर ने फोटो खिंचवाई। अगर आप प्रेम करना सीख जाओगे तो सब दुख मिट जाएंगे। प्रेम परमात्मा है और परमात्मा प्रेम है। इस लिए सत्गुरु हर समय शिष्य का अपने प्रति प्रेम

बढ़ाने की कोशिश करता है। उस को अपने सत्गुरु के प्रति अपने प्रेम का पता होता है।[78]

मेरे हज़ूर की दया थी कि मैं हफ्ते में दो बार उन के दर्शन करने जाया करता था, कभी – कभी एक बार, जैसे भी बन पड़ता था। कभी – कभी जा न पाता तो वे किसी न किसी को पता करने के लिए भेज देते। ऐसा भी हुआ कि उन्होंने कार पकड़ी और 40 मील चला कर लाहौर पहुंच कर मेरे दफ्तर के पास नीचे खड़े हो गए और मुझे बुलाने के लिए आदमी भेजा। यदि आप सत्गुरु से प्यार करते हैं तो सत्गुरु आप से प्यार करता है, आप उस प्रीतम के प्यारे बन जाते हैं।[79]

एक बार ऐसा हुआ कि मैं अमृतसर गया क्योंकि वहां हज़ूर ने आना था। हम उन के इंतजार में बैठे थे तो संदेश आया कि हज़ूर नहीं आ रहे। सब का दिल टूट गया। कुछ लोग चले गए और कुछ रह गए। मैं बताऊँ, यह भी एक पागलपन है। मैंने यह कविता लिखी, "वे आएंगे, हम उन का दर्शन पाएंगे।" मैं यह कविता लिखता पागलों की तरह इधर – उधर घूम रहा था कि एक घंटे बाद हज़ूर वहां आ पहुंचे। प्रेम की खींच इतनी बलवान होती है।[80]

गुरु हज़ारों मीलों पर बैठा अगर आप को याद करता है तो आप के अंदर सिर से पांव तक ठंडक की एक लहर – सी दौड़ जाती है। आप को एक किस्म की पवित्रता और शांति मिल जाती है। अगर आप समय नोट कर लें और पता करें कि क्या उस समय सत्गुरु आप को याद कर रहा था तो पता चलेगा कि वह वाकई आप को याद कर रहा था। विचारों का असर होता है। मुझे जीवन में ऐसे अनुभव हुए। एक बार जब ऐसा हुआ तो मैंने वक्त नोट कर लिया और जा कर पता किया कि हज़ूर उस समय क्या कर रहे थे तो पता चला कि वे आप को याद कर रहे थे। आप ने देखा? यह शिष्य और गुरु का रिश्ता है परंतु याद रखो यह उसी समय बनता है जब आप के और गुरु के दरम्यान कोई और न हो – आपका शरीर और आप की बुद्धि भी न हो। रेडियो हजारों मीलों से आवाज़ पकड़ लेता है, आप को सत्गुरु से रेडियेशन क्यों नहीं

पहुंचेगी? विचारों की लहरें बड़ी ताकतवर होती हैं। सूर्य की किरणों की स्पीड बिजली से ज्यादा होती है और प्राणों की इस से भी ज्यादा तेज़ होती है। सुरत की सब से तेज होती है, सैंकड़ों – हजारों मीलों से मार कर सकती है।[81]

भाव – भक्ति अपना भार प्रीतम पर डालती है। एक बार मेरा लड़का बहुत सख्त बीमार था। डाक्टर ने सलाह दी कि उस का कोई पता नहीं, एक – दो दिन में खत्म हो जाए, आप छुट्टी लेकर उस के पास बैठ जाओ। उन दिनों में एक दिन वह भी आया जब मैंने 27 – 28 मील दूर सत्संग के लिए जाना था। मैंने सोचा, "डाक्टर ने तो यह कहा है। मुझे अब क्या करना चाहिए?" फिर मैंने सोचा कि जीवन और मृत्यु मेरे हाथ में नहीं हैं; ये हज़ूर के हाथ हैं। यह उन पर ही छोड़ देना चाहिए। मैं सत्संग के लिए चला गया और करीब 11 बजे सत्संग समाप्त हुआ। वहां से हज़ूर लगभग 20 मील पर थे। मैंने सोचा कि मुझे जाना चाहिए। मैं चल कर दो बजे दोपहर को वहां पहुंचा। हज़ूर ऊपर थे। उन्होंने फटाफट एक आदमी को भेजा और कहा कि उसे ऊपर बुलाओ। वे बिस्तर पर लेटे थे। मैंने माथा टेका और बैठ गया। वे अपने बिस्तर पर उठ बैठे और पूछा, "लड़के का क्या हाल है?" मैंने बताया, "हज़ूर वह बीमार है और ज्यादा ही बीमार है।" हज़ूर उदास और गमगीन हो कर बैठ गए। मैंने अर्ज़ की, "हज़ूर जो आप का नाम ले, उसे कोई चिंता नहीं रहती, आप क्यों उदास हो गए?" "क्योंकि तुम ने भार मुझ पर डाल दिया।" आप देखिए, सत्गुरु का काम बड़ा कठिन होता है।[82]

एक बार मैंने हज़ूर को पत्र लिखा कि मैं आप से प्रार्थना करता हूँ कि आप प्रेम बख्शें, ऐसा प्यार जो केवल देना जानता है, निष्काम, प्रेम जिस में सत्कार भरा हो। कभी – कभी प्रेम में हम सत्कार की सीमा पार कर जाते हैं। फिर उन्होंने क्या किया? उन्होंने वह पत्र पढ़ कर छाती से लगाया और बोले, "मैं उन लोगों को चाहता हूँ जो सत्कार की सीमा में रह कर प्रेम करते हैं।"[83]

मैं हुक्म के अंदर हूँ। मैं उन के बाद एक क्षण के लिए भी नहीं रहना चाहता था। मैं सारी उम्र उन से यही प्रार्थना करता रहा। शारीरिक रूप से मेरा उन से 1924 में मिलाप हुआ परंतु अंतर में मैं इस से सात साल पहले उन से मिलता था। 1927 में मुझे ख्याल उत्पन्न हुआ कि हजूर हमें छोड़ कर जा रहे हैं। यह हजूर के चोला छोड़ने से 21 साल पहले की बात है। मुझे जीवन में आनंद न रहा क्योंकि हमेशा यह कांटा चुभा रहता था कि हजूर हमें छोड़ कर जा रहे हैं। इसलिए मैं सदा प्रार्थना करता था, "हजूर, पहले मुझे जाने देना।" उन्होंने कहना, "नहीं, तुमने काम करना है।" क्यों, क्यों, क्यों, मैंने करना है? हुक्म के आगे कोई चूं-चरां नहीं हो सकती।[84]

एक बार मेरी चचेरी बहन सख्त बीमार हो गई और उस के पिता अर्थात् मेरे चाचा ने मुझे लिखा कि आप आ कर उस से मिलें। उस ने लिखा कि फौरन चले आओ क्योंकि वह बहुत सख्त बीमार है। उन दिनों मैं लाहौर में था और हजूर से नाम दान की कृपा हो चुकी थी। मुझे पत्र मिला, उसी रात मैं लाहौर से गाड़ी पकड़ कर चल पड़ा और अगले दिन 1-2 बजे अपनी चचेरी बहन के गांव पहुंच गया। उन्होंने मुझे बताया कि पिछली रात क्या घटना घटी। जब मैं लाहौर से चला तो मेरी चचेरी बहन ने अपने पिता से कहा कि कृपाल आ गया है और साथ एक बूढ़ा आदमी लाया है। फिर उस ने बताया कि किस प्रकार आप बूढ़े आदमी को बीमार के बारे में बता कर चले गए। उस ने अपने पिता से कहा कि पापा जी (कृपाल) को जाने न दो। पिता ने कहा कि वह यहां है ही नहीं। उसने कहा कि वह इस बूढ़े आदमी के साथ आया था परंतु अब जा रहा है। उसी समय से उस की हालत ठीक होने लगी और जब तक मैं पहुंचा तब तक काफी ठीक हो चुकी थी। उस ने कहा कि आप उसे पिछली रात देख कर वापस क्यों चले गए। मैंने उसे बताया कि मैं नहीं आया था लेकिन जो बूढ़ा आदमी आया था, उस ने आप को ठीक किया है। वह बिल्कुल ठीक हो गई तो एक दिन मैंने उसे कहा कि अगर मैं वह बूढ़ा आदमी आप को दिखा दूं तो क्या तुम उसे पहचान लोगी। उसने कहा, "बिल्कुल।" जब दो महीने के प्रोग्राम पर हजूर

रावलपिंडी में थे तो मैं उसे वहां ले गया। हम राजराम के मकान के बरामदे में खड़े थे जब मैंने हजूर को दूर से आते देखा। मैंने कहा, "देखो, वह कौन आ रहा है?" वह चिल्लाई, "यह तो वही आदमी है जो उस रात आप के साथ मुझे देखने आया था।" तो जहां रिश्तेदारी होती है, निकटता का नियम लागू होता है। अगर आप की नज़दीकी बढ़ जाए तो आप की संभाल होती है। जरा सोचो कि सत्गुरु से क्या दात मिलती है। यह सच्चे महापुरुष की पहचान की एक और निशानी है और जहां पूर्ण पुरुष होगा वहां हज़ारों ऐसी घटनाएं मिलेंगी।[85]

हजूर के समय ऐसा हुआ कि एक बार कुछ आदमी जिन्होंने पाप किया था, हजूर के पास आए। उन्होंने उन्हें अपने पास बुलाया, "आओ, ठीक है।" उन्होंने सोचा कि शायद हजूर को पता नहीं कि हम ने पाप किया है, देखो हजूर कितने खुश हैं? परंतु आप देखो कि जो मरीज़ अति बीमार होता है, उसे डाक्टर के ध्यान की अधिक जरूरत होती है। वह उसे सही ढंग से ठीक करता है और लोग इसे अपने लैवल से देखते हैं। यह गलत बात है। इसी कारण हम सत्गुरु को समझ नहीं पाते। उन के साथ रहने वाले लोगों को भी विश्वास नहीं आता, उसे सत्गुरु के असली रूप में नहीं जान पाते। वे अपने लैवल से समझते हैं कि सत्गुरु क्या जानता है। जब तक हम नहीं बताएंगे, शायद उसे पता नहीं चलेगा। कभी-कभी हजूर के साथ रहने वाले लोग हजूर को कहते थे, "हजूर, आप नहीं जानते।" हां ऐसा होता है।[86]

महापुरुष के समझाने का ढंग कभी-कभी परोक्ष होता है। कभी-कभी दो आदमियों से बातें करते समय वह उन में से एक को डांटना चाहता है तो वह कहेगा, "इधर देखो, ऐसा नहीं होना चाहिए, ऐसी चीज़ें फिर नहीं होनी चाहिएं और सीधे तौर पर संबंधित आदमी को कहेगा। अपने दिल से वह पहले आदमी से बात कर रहा होता है। संबंधित आदमी दिल में सोचता है कि मैं पकड़ा गया।[87]

मुझे याद है, एक बार हजूर के वक्त एक आदमी अर्ीका से आया और जब मैं वहां था तो उसने हजूर से पूछा, "महाराज जी, मैं

अÝाका में रहता हूँ, मैं 5 – 6 साल बाद आप के दर्शन करने आया हूँ लेकिन कबीर साहब ने तो यह कहा है कि अगर शिष्य अपने गुरु का साल में कम से कम एक बाद दर्शन नहीं करता तो उस का रिश्ता ढीला पड़ जाता है।" आप को पता है कि इस पर बाबा सावन सिंह जी ने क्या जवाब दिया था? उन्होंने फरमाया, "कबीर साहब ने ऐसा कहा है, मैंने तो नहीं कहा।" आप को अपने आप पता चल जाएगा कि यह खाली पढ़ने – लिखने का मज़मून नहीं और न ही बुद्धि – विचार का मज़मून है क्योंकि इन से असली लाभ नहीं मिल सकता। सच्चा सुख केवल उपासना से ही प्राप्त किया जा सकता है। उपासना का मतलब है किसी पूर्ण पुरुष के पास पूर्ण एकाग्रता से बैठना – ऐसी एकाग्रता जिस में बाकी सब कुछ भूल जाए, यहां तक कि अपने तन की भी होश न रहे। ऐसे समय जब ध्यान ध्यान से बातें करने लगे – उसे उपासना कहते हैं।[88]

हजूर के समय ऐसी कई घटनाएं घटीं, अब भी कुछ घटती हैं। दो किसान भाई थे। भारत में सुबह के समय आदमी नहर से खेत को पानी लगाया करते थे। दोनों भाई सुबह के समय खेत में जा कर भजन में बैठ जाते और जब तक हजूर दर्शन दे कर आर्शीवाद न देते, वे बैठे रहते। यह उन का रोज़ का नियम था। एक दिन वे दोनों भजन में बैठे थे कि उन का नहर से पानी लेने का समय नज़दीक आ गया। एक भाई कहने लगा, "पानी लेने की बारी आ गई है, हमें क्या करना चाहिए?" दूसरे ने जवाब दिया, "हजूर ने अभी दर्शन नहीं दिए हैं। ज़मीन को सूखने दो। जब तक हजूर नहीं आते, मैं नहीं उठूंगा।"[89]

जब हमारे हजूर शरीर में थे उस समय की बात है कि मैं पंजाब में एक जगह गया तो वहां हाई स्कूल के कुछ अध्यापक आए और प्रश्न पूछने लगे। उन्होंने सवाल किए और मैंने उत्तर दे दिए। तीन तो शांत हो गए परंतु दो ने और सवाल पूछे। मेरे उत्तर के बाद सब शांत हो गए। फिर एक ने पूछा, "जो आप ने कहा है, क्या वह सही है?" मैंने कहा, "मेरी तरफ देखो, क्या मेरी बात में आप को कोई शक की गुंज़ाइश नज़र आती है।" "नहीं," उस ने कहा। जब आप पूर्ण माहिर

हो कर बात करेंगे, तो उस में शक नहीं रहता। कबीर साहब कहते हैं कि जब मैं लोगों को समझाता हूँ तो सारे शक दूर हो जाते हैं। आप पढ़ी – पढ़ाई सुना कर लोगों में शक पैदा करते हो। इसी कारण मेरा और तेरा मन सहमत नहीं हो सकता।[90]

एक बार एक महीनावार सत्संग के समय हजूर ने मुझ से 250 के करीब लोगों को नाम दिलवाया। जो गद्दी के दावेदार थे, उन्होंने हाथ – पैर मारने शुरू कर दिए। "गद्दी गई कि गई!" अपने जीवन में कोई महापुरुष ऐसा नहीं करता। वह दूर देश में किसी को प्रतिनिधि बना सकता है परंतु अपने सामने अपने सत्संग में ऐसा नहीं करता।[91]

तो मेरे विरुद्ध बड़ी साज़िश रची गई कि हजूर ने अपनी हाज़री में डेरे में ही उस से नामदान दिलवाना शुरू कर दिया है। मेरे खिलाफ बहुत – सी बातें उछाली गई – इतना कि सब शहरों से, सब भाषाओं में पत्र आने शुरू हो गए, "वह ऐसा है, वह ऐसा है" और हजूर उन सब पत्रों को अपने पास रखते गए – रखते गए क्योंकि वे तो दिल की जानते थे। उन्होंने मुझे संदेश भेजा कि किसी के घर बिना सत्संग के मत जाओ। केवल सत्संग के लिए ही जाओ।

इस से पहले मैं क्या करता था? दफ्तर से छुट्टी के बाद मैं बीमारों, गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा के लिए जाया करता है। मैं देर रात 9 – 10 बजे यहां – वहां प्रवचन करता था। सुबह का भी यही रूटीन था। क्योंकि अब मैंने केवल सत्संग के लिए ही रविवार को जाना होता था, मुझे बहुत – सा समय मिल गया। उसी समय मैंने 'गुरमत सिद्धांत' नामक एक बड़ा ग्रंथ लिखा।

मेरे विरूद्ध यह प्रापेगंडा 8 – 9 महीने चला। हजूर के नज़दीकी लोग मुझे उन के निकट न जाने देते। मैं दूर से उन के दर्शन कर पाता था। दया – दृष्टि बेशक मेरी मदद करती थी। मैं अपने जीवन पर बार – बार नज़र मार कर देखा करता था कि कहीं जाने – अनजाने में कोई भूल हो गई हो। अगर आप खुद के सामने सच्चे हों तो आप को हर चीज़ सही रंग में नज़र आएगी।

हजूर डलहौजी की पहाड़ियों पर जाया करते थे। मेरा बड़ा भाई वहां जाता था। मैंने अपने भाई को कहा कि अगर समय मिले तो हजूर से पूछना कि क्या मुझ से जाने अनजाने में कोई गलती हो गई है, हजूर से यह पूछना। जब मेरा बड़ा भाई हजूर से मिला तो हजूर ने फरमाया कि उस ने जाने – अनजाने में कोई गलती नहीं की परन्तु हैरानी की बात है कि उस के सिर से ढेरों पानी गुज़र गया लेकिन वह यह बताने कभी न आया कि यह बात ऐसे नहीं, ऐसे है।

तो मेरे भाई ने मुझे बताया कि हजूर ने कहा है कि आप उन से मिल लें।

मैं हजूर से कभी सवाल नहीं करता था, केवल सुनता रहता था कि वे क्या कह रहे हैं। फिर मैंने हजूर से कुछ समय मांगा। मेरे ख्याल से मैंने पहली बार समय मांगा। उन्होंने कहा, "ठीक है।" रात का समय था। दरवाजे बंद थे। "आओ बैठो।" मैंने बैठ कर अर्ज़ की "हजूर, मैं इस कारण नहीं आया क्योंकि मैं जानता था कि आप मेरे अंदर बैठे मेरे हर कर्म को देख रहे हैं।" वे थोड़े जोश में आए। वे हर काम अनुशासनपूर्वक किया करते थे। उन्होंने कहा, "ठीक है। फलां – फलां लोगों को बुलाओ जो तुम्हारे खिलाफ कीचड़ उछालते हैं।" मैंने कहा, "हजूर मैं इस शिकायत के लिए नहीं आया।"

इस 8 – 9 महीने के विवाद से पहले हजूर मुझे प्रवचन देने के लिए कहते थे और मैं हजूर के सामने अपने बारे में बोलता था, साथ में लोग लुत्फ उठाते थे। फिर मैं सब से पीछे जा बैठता था।

एक दिन शाम के समय जब प्रवचन होना था, हजूर ने मुझे बुला कर कहा कि यहां आ कर सत्संग करो लेकिन हजूर के पास लोगों ने कहा, "नहीं, नहीं, हजूर हम उस से कुछ नहीं सुनना चाहते। हम तो आप का सत्संग सुनेंगे।" हजूर ने फरमाया, "नहीं, वह ही सत्संग करेगा।" उन के मजबूर करने पर भी हजूर ने न कर दी।

एक रात क्या हुआ? बात बिल्कुल उलट गई। आप समझे, मैं क्या कहना चाहता हूँ? यदि आप सच्चे हैं तो आप को पता होगा कि

सत्गुरु आप के अंतर में है – आप किसी से नहीं डरेंगे।[92]

मैं यही कहता हूँ ; यदि मेरी कोई चीज़ हजूर को पसंद आई तो यह मेरी निष्कपटता थी, मेरा अपने – आप के सामने सच्चे होना था, मेरे ख्याल में यह सब से बड़ी योग्यता है।[93]

गुरमत सिद्धांत पुस्तक मेरे द्वारा – मेरे हाथों द्वारा हजूर ने लिखवाई। मैं इसे लिख कर हजूर के पास ले जाता था ताकि उन के सामने पढ़ कर पास करवा ली जाए। एक बार मैं यह मजमून लिख कर ले गया कि किसी शिष्य का गुरु अगर चोला छोड़ जाए तो उस की क्या दशा होती है। यह एक प्रैक्टीकल अनुभव की बात थी। दादू साहब ने जब चोला छोड़ा, उस समय उन का एक खास शिष्य पास न था। जब वह शिष्य कब्र पर आया तो उन की कब्र पर लेट कर चोला छोड़ दिया। उस ने यह मिसरा गाया कि सत्गुरु के बिना मेरा जीना मुश्किल है और चोला छोड़ दिया। सिखों के दूसरे गुरु ने अपने गुरु के चोला छोड़ने के बाद फैसला किया कि वे किसी को अपना मुंह नहीं दिखाएंगे। सत्गुरु के बिना जीवन किसी काम का नहीं होता। हम जानते हैं कि चोला छोड़ने पर गुरु शिष्य को छोड़ता नहीं, वह सदा उस के अंग – संग रहता है परंतु फिर भी शिष्य को मानव – पुत्र होने के नाते बहुत कष्ट होता है। अब भी जब मैं हजूर को याद करता हूँ तो मेरे आंसू बह निकलते हैं। परंतु उन का हुक्म है। क्यों? यहां 'क्यों' का कोई सवाल नहीं।

जब गुरमत सिद्धांत का वह मज़मून पढ़ा गया तो उन्होंने फरमाया, "ठीक है, इसे फिर पढ़ो कृपाल सिंह।" मैंने इस तरह की 2 – 3 मिसालें ही दी थीं, फिर मैंने दोबारा पढ़ा। उन्होंने फिर कहा, "इसे फिर पढ़ो।" मैंने फिर पढ़ा। शायद वे यही बता रहे थे, अरे बदकिस्मत इन्सान, ये दिन तुझे भी देखने होंगे।

ये हजूर की मधुर यादें हैं जो जीने का सहारा हैं। एक कवि कहता है कि सत्गुरु के बिना स्वर्ग में रहना भी मेरे लिए नरक है और सत्गुरु के साथ नरक में रहना भी स्वर्ग के समान है। इन शब्दों की कद्र वही जानते हैं जिन को सत्गुरु से प्यार है।

अगर आपका पुत्र या माता गुज़र जाए तो आप को कितना दुख होता है। प्रभु-कृपा से मुझे ऐसी घटनाओं का दुख महसूस नहीं हुआ। यदि दुनियावी रिश्तेदारों के लिए ऐसा समय बड़ा दुखदायी होता है तो रूहानी रिश्तों का क्या हाल होता होगा? तो सत्गुरु के साथ जीना प्रसंनतादायक होता है। वह प्रभु-पावर आप को कभी छोड़ती नहीं परंतु इस मात-लोक में जीवन का पूरा सदुपयोग करो।[94]

मुझे याद है कि कई साल पहले एक बार हमारे हजूर कराची गए। जब वे वापस ब्यास आए तो उन्होंने मुझे बताया, "मुझे अमेरिका से एक वापसी टिकट मिला है।" वे लोग चाहते हैं कि मैं वहां जाऊं, चाहे एक दिन के लिए ही सही, और उन्हें आर्शीवाद दे जाऊं परंतु मैंने टिकट वापस कर दी क्योंकि मैं बूढ़ा होने के कारण जा नहीं सकता।" और उन्होंने मुझे कहा कि तुम में बैठा प्रभु वहां जाएगा, तुम जाओगे।[95]

जब मैं मिलिट्री में अकाऊंटस अफसर की सरकारी सेवा से रिटायर होने लगा तो लोगों ने कहा कि आप अपनी पेंशन कम्यूट (इसमें दस साल की आधी पेंशन एडवांस मिल जाती है, फिर उन दस सालों में आधी पेंशन ही मिलती है) करवा लो। मैंने उन से कहा कि मैं अपनी पेंशन कम्यूट नहीं करवाना चाहता क्योंकि मुझे अपने भविष्य के मिशन का पता है। मैं 1946 में रिटायर हुआ और यह 1963 चल रहा है। दूसरे शब्दों में यह सहूलत 1956 में खत्म जाती, और अब यह सहूलत अब तक मिल रही है। हमारे सामने स्पष्ट लक्ष्य होना चाहिए।[96]

प्रश्न: अपनी पुस्तक में डा0 जूलियन जानसन ने लिखा है कि इस मंडल में की गई एक साल की भक्ति का फल ऊपरी मंडलों में की गई सैंकड़ों सालों की भक्ति से ज्यादा है। क्या यह बात ठीक है?

महाराज जी: हां। यहां आप ऊंचे चढ़ सकते हैं। जो काम यहां महीनों में होता है, वहां सालों लगते हैं। इस मंडल में आप जल्दी लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

क्या आप को पता है कि वह किताब मेरे द्वारा संशोधित की गई थी? उस ने उस की मूल पुस्तक नहीं छपाई थी।

प्रश्नः – महाराज जी, क्या यह आप ने लिखी थी?

महाराज जीः – यह डा0 जानसन द्वारा लिखी गई थी, मेरे द्वारा संशोधित की गई थी। उस ने इस की तीन हस्तलिखितें तैयार की थीं। वह बड़े प्रचारक-रूप में लिखी गई थी, जैसे जब उस ने इस का ईसाई मत का भाग लिखा तो ईसाई मत के बारे में बड़े कठोर शब्द लिखे। इस हस्तलिखित की एक कापी मुझे दी गई, एक सरदार बहादुर जगत सिंह को तथा तीसरी प्रोफैसर जगमोहन लाल को दी गई। प्रोफैसर जगमोहन लाल ने यह कभी वापस न की और सरदार बहादुर जगत सिंह ने इसे बहुत सख्त आलोचना के साथ वापस कर दिया जिसे डा0 जानसन ने अनसुना कर दिया। तो फिर मेरी बारी आई। मैंने हजूर से अर्ज़ की, "इन बातों का पूर्ण ज्ञान न होने के कारण शायद वह ठीक प्रकार लिखने में कामयाब नहीं हो सका है।" फिर मैं उस (डा0 जानसन) के पास गया और कहा, "देखिए डाक्टर साहिब, यह हस्तलिखित तैयार करने के लिए मैं आप की कद्र करता हूँ परंतु कुछ जगह आप को तथ्यों का पूरा ज्ञान न होने के कारण कमी रह गई लगती है और आप इस पुस्तक के साथ पूरा न्याय नहीं कर सके।" डा0 जानसन ने कहा, "मैं कमियां जानना चाहता हूँ।" पुस्तक में सारे समाजों के धर्मो को ईसाई मत की तरह दिखाया गया था, हिन्दु नहीं जानते, मुसलमान नहीं जानते; सिख नहीं जानते। मैंने उसे हिन्दु, सिख और मुस्लिम धर्म-ग्रंथों से उद्धरण पेश किए तो उसने उनसे संबंधित हिस्सों को संशोधित कर दिया। मैंने उसे ईसाई-धर्म संबंधी हिस्से को थोड़ा सुधारने को कहा परंतु उस ने कहा, "नहीं, नहीं, पश्चिम के मेरे भाई तब तक नहीं जागेंगे जब तक मैं इस प्रकार से पेश न करूं।"

अब उस पुस्तक का संशोधन हो चुका है और एक छोटा एडीशन छप चुका है क्योंकि वह भाग ईसाई लोगों को भाता नहीं था। संशोधित भाग मुझे नहीं दिया गया। इतने में डा0 जानसन चोला छोड़ गया। वह भाग जैसे का तैसा छप गया लेकिन काफी बातें सही कर दी गई।[97]

एक रात 9 – 10 बजे का समय था, मैं हजूर के पास बैठा था और डा0 जानसन भी वहां थे। अगर महापुरुषों को आप उन के हाल पर छोड़ दो तो उन से बहुत सी राज़ (भेद) की बातें प्रकट होती हैं। अगर हम उन से प्रश्न पूछते हैं तो वे उसी संबंध में जवाब देंगे परंतु अगर उन्हें उन के हाल पर छोड़ दिया जाए तो कभी – कभी वे अपने बारे में बताते हैं कि वे कौन होते हैं और यहां किस लिए आते हैं। तो हजूर ने उस रात बताया कि हमें दुनिया में किसी खास मिशन के लिए भेजा जाता है और जब हम आते हैं तो अपना काम करने वाला स्टाफ साथ लाते हैं। जब एक तरफ हमारा काम खत्म हो जाता है तो हमें दूसरी ओर भेजा जाता है।[98]

एक बार जून के महीने में मैं हजूर के पास ब्यास में था। जैसे मौसम गर्म हुआ और सहन करना मुश्किल हुआ, मैंने हजूर को कुछ समय डलहौज़ी (पहाड़ी पर) गुज़ारने का सुझाव दिया। उन्होंने हंसते हुए फरमाया, "देखो कृपाल सिंह, लोग समझते हैं कि शायद मैं वहां पहाड़ी हवाएं खाने के लिए जाता हूँ लेकिन असल में ऐसी बात नहीं। मैं वहां इसलिए जाता हूँ कि शायद सैर के लिए आए हुए कुछ लोग प्रभु का संदेश सुनकर उस तरफ लग जाएं। मुझे गर्मी सर्दी से कोई फर्क नहीं पड़ता।" ऐसे महापुरुष दुनिया में हमें ढूंढते हैं, हम उन्हें नहीं ढूंढते। वे दुनिया के जाल में फंसी और निकलने के लिए व्याकुल रूहों को वापस ले जाने के मिशन से आते हैं।[99]

हजूर ने एक बार मुझे लिखा, "संतों की जागीर बेआरामी की होती है।" इस बात को स्पष्ट करने के लिए हजूर ने एक उर्दू का शेयर लिखा, "जैसे ही प्रेम करना मेरी किस्मत में लिखा गया, सिसकियां नकदी में मिलीं और उजाड़ रूपी ज़मीन मिली।" हजूर ने आगे लिखा, "सत्संग में सब किस्म के लोग आते हैं। कइयों के हृदय में प्रेम ठाठें मार रहा होता है और प्रेम और भक्ति की प्राप्ति के लिए वे तन – मन – ध न सब कुछ कुरबान करने को तैयार होते हैं। कुछ इस की केवल बातें करते हैं। वे आलोचना और बदनाम करने के लिए तैयार रहते हैं। परंतु

हमारा फर्ज़ सब से प्रेम करना है। जब वे अपने बुरे रास्ते से नहीं हटते तो हमें अच्छे रास्ते को क्यों त्यागना चाहिए।" यह पत्र मेरे जीवन का पथ – प्रदर्शक रहा है और रहेगा।[100]

संतों का सब से पहला काम प्रभु के सब बच्चों को प्रेम, कुरबानी तथा सब की सेवा सिखा कर एक सूत्र में बांधना होता है। वे प्रभु के सभी बच्चों को एक स्टेज पर इकट्ठा करते हैं। हमारे हजूर उस समय दुनिया में आए जब ईसाईयों, सिखों, हिन्दुओं, मुसलमानों और कई दूसरे समाजों में बहुत फिरके बन चुके थे। उन्होंने अपना उपदेश सब लोगों को प्रेम से इकट्ठे बिठा कर सारी सृष्टि में व्याप्त प्रभु – सत्ता को पहचानने के बारे में दिया।

"महापुरुख साखी बोलदे सांझी सकल जहाने।।"

– गुरबाणी

जिन्होंने अपने आप को जान लिया वे सारी मानवता को एक समझते हैं। सभी समाज, जातियां और धर्म अलग – अलग विचार धाराएं हैं और बाहरी चिन्ह अलग – अलग निशानियां हैं परंतु सब बाहरी चिन्हों में नजर आ रहे फर्क इन्सान के पैदा किए हुए हैं। छोटे रूप में आदमी की रूह में प्रभु जैसे गुण मौजूद हैं। इस नज़रिए से सारी मनुष्य – जाति एक है। हजूर की बड़ी इच्छा थी कि सारी रूहानी शिक्षा को लोगों तक पहुंचाने के लिए कोई सांझा प्लेटफार्म होना चाहिए जहां बाहर की जाति भेद, रंग – रूप, धर्म का कोई ध्यान दिए बगैर प्रचार हो। हजूर ने इस का नाम रूहानी सत्संग सुझाया। वे (हजूर) जीवन – मुक्त थे जो सृष्टि के कल्याण के लिए प्रकट हुए।[101]

झगड़े – झमेले के उस जमाने में हजूर ने एक सांझा मंच तैयार करने को कहा जहां पर सभी धर्मों के लोग इकट्ठे मिल बैठें और पवित्र जीवन धारण करके प्रभु – प्राप्ति कर सकें। उन्होंने फरमाया कि इस का नाम रूहानी कालेज, रूहानी स्कूल या रूहानी सत्संग रख लो। वे बंधन – मुक्त पुरुष थे और लोगों को दुनियावी बंधनों से मुक्त करने आए थे। जब किसी ने उन से कोई नया मत चलाने के लिए कहा

तो उन्होंने उत्तर दिया कि कुएं पहले ही बड़े खुदे पड़े हैं, एक नया कुआं लगाने की क्या जरूरत है? सच्चाई एक है परंतु उस को जानने वाले सभी लोग उसे एक तरह ब्यान क्यों नहीं कर सकते और जो उसे नहीं जानते वे आपस में झगड़ते रहते हैं। हमारे हजूर की शिक्षा सब को इकट्ठा मिला कर बिठाने की थी ताकि वे जानें कि सारी मनुष्य – जाति एक है, सब एक तरह पैदा होते हैं, उन सब की अंतरीय और बाहरी रचना भी एक – सी है। इन्सान आत्मा रखता है। आत्मा परमात्मा की अंश है और वही प्रभु – सत्ता इस को शरीर में कंट्रोल कर रही है जैसे कि वह सारी सृष्टि को कंट्रोल कर रही है।[102]

(गुरु – गद्दी) कागज़ों या कानूनी डाकूमैंटों द्वारा नहीं दी जाती बल्कि आंखों द्वारा, तवज्जो द्वारा दी जाती है। हजूर ने अंत समय में भी मुझे बुलाया, मैं जा कर बैठ गया। ऐसी रज़ा हुई कि उस समय मैं अकेला ही रह गया। उन्होंने आंखें खोलीं, फिर मुझे कृपा – भरी दृष्टि से देखा। लोगों को पता नहीं था और उन की कृपा काम करती थी। कौन कह सकता है, "बैठो और आप को मिलेगा।" आप को इस की बहुत कम मिसालें मिलेंगी। तो यह सब उन की कृपा – दृष्टि काम कर रही है। शायद मेरा यह खुलेपन का स्वभाव [redacted] पसंद आ गया हो। आप इस पर दिन – रात लगातार अमल करें। आप की तरक्की हो या न हो, हजूर फरमाते थे कि कम – से – कम आप की हाज़री तो लग जाती है, आप गैर – हाज़र नहीं पाए जाते।[103]

अध्याय 5

भारत में मिशन

जब हजूर ने चोला छोड़ा तो मैं एकांतवास में चला गया था तथा मैं 5 – 6 महीने जंगल में एकांत में रहा। मैं हिन्दु – धर्म के गढ़ (ऋषिकेश) में गया। शिवानंद जी, जो अब चोला छोड़ चुके हैं, से तथा कई अन्य योगियों से मैं मिला। मैं वहां जंगल में दरिया के उस पार रहता था। मैंने बहुत से महात्माओं से मिल कर यह पाया कि सभी बुद्धि के पहलवान हैं, तर्क – वितर्क के क्लब बने हुए हैं। वे सब अभी आरंभिक सीढ़ी पर खड़े हैं कि कैसे प्रार्थना करनी है और रीति – रिवाजों को कैसे निभाना है और बहुत से लोग तो हठयोग की क्रियाएं अपनाते हैं। मुझे सत्कार के साथ कहना पड़ता है कि ये क्रियाएं केवल शरीर को स्वस्थ बनाती हैं।

एक और हस्ती मुझे मिली, जो अभी जिंदा है, राघवाचार्य उन का नाम है। वे लगभग 106 – 107 साल के बजुर्ग हैं परंतु सेहत ठीक है। (अब कई साल पहले उन की मृत्यु हो चुकी है।) जब मैं उन से मिलने गया तो लोगों ने कहा, "वे किसी की परवाह नहीं करते।" जब मैं 100 – 150 गज की दूरी पर था, वे नज़र पड़े, वे अपने पांवों पर बैठे थे। मुझे देख कर खड़े हो गये। लोग कहने लगे, "यह हैरानी की बात है। उन्होंने कभी किसी की परवाह नहीं की, फिर भी वे खड़े हो गए।" वे आगे आ कर मुझ से मिले और हम ने आपस में बातचीत की और पता चला कि उन की पहले मंडल – – सहस्रार तक रसाई है। मुझे वहां केवल वही एक हस्ती मिली जो शरीर से ऊपर उठ कर सहस्राार तक जाती थी। वे कहने लगे कि सारे वेदों, शास्त्रों और उपनिषदों का सार

यह है कि ज्ञान वह है जो प्रैक्टीकली अपने जीवन में आए।[104]

जब मैं 1948 में ऋषिकेश गया तो मुझे एक योगी मिला जिस ने पतंजलि योग द्वारा शरीर से ऊपर उठना सीख रखा था। वह करीब 100 साल का था। उस ने मेरा बड़ा सत्कार किया और कहा कि मैंने सारी जिंदगी योग में लगा दी, कई सालों की मेहनत से मैं देहाध्यास से ऊपर आने लगा हूँ। (उस ने मुझ से पूछा कि) आप ने यह प्राप्ति कैसे की? मैंने उसे बताया कि गुरु – चरणों में बैठ कर मैंने यह पाया है और बताया कि शुरुआत के समय कैसे पूंजी दी जाती है, एक अंतरीय अनुभव मिलता है जिसे दिनो – दिन बढ़ाया जा सकता है।[105]

एक बार मैं 4 – 5 महीने जंगल में रहा और देखा कि हाथी को बड़ा गड्ढा खोद कर, उसे ऊपर पत्तों से ढक कर और वहां हथिनी की शकल बना कर पकड़ा जाता है। जब नर को मादा की शकल नज़र आती है तो वह वेग में आ कर हथिनी की तरफ भागता है और गड्ढे में गिर जाता है। उसे वहां कई दिन भूखा रख कर निकाल लिया जाता है और सारी उम्र की गुलामी झेलनी पड़ती है। आपने देखा कि किस प्रकार पांच वासनाओं में केवल एक के वश में होना मौत या सारी उम्र की गुलामी देता है। तब इन्सान की क्या दशा है जो पांचों इंद्रियों का दास है?[106]

सत्संग का काम हजूर के हुक्म से शुरू किया गया है और वही कामयाबी दे रहे हैं। हजूर फरमाया करते थे कि जब बाबा जैमल सिंह जी ने उन्हें रूहानियत का काम करने का हुक्म दिया तो मैं बाबा गरीब दास और चाचा प्रताप सिंह जी के पास गया और दोनों ने कहा कि हमारा चिताया कोई जीव शायद मुक्ति प्राप्ति से रह जाए परंतु अगर आप नाम दोगे तो उस रूह को अवश्य मुक्ति मिलेगी। जब हजूर ने मुझे यह काम करने का हुक्म दिया तो मैंने अर्ज़ की कि मैं किस के पास जाऊंगा। तब उन्होंने फरमाया, "हुक्म मान कर काम शुरू करो, मुनासिब संभाल होगी।" उन की कृपा से मैंने सत्संग शुरू किया, यह

मेरा नहीं, उन का है और वे सब को पार ले जाएंगे। जो भी वे भेजते हैं, बांट दिया जाता है।[107]

शुरू में मैंने बताया था कि यहां जाति या फिरकापरस्ती का कोई भेद नहीं है। हम ने पहला कदम उठाया है क्योंकि हम किसी स्कूल (रूहानियत) में दाखिल हो चुके हैं। उस के लिए मैं आप को बधाई देता हूँ और इस से कोई फर्क नहीं पड़ता कि प्रभु – प्राप्ति के सच्चे राह पर चलने की लगन कैसे लगी। अब आप अपना काम करो। इस आश्रम का नाम इसी कारण रूहानी सत्संग रखा गया है। कुछ भी बदलने की जरूरत नहीं – – धर्म, नाम, बाहरी चिन्ह – चक्र आदि। आप ने पहला कदम उठाया है, दूसरा कदम जो तुम उठाओ, सीधा प्रभु की गली में पहुंच जाए ताकि आप अकर्ता बन जाएं। शुभ कर्मों का बिना शक अपना फल मिलेगा परंतु फिर भी आप जेल (बंधन) में ही रहेंगे। कुछ ए श्रेणी में जाएंगे और कुछ बी तथा कुछ सी श्रेणी में। कइयों को इस दुनिया के भोग – विलास भी मिलेंगे और कइयों को परलोक के सुख मिलेंगे। सुख और दुख बार – बार आते रहते हैं और यह चक्र उस समय तक चलता रहता है जब तक जीव बंधन – मुक्त नहीं हो जाता।[108]

तो भाइयो, यह सांझा मंच (Common Ground) है जहां आप आज बैठे हैं। अपने हजूर के चरणों में बैठ कर काफी समय बाद मैंने सब धर्मों के समानांतर अध्ययन से इसे समझा। आप को भी इन चीज़ों का अध्ययन कर के इन का सही प्रयोग करना चाहिए। अपने अपने धर्म में रहो और वही रीति – रिवाज रखो। आप को कुछ बदलने की जरूरत नहीं। प्रभु – कृपा से आप को मनुष्य जन्म मिल चुका है जिस में प्रभु बस रहा है; उस का अनुभव करो। ऐसे सत्गुरु के पास बैठो जो अंदर जाता है। दरवाजा खटखटाओ। वह महापुरुष अंतर जाने की कुछ पूंजी देगा।[109]

हमारे सत्संग में दिल्ली में एक घटना घटी। करीब 2,000 आदमी वहां बैठे थे और मैं जब प्रवचन कर रहा रहा था तो एक छोटा

सांप स्टेज के सामने आ कर खड़ा हो गया और लोगों ने कहा कि सांप आ रहा है। मैंने कहा, "कोई बात नहीं, आने दो, उसे यहां आ कर खड़ा रहने दो।" वह सांप मेरी तरफ देखते हुए खड़ा हो कर एक घंटा सत्संग सुनता रहा। जब सत्संग खत्म हुआ तो वह धीरे – धीरे चल पड़ा। लोगों ने कहा, "इसे मार दें?" "क्यों? उस ने किसी को कुछ नहीं कहा। उसे क्यों मारते हो?"

यह सब कहने से मेरा मतलब है कि यदि आप में सब के लिए प्रेम है तो सांप जैसे जानवर भी आप को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे। एक कहावत है कि सांप की तरह समझदार बनो। याद रखो, सांप बड़े समझदार होते हैं। जब आप किसी सांप को देखते हैं तो कह उठते हैं, "उसे मार दो।" उसी विचार की प्रतिक्रिया सांप तक जाती है और अपने बचाव के लिए वह हमला करता है। अगर आप के मन में किसी के लिए भी बुरा विचार न रहे, वे आप को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे। तो विचारों का असर होता हैं।[110]

यह सारा काम हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज की दया – मेहर से चल रहा है जिन की याद में 27 जुलाई का दिन हर साल मनाया जाता है। वह तारीख नज़दीक आ रही है और मेरे विचार से हमें हजूर का जन्म दिन इस प्रकार मनाना चाहिए – आज 1 जुलाई है, हमें सारा महीना उन की याद में गुजारना चाहिए। शिक्षाएं पढ़ कर समझो, फिर उन पर अमल करने की कोशिश करो। दो – चार घंटे का समय दो। मुसलमान भाई एक महीना रोज़े रखते हैं न । आपने व्रत नहीं रखना – कम खाओ और दो – चार – छः या आठ घंटे हर रोज़ भजन करो। जीवन का नियम बनाओ और पूरी मेहनत करो ताकि जब 27 जुलाई का दिन आए तो आप कुछ बन जाओ।[111]

यू0 पी0 में बुलंदशहर के नज़दीक छोटे – से गांव में एक सत्संगी रहता था। उस ने खेत में तरबूज लगाए हुए थे जो तोड़ने के लिए तैयार थे। सत्संगी और उस के मज़दूरों ने एक दिन में ही सारे पके

तरबूज तोड़ने थे परंतु फसल ज्यादा होने के कारण काम पूरा न हुआ और उन्होंने बाकी काम अगले दिन करने का विचार बनाया। जब एक मज़दूर ने रात को रखवाली का सुझाव दिया तो उस सत्संगी ने कहा कि सत्गुरु हमारे सिर पर है, आप आराम करके सुबह आ जाना।

जब वे रात को जा कर सो गए तो चोरों का एक गिरोह तरबूज चोरी करने आया। जब उन्होंने तरबूज इकट्ठे करने शुरू किए तो एक चोर की नज़र हाथ में डंडा लेकर आते एक सरदार पर पड़ी। उस ने अपने साथियों को बताना चाहा तो देखा कि हर चोर के पीछे एक सरदार लगा है जिनकी शकल आपस में मिलती है। उन सरदारों ने चोरों की खूब पिटाई की और खेत से भगा दिया। अगले दिन वह सत्संगी यह देख कर हैरान रह गया कि अगर तरबूज किसी ने इकट्ठे किए हैं तो उन्हें साथ क्यों नहीं ले गया।

करीब एक हफ्ते बाद चोरों का वही गिरोह उस सत्संगी किसान के पास आया और मुआफी मांगने लगा। उन्होंने उसे सारी कहानी बताई और कहा कि उस दिन से उन्हें बहुत पीड़ा और बुखार है, इसलिए वे मुआफी मांगने आए हैं। किसान ने कहा कि मैं नाचीज़ आप को क्या मुआफी दे सकता हूँ, मेरा गुरु पूर्ण – पुरुष है। उन्होंने उसे गुरु के पास ले जाने के लिए तैयार कर लिया जिस से सहमत हो कर वह उन्हें सावन आश्रम ले कर आया।

इस कहानी से हमें सबक मिलता है कि हमें अपना मुंह गुरु की तरफ रखना चाहिए। गुरु शरीर नहीं बल्कि शरीर में काम करने वाली शक्ति का नाम है। वे लोग धन्य हैं जिन को सच्चे गुरु के चरणों में जाना नसीब हुआ और उन की दया से नाम के साथ संपर्क मिला।[112]

पहले विश्व धर्म सम्मेलन के समय अहिंसा पर विचार हुआ तो एक मुस्लिम भाई खड़े हो कर कहने लगे, "हम अहिंसा में विश्वास नहीं रखते।" फिर इस विषय पर लंबी बहस हुई। सारे धर्मों के लोग मान गए।

तब मैंने खड़े हो कर उस आदमी से कहा, "भाई साहब, इस बात को सभी मानते हैं कि प्रेम कुरबानी देना जानता है परंतु कुरबानी लेना मना है। क्योंकि प्रेम सेवा करना और कुरबानी देना जानता है – दूसरों के लिए आप कुरबानी दो।" उस ने कहा कि इस नुकते पर मैं आप से सहमत हूँ। तो मैंने कहा, "एतराज अब खत्म हो गया क्योंकि किसी को भी अपने लिए किसी की जान लेने का अधिकार नहीं है।" इसलिए यही नियम है जिस की हमें पालना करनी चाहिए। यही हमारे जीवन के सब दुखों का इलाज है। गुरु नानक ने फरमाया है:

नानक दुखिया सब संसार।।

क्यों? क्योंकि हम अपने आप को भूल गए और अपनी असली जाति को भूल गए – हमें अपने जीवनाधार का भी ख्याल नहीं रहा।[113]

फिर भी एक जागृति आ रही है, यह जान कर खुशी होती है। 1957 में एक विश्व धर्म सम्मेलन हुआ और मेरा इस संगठन से उसी समय से गहरा संबंध रहा है। विश्व धर्म सम्मेलन से एक प्राप्ति यह हुई कि धार्मिक नेता जो पहले एक – दूसरे के साथ मिलना पसंद नहीं करते थे, अब इकट्ठे बैठ कर विचार – विमर्श करते हैं। उन में अभी ज्यादा अंतर नहीं आया है, उन के दिलों पर राजनीति बसती है। इस से सच्ची एकता नहीं आएगी। क्यों? क्योंकि हिन्दु कहते हैं, सारी दुनिया के हिन्दु एक हो जाओ। मुस्लिमों, ईसाईयों और सभी के ऐसे ही विचार हैं। वे बड़े पिल्लर खड़े कर रहे हैं। ऐसी सहनशीलता कब तक चलेगी।[114]

तो इस उद्देश्य के लिए 1957 में एक बड़ा सम्मेलन भारत में दिल्ली में हुआ जहां 250 के करीब डैलीगेट बुलाए गए थे। वे अलग – अलग धर्मो और अलग – अलग देशों से आए थे। वहां पर कुल दो लाख के करीब लोग जमा हुए थे।

अगला सम्मेलन 1960 में कलकत्ता में हुआ। इसी प्रकार लोग वहां इकट्ठे हुए। अब मैं विश्व धर्म संघ के अध्यक्ष के तौर पर पश्चिम

में सभी धर्मो और देशों के और डेलीगेटों को 1964 के अंत में होने वाले सम्मेलन में शामिल होने के लिए तैयार करने जा रहा हूँ ताकि वे अपने – अपने धर्मो में रहते हुए इकट्ठे बैठ कर एक – दूसरे को समझें। दुख की बात है कि लोग दूसरे धर्मो की शिक्षा के न समझने के कारण समझते हैं कि सच्चाई का हमें ही पता है जबकि दूसरे महापुरुषों ने, जो किसी ज़माने में आए, अपने देश तथा उस ज़माने की भाषा में वही बातें पेश की हैं। हम सब की कद्र करते हैं क्योंकि सच्चाई एक है। जिन को सच्चाई का पता चला उन्होंने समय – समय पर लोगों को पेश किया। इन्सान भूलता रहता है और तभी दोबारा कोई महापुरुष प्रभु के बच्चों को प्रभु की ओर प्रेरित करने आ जाता है।[115]

गुरु क्या होता है? उस का काम क्या होता है? उस का काम आप को मन, बुद्धि और इंद्रियों से आज़ाद करा कर शारीरिक बंधनों से मुक्त कर के अंतर में प्रभु की ज्योति के दर्शन कराना है। अगर आप की दो से एक आंख बन जाए तो आप का सारा जिस्म प्रकाश से भर जाएगा। विश्व धर्म संघ के अध्यक्ष के तौर पर मैं कई धार्मिक नेताओं से मिला। उनमें से केवल एक या दो ही हिप्नोटिजम या रेडियेशन द्वारा दूसरों पर असर डालते थे। मैंने बहुत कम योगी ऐसे देखे जो देह – ध्यास से ऊपर आते थे। जब मैं 1948 में हिमालय पर्वत पर था तो मुझे केवल एक आदमी मिला – राघवाचार्य जिनकी 115 साल की उम्र में मृत्यु हो चुकी है।[116]

हमारे पूर्वजों का जीवन बड़ा संयम का था परंतु ऐसा बहुत कम मिलता है। आजकल की बुरी हालत देख कर तरस आता था। दुनिया की आबादी में एक मिनट में करीब 90 आदमी बढ़ रहे हैं। आप सोच सकते हैं कि बीस या तीस साल बाद आबादी का क्या हाल होगा। इसलिए हमारे लिए संयम का पालन करना अति जरूरी हो जाता है। ईसा ने कहा है कि पतियों को अपनी पत्नियों से इस तरह प्रेम करना चाहिए जैसे ईसा ने गिरजाघर से किया। स्वामी रामतीर्थ ने भी कहा है,

"जब तक पति – पत्नी भाई – बहन की तरह नहीं रहते, भारत के लिए कोई उम्मीद नहीं। जागते पुरुष ही ऐसा कह सकते हैं। इस बात का हल संयम रखने में है।

मुझे धर्मों के सर्वोच्च नेताओं से मिलने का मौका मिला है जिन में से कुछ ने ही संयम कायम रखा हुआ है। संयमी पुरुष अधिक प्रयास के बिना भी अपने निशाने तक पहुंच सकता है। जो संयमी है तथा मुआफ करना जानता है उस को घबराने की जरूरत नहीं, उसे प्रभु मिलेगा। मैं अपने दादा की मिसाल देता हूँ। उन का हृदय बड़ा पवित्र था। उन्हें किसी के प्रति कोई शिकायत न थी। 25 साल की उम्र में उन की पत्नी मर गई थी। वे 100 साल तक जिए परंतु उन्होंने दोबारा शादी नहीं की। मौत से एक दिन पहले उन्होंने लोगों को बताया कि अगले दिन उन्होंने चोला छोड़ देना है और अगर कोई भाई अपने स्वर्गीय संबंधी के नाम का संदेश भेजना चाहता है तो उन्हें आ कर बता दे। अपने अंतिम समय से कुछ देर पहले उनके रिश्तेदारों ने प्रभु के नाम का सिमरन करने को कहा तो वे बोले कि प्रभु मेरे रोम – रोम में समा रहा है और मैं सीधा उस के पास जा रहा हूँ। मैं पवित्र जीवन वाले लोगों की बात कर रहा हूँ। ऐसे लोगों को स्वाभाविक तौर पर प्रभु का एहसास होता है।[117]

अपने हजूर की दया से मैंने छोटी उम्र में ही अपने दो लड़कों, माता – पिता, दो बड़े भाइयों और अपने दुनियावी साथी पत्नी को खुशी – खुशी और प्रभु का शुक्राना करते हुए मामूली सा भी दुखी न होते हुए अलविदा कहा है और मैं चाहता हूँ कि आप सब को भी सत्गुरु – वचनों पर अमल करना चाहिए ताकि ऐसे मौकों पर आप शांत रह सकें।[118]

कल मैं दशम् गुरु साहब की याद के लिए गया। वहां पहुंच कर मैंने सिख धर्म – ग्रंथों से पढ़ा। मैंने उन्हें अपना दिल दे दिया। कौन जानता था कि वह वहां क्या था और मैं क्या था। वे सब एक होते हैं, सभी महापुरुष एक होते हैं। महापुरुष कभी दो नहीं होते। एक बल्ब

फ्यूज हो जाता है तो दूसरा लग जाता है। जब दूसरा फ्यूज़ हो जाता है तो तीसरा लग जाता है। रोशनी एक ही होती है।[119]

कुछ समय पहले मैं अपने गांव सैयद कसरां गया। वहां कुछ कट्टर अकाली रहते थे। मैंने एक सत्संग किया जिस में गुरबाणी का यह शब्द लिया गया :

जो दीसै तिस स्यों मोह।।
इव क्यूं मिलिए प्रभु अविनासी तोह।।

सारा समय उन की नज़र मुझ पर रही और वे हैरान हो रहे थे कि शब्द कहां से आ रहे हैं। शब्द स्पष्ट होते हैं परंतु हम कभी उन के सही अर्थ समझने की कोशिश नहीं करते। क्या आप ने कभी उन के असली अर्थ जानने का कष्ट किया है? हम बिना अर्थ समझे तोते की तरह रटते चले जाते हैं। एक दिन एक ईसाई भाई मुझे मिले और कहने लगे, "ईसा दुनिया की रोशनी है।" मैंने उस से पूछा, "क्या आप ने कभी ध्यानपूर्वक पढ़ा है? वहां लिखा है, "मैं दुनिया की रोशनी हूँ जब तक मैं दुनिया में हूँ।"[120]

भगवान कृष्ण कइयों को दर्शन देते थे। जब मैं लाहौर में था तो एक आदमी मेरे पास आया और मेरा प्रवचन सुन कर बोला कि भगवान कृष्ण को मैंने अंतर में देखा है। मैंने उस से कहा कि अब जब तुम भगवान कृष्ण से मिलो तो उन से पूछना कि मैं आगे क्या करूं? भगवान कृष्ण सुरत शब्द योग के माहिर थे। उन का काम अलग था लेकिन हम उन की कद्र करते हैं। बाद में उस आदमी ने मुझे बताया कि उसे अंतर में भगवान कृष्ण मिले थे और भगवान कृष्ण ने मुझे बताया कि अगर आप उस के (कृपाल सिंह के) पास जाओगे तो मैं तुम्हारे पास नहीं आऊंगा। वहां बाकायदा एक सरकार काम कर रही है। लोग समझते हैं कि यह ऐसे ही है जैसे वोटों से राष्ट्रपति चुन लिया या प्रधान मंत्री चुन लिया – वहां वोटों से नहीं चुना जाता। इस मार्ग पर

चतुराई भी आप की मदद नहीं कर सकती।[121]

एक बार जब मैं पाकिस्तान गया तो वहां एक सूफी फकीर से मिला जो अपने ढंग से अभ्यास करता था लेकिन जब वह अंतर गया तो उसे सत्गुरु स्वरूप अंतर नज़र आया। वह हैरान था कि यह सिख कौन है जिसे मैं बाहर कभी मिला भी नहीं हूं। उस ने मेरे बारे में पहले कभी सुना भी नहीं था परंतु जब वह लाहौर में मेरे पास आया तो उस ने कहा, "मैं आप का अंतर में दर्शन कर रहा हूँ।" मैं भी अपने सत्गुरु का शारीरिक तौर पर मिलने से 7 साल पहले (अंतर में) दर्शन करता था। प्रभु – पावर जिस मानव शरीर पर प्रकट हो कर काम कर रही होती है, उसी रूप में पवित्र हृदय वाले उन लोगों के अंतर, चाहे वे हिन्दु हों, मुसलमान हों, सिख हों, ईसाई हों या यहूदी, जिन्हें प्रभु को पाने की सच्ची तड़प होती है, प्रकट हो जाती है। इस में जाति – पाति से कोई फर्क नहीं पड़ता।[122]

भारत के एक गांव में मैं गया जहां एक व्यक्ति 40 साल से प्राण – योग करता था। मैं उस के पास गया। वह बहुत पतला और कमजोर था। इतना कमज़ोर था कि वह न तो ठीक से बात कर पाता था और न ही चल पाता था। 40 साल के प्राण योग की प्राप्ति बताते हुए वह बोला कि उसे कभी – कभी थोड़ी ज्योति नज़र आती है और कभी – कभी थोड़ा अंतर में नाद सुनाई देता है। मुकाबला कीजिए उस की मेहनत और प्राप्ति का! जब उसे कुदरती रास्ता बताया गया और खुद अनुभव करने को कहा गया तब उस की खुशी की हद न रही और उसे थोड़े समय में काफी अनुभव हुआ।[123]

मैं कई बार हरिद्वार गया हूँ। एक बार वहां बहुत से सत्संगी इकट्ठे हो गए और सत्संग के लिए प्रार्थना की। जब सत्संग शुरू हुआ तो मैंने कहा, "यह बड़ी पवित्र जगह है क्योंकि बड़े – बड़े ऋषि, मुनि और महात्मा यहां आए हैं। गुरु नानक देव जी आए, गुरु अमर दास जी यहां जब – तब 70 साल की उम्र तक आते रहे। इसलिए यह जगह

पवित्र है लेकिन हम ने इस की क्या हालत बना रखी है? स्टेशन से आते ही रास्ते में दो सिनेमाघर मिलते हैं।" एक आदमी उठ कर कहने लगा, "महाराज जी, अब तीन हैं।" अब आप बताओ क्या यह पवित्र स्थान का कसूर है? देखो वे क्यों बने? क्या देश के लोगों की भीड़ इकट्ठा करने के लिए बने हैं? तीर्थ स्थान वहां बने जहां किसी सत्स्वरूप हस्ती के चरण पड़े।[124]

एक बार कानपुर के दौरे के समय मैं एक ऐसे व्यक्ति से मिला जिस ने बताया कि सच्चाई की खोज में मैंने पैदल चल कर कई बार कन्याकुमारी का पानी गंगोत्री में और गंगोत्री का पानी कन्याकुमारी तक पहुंचाया है परंतु अभी तक मुझे वह चीज़ नहीं मिली जिस की मुझे तलाश थी। वह मिल भी कैसे सकती थी? कबीर साहब कहते हैं :

वस्तु कहीं ढूंढे कहीं केहि विधि आवे हाथ।
कहे कबीर तब पाइये जब भेदी लीजे साथ।।

हम हमेशा उसे गलत जगह ढूंढते हैं:

है घट में सूझत नहीं, लानत ऐसी जिंद।
तुलसी या संसार को, भया मोतियाबिंद।।

हमारे अंतर दृष्टि है परंतु उस पर पर्दा चढ़ा पड़ा है जिसे उतारने के लिए किसी योग्य डाक्टर या सत्गुरु की जरूरत है जो झिल्ली को उतार कर हमारी नज़र बहाल कर दे। प्रभु सब में है, सब संत यही कहते हैं।[125]

कई साल पहले मुझे कानपुर में एक योगी मिला जो कुंभक करके ज़मीन पर लेट कर छाती पर रोड रोलर खड़ा करवा कर प्रवचन देता था। अपनी गर्दन के चारों ओर एक मोटा रस्सा डलवा कर 50 आदमी एक साईड से खींचते थे परंतु वे उसे अपने स्थान से हिला नहीं पाते थे। वह 6 रात और 6 दिन लगातार ज़मीन में दबा रहने पर सही

सलामत रहता था। एक दिन मैंने उस से पूछा कि आप के मन की क्या हालत है? उसने बताया कि जब तक तो मैं कुंभक की अवस्था में रहता हूँ तब तक मन ठीक रहता है परंतु उस के बाद यह वापस उसी हालत में चला जाता है।

यह तुलना मैं क्यों कर रहा हूँ? क्योंकि बुद्धि के पहलवान लोग हर चीज़ की अपनी व्याख्या करते हैं। जिस समाधि की महापुरुष बात करते हैं वह जर – समाधि या कुंभक नहीं है। यह अंतर में नाम के साथ जुड़ना है, प्रकट प्रभु – सत्ता, ज्योति और नाद के साथ, जिस अमृत से सब रस फीके पड़ जाते हैं।[126]

इन्सान शक में है कि क्या अंतर में वाकई कुछ है? हम मंदिरों में ज्योति जगाते हैं परंतु क्या कभी हमें ख्याल आया कि ऐसी कोई चीज़ हमारे अंतर भी है। मैं एक बार एक महात्मा से कुछ सुनने के लिए मिला – मुझे सब धर्मों के नेताओं से मिलने का शौक है। उस को मेरे बारे में तथा मेरी शिक्षा के बारे में पता था।(वह बोला,) "शरीर के अंदर क्या है? गंदगी, मांस, खून और हड्डियां। आप कहते हैं कि अंतर सूरज है। क्या हम उसे बाहर नहीं देख सकते?" जिस ने अपने आप को नहीं जाना, वह अंतर में ज्योति और नाद को कैसे जान सकता है? याद रखो, जितना मन दोगे, उतनी ही आप की तरक्की होगी। परमार्थ की A, B, C उस समय शुरू होती है जब आप शरीर से ऊपर उठना सीख जाओ, अंतर्मुख हो जाओ। नामदान के समय जो पूंजी दी जाती है वह यह बताने के लिए होती है कि अंतर में कुछ है।

जब लग न देखूं अपनी नैनी।
तब लग न पतीजूं गुर की बैनी।।

कलियुग में इसीलिए ज्यादा दयामेहर मिल रही है। हमें इस से लाभ उठाना चाहिए।[127]

भारत में तीन साल पहले मुझे एक आदमी मिला जो कुंडलिनी

जागरण का अभ्यास कर रहा था और सिर से पैर तक उस का सारा शरीर जल रहा (गर्म हो गया) था क्योंकि कुंडलिनी – पावर जागृत हो गई थी। वह मेरे पास आया और कहने लगा, "मैं बहुत मुश्किल में हूँ। मैं इस का कुछ नहीं कर सकता। मैं सैंकड़ों लोगों से मिला हूँ लेकिन कोई मेरी मदद नहीं कर सका।" मैंने उसे बताया कि अब इस को छोड़ दो। आप का उद्देश्य यहां (रूह के स्थान) तक पहुंचना था। क्यों न सीधे रास्ते से चला जाए? मैंने उसे अभ्यास पर बिठाया, उसे नामदान मिल गया और पीड़ा जाती रही।[128]

1962 में नामदान लेने के बाद पहली बार एक आदमी ने मुझे लिखा। उस ने कई बातों पर एतराज किया और पत्र के अंत में कहा, "मैं आप को छोड़ रहा हूँ।" मैंने उत्तर दिया, "आप कुछ भी करो परंतु वह पावर आप को कभी नहीं छोड़ेगी।" गुरु का रस्सा लंबा होता है जिस से वह देखता है कि शिष्य कितने पानी में है लेकिन उसे कभी छोड़ता नहीं है।[129]

मुझे कभी – कभी लोगों के पत्र आते हैं जिनमें लिखा होता है, "अब अंतर का गुरु मेरा मार्गदर्शन करेगा।" मैं उन्हें बताता हूँ, "ठीक है, गुरु आप के अंतर बैठा है। यदि वह आप का मार्गदर्शन करता है तो मुझे बताना, इस को मुझ से लिख कर पुष्टि करवा लेना।" नतीजा यह होता है कि जो लोग उन का अनुसरण करते हैं, उन की तरक्की में रूकावट आ जाती है।[130]

यहां आने से पहले मैं एक पत्र का जवाब दे रहा था – एक भाई ने लिखा है कि वह प्रभु – प्राप्ति के उद्देश्य को पा गया है और उसे दूसरों का मार्गदर्शन करने का हुक्म मिला है। मैंने उसे कहा कि इस बात का मुझे पता नहीं परंतु अगर आप ऐसा करना चाहते हो तो आप की मर्जी। यह आप की अपनी जिम्मेवारी है। मैं आप की तरक्की की शुभकामना करता हूँ। गुरु का काम बड़ा नाज़ुक है। वह आप का इस जन्म का और इस के बाद का भी जिम्मेवार होता है। इस का

लैक्चरबाज़ी या बुद्धि की पहलवानी से कुछ लेना – देना नहीं है। ज्ञान ठीक है, दुनिया का ज्ञान, शारीरिक ज्ञान, बीमारियों का ज्ञान तथा और कई विषयों का ज्ञान है लेकिन सब से बड़ा ज्ञान अपने – आप को जानना है। अपने – आप के ज्ञान के बाद दुनिया के जिस ज्ञान की तरफ आप मुंह करेंगे, तुरंत कामयाब हो जाएंगे। तो उस बात पर विचार करो जो मैं कह रहा हूँ।[131]

स्वामी रामतीर्थ का पोता कुछ दिन पहले मुझे मिलने आया। उसके दादा (स्वामी रामतीर्थ) और इकबाल शायर अच्छे मित्र थे। इकबाल ने स्वामी रामतीर्थ को फारसी भाषा सिखाई और स्वामी जी ने इकबाल को संस्कृत सिखाई। जब स्वामी जी के पुत्र ने खान इंजीनियर का कोर्स पास किया तो इकबाल ने उस से कहा, "आप का पिता रूहानी मंडलों को खोदता मर गया और अब तुमने ज़मीन को खोदना शुरू कर दिया।" जिन को कुछ जागृति होती है वे कुछ इशारे दे जाते हैं। उस नौजवान को कहे गए शब्दों में भी ऐसा ही कुछ इशारा था। सारी दुनिया ज़मीन ही तो खोद रही है लेकिन असली खज़ाना हमारे अंदर छिपा पड़ा है। अगर आप को एक रात ऐसे मकान में सोने को मिल जाए जिस में खज़ाना दबा पड़ा हो तो क्या आप सोओगे? मेरे ख्याल में आप सो नहीं पाओगे बल्कि खज़ाना खोद निकालोगे। अब आप को कोई नहीं देख रहा तो क्यों नहीं अपने अंतर दबे (प्रभु – रूपी) खज़ाने को निकाल लेते?[132]

मुझे याद है कि एक बार जवाहर लाल नेहरू(भारत के पहले प्रधान मंत्री) इस साईस के बारे में मुझ से विचार – विमर्श कर रहे थे तो उन्होंने सवाल किया कि हम किस तरह इस का अनुभव कर सकते हैं? मैंने कहा, "बैठ कर।" वे बोले कि इस में कितना समय लगता है? मैंने कहा, "आधा घंटा।" चीज़ हमारे अंतर है लेकिन जिस ने पाना है वह मन – इंद्रियों के घाट पर बाहर भाग रहा है। रूह मन को ताकत देती है परंतु यह खुद मन के हाथों इधर – उधर भटक रही है। हमारी

गलती के कारण हमारी यह हालत बनी पड़ी है। इंद्रियां हमारे काबू में होनी चाहिएं थीं – क्योंकि ये काम नहीं कर सकतीं जब तक हमारी तवज्जो इन के साथ न हो।[133]

एक बार मुझे भारत के पहले प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू से बात करने का मौका मिला। उन्होंने मेरी बात को करीब पचास मिनट पूरे ध्यान से सुना। उस के बाद उन्होंने अपने भाषणों में कहना शुरू कर दिया कि केवल रूहानियत के आधार पर ही सब शांति और सद्भाव से रह सकते हैं। रूहानियत संसार के सब दुखों का इलाज है जिस से सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक नेता प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। हम सब एक ही पिता परमात्मा के पुजारी हैं। मनुष्य होने के कारण हम सब आपस में भाई – भाई हैं।[134]

जब उन्होंने मुझे आर्डर आफ सेंट जान नामक मैडल दिया तो मुझे उस समय के प्रधानमंत्री पं0 नेहरू जी के पास बुलाया गया। इस पर उन्होंने कहा कि इस से मेरे देश का गौरव बढ़ा है। जब आप तरक्की करोगे तो मेरी खुशी मुफ्त में मिलेगी। लोग पूछेंगे, "आप का गुरु कौन है?" आम दुनियावी पढ़े – लिखे से भी पूछ लिया जाता है कि ऐसी शिक्षा किस ने दी है? क्या ऐसा नहीं होता? मैं दोहराता हूँ कि मैं दिल से आपकी तरक्की चाहता हूँ, समय की कीमत समझ कर मानव तन का लाभ उठाते हुए तरक्की करो।[135]

आप देखेंगे कि मैंने यहां धर्मों के कोई चिन्ह – चक्र नहीं रखे, इस का यह अर्थ नहीं कि मैं समाजों का खंडन करता हूँ। धर्म जरूरी है, नहीं तो समाज में अधोगति आ जाएगी और कुछ नए समाज बनाने पड़ेंगे। अपने – अपने धर्म में रहो और जिस मकसद (प्रभु – प्राप्ति) के लिए धर्म बने हैं, उस को पाओ। वह न इंद्रियों से जाना जा सकता है और न ही मन, बुद्धि या प्राणों के योग से जाना जा सकता है। उस का अनुभव केवल आत्मा ही कर सकती है। पहले अपने आप को जानो, फिर प्रभु प्राप्ति की ओर कदम बढ़ाओ। यह महापुरुषों द्वारा बताया गया

रास्ता है। यह आत्मा को जानने की साईंस है।

अगर आप सब धर्मों के ग्रंथों का अध्ययन करें तो पता चलेगा कि सब महापुरुषों की बेसिक शिक्षा एक है। वे हमें बताते हैं कि सारी मनुष्य जाति एक है और प्रभु – प्राप्ति केवल मनुष्य जन्म में ही हो सकती है, और किसी योनि में नहीं। अपने धर्म में रहो लेकिन उस वक्त तक सांस न लो जब तक कि आप यह प्राप्ति न कर लो। वह प्रभु ही खुद अपने साथ मिलाता है।[136]

भारत से बाहर दौरे पर मैंने इन चीज़ों को सार रूप में पेश किया है लेकिन यहां पर (भारत में) हमारे पास अधिक समय है और यहां हम दिल से दिल की बात कर सकते हैं। मैं आप सब की तरक्की चाहता हूँ ताकि आप की (भारत से) वापसी पर लोगों को महसूस हो कि आप सत्गुरु के पास रह कर आए हैं, आप सब बदले हुए नज़र आएं। अगर आप में तबदीली न आई तो लोग कहेंगे कि क्या इस साईंस में कुछ है भी? आपको दी गई दवाई सब बीमारियों का इलाज है। जैसे मैंने आप को बताया कि केवल एक – तिहाई शिक्षा ही ज़बान द्वारा दी जाती है और उस पर अमल करना चाहिए। दो – तिहाई शिक्षा ग्रहणशीलता द्वारा, भाव – भक्ति द्वारा मिलती है। दूसरे लोग आप को आप के आचरण से जानेंगे और आप भी अपने आप का अनुमान लगा सकोगे।[137]

आप इस पर जितना अमल करोगे, उतनी ही तरक्की होगी। मिसाल के तौर पर, आप रोज़ाना आम तौर पर दो घंटे का समय देते हों और वह समय जरूरी है। आप यहां आ कर ज्यादा समय देते हैं तो ज्यादा तरक्की करेंगे। मैं जाते समय आप को ये मीठी गोलियां दे रहा हूँ और आप मेरी खुशी चाहते हैं तो एक गोली खा कर एक घंटा भजन करो। फिर मैं धन्यवादी हूँगा। एक तो आप की तरक्की देखकर मुझे खुशी होगी और दूसरे मुझे मेहनत कम करनी पड़ेगी।[138]

मुझे इस बार मानव स्तर पर हो रही कान्Ý¦ l के समय आप को

यहां पा कर बहुत खुशी है। मेरे ख्याल में महाराजा अशोक के सैंकड़ों साल बाद यह पहला सम्मेलन हो रहा है। धर्म के नाम पर बहुत से सम्मेलन हुए परंतु मानव लैवल पर यह एक क्रांति है जिस से आप सब को एक महान सच्चाई बताने के लिए गवाह होंगे।[139]

डाकू भी महात्मा बने हैं। मैं ऐसे डाकुओं के सरदारों से मिला हूँ। उन्होंने नाम ले लिया है और वे छः – छः घंटे भजन में दे रहे हैं। वे और चोरों को भी लाए हैं और उन को भी नामदान देने के लिए विनती की है। सब के लिए उम्मीद है। हर संत का भूतकाल होता है और हर पापी का भविष्य होता है।

याद रखो – बुरा न सुनो, बुरा न सोचो, बुरा न करो। अगर आप इन चीज़ों पर अमल करेंगे, आप दिन – प्रति – दिन तरक्की करेंगे। खास कर के वे लोग जिन्हें ग्रुप लीडर बनाया गया है, उन्हें उन लोगों के लिए जो इस रास्ते पर चलना सीख रहे हैं, अच्छी मिसाल बनना चाहिए। वे अभी सत्गुरु नहीं बन गए। हम रास्ते पर हैं। हमें भी गुरु बनाया जा सकता है – यह प्रभु का काम ❋❋❋ किस को सत्गुरु पावर सौंपता है। यह हमारा काम नहीं है। हमें भी गुरु बनाया जा सकता है परंतु हमें सत्गुरु के वचनों पर अमल करना होगा। जो अमल करते हैं वे चुने जा सकते हैं। मैं चाहता हूँ कि आप सब सच के दूत बनें।[140]

अध्याय 6

विश्व – यात्राएं

(1) पहली विश्व यात्रा – 1955

जब इन चीजों के बारे में मैंने पश्चिम में बताया तो वे पूछने लगे, "आप ने परमार्थ को बड़े सादे ढंग से और स्पष्ट शब्दों में पेश किया है, अभी तक यह समझने में इतनी मुश्किल क्यों बनी रही?" मैंने समझाया कि जो लोग सच्चाई को समझाने वाले थे उन को इस का अनुभव नहीं था और वे केवल बुद्धि के आधार पर ही इस की व्याख्या करते रहे। इस प्रकार वे इस की तरह – तरह से व्याख्या करते रहे जिस कारण इस का असल स्वरूप लुप्त हो गया। इस में कोई अचंभा नहीं कि अब इन तरह – तरह की थ्यूरियों को समझना मुश्किल हो गया है। जिन को इस का अनुभव नहीं था वे इधर – उधर की बातें बनाते रहे। एक साधारण बुद्धि वाला आदमी भी एक महापुरुष के वचनों और आम आदमी के वचनों में अंतर समझ सकता है। गुरबाणी में इसे एक दुनियावी आदमी के शब्द और पूर्ण विकास कर चुके रूहानी पुरुष के वचन कह कर समझाने का यत्न किया है। रूहानी पुरुष के गले से निकल रहे वचन सीधे प्रभु – पावर से आते हैं।[141]

जब मैं पश्चिम में गया तो कई लोगों को लाभ पहुंचा और मैंने उन्हें बताया कि इस सब का श्रेय मेरे हजूर को जाता है। मुआफ करना, बहुत से जिज्ञासु लोग इस चीज की प्राप्ति के लिए अपना सारा जीवन लगा देते हैं लेकिन ज्योति की एक झलक भी उन्हें नहीं मिलती। नामदान के समय यहां सभी को कुछ – न – कुछ पूंजी मिलती है, यह अलग बात है कि बाद में अभ्यास न करने के कारण बहुत से लोग इसे गंवा देते हैं। जो हर रोज़ अभ्यास करते हैं, 101 प्रतिशत तरक्की करते

हैं। कौन दिल पर हाथ रख कर ऐसा भरोसा दे सकता है? एक अष्ठावक्र ने उस जमाने में राजा जनक को यह पूंजी दी, आज भी लोग उस को याद करते हैं। ऐसे महापुरुष की कितनी कृपा है जो यह महान दौलत देता है। ज़माने के साथ – साथ शर्तें भी बदल गई हैं। इस ज़माने में अगर नामदान के समय यह तजरबा न दिया जाता तो शायद कोई भी इस रास्ते पर न आ पाता।[142]

एक बार एक अंग्रेज सत्संगी बीबी एक ईसा के उपासक से मिली और इस ने उस से पूछा, "क्या आपने कभी अंतर में ज्योति के दर्शन किए हैं?" उस आदमी ने उत्तर में कहा, "हां, माऊंट सिनाई में 19 साल के घोर तप के बाद एक दिन उसे धुंधली सी रोशनी नज़र आई थी।" उस बीबी ने कहा कि मैं तो हर रोज चमकीली ज्योति देखती हूँ।

नाम रूपी इस खज़ाने की हम क्या कीमत डाल सकते हैं? हमें तो इस का सत्कार करना तक नहीं आता। चीज़ मिल जाती है परंतु इस की कोई कीमत न समझते हुए हम कद्र नहीं करते क्योंकि यह आसानी से मिल जाती है। पश्चिमी लोग इस का ज्यादा सत्कार करते हैं। मेरी पहली पश्चिमी यात्रा केवल 4 – 5 महीने की थी लेकिन इस यात्रा से थोड़े से समय में ही वहां महान जागृति आई। वहां सच्चाई के सच्चे जिज्ञासु मिले और जब उनको यह चीज मिल जाती है तो भारत की अपेक्षा वे ज्यादा कद्र करते हैं। भारत में लोग इस को आसानी से मिल गई चीज़ समझते हैं। ईसा ने कहा, "ध्यान रखो कि आप के अंतर की रोशनी पर स्याही का पर्दा न फिर जाए।"[143]

नाम सब का जीवनाधार है। जिस को नाम मिल गया उस को सब कुछ मिल गया। मेरे एक अमेरिका के दौरे में साईसदानों के साथ मेरी एक मीटिंग हुई। एक आदमी ने संशयपूर्ण हो कर आध्यात्मिकता पर कई सवाल पूछे। थोड़ी बातचीत के बाद मैंने उस से पूछा कि क्या साईस नाम – मात्र चेतनता भी पैदा कर सकी है? उसने कहा, "नहीं।" मैंने फिर उसे व्याख्या सहित समझाया कि साईस के सारे ज्ञान का दायरा मादा (Matter) है जब कि संतों का सारा ज्ञान और शिक्षा चेतनता के

दायरे की है। उस मीटिंग में कई सत्संगी भी मौजूद थे, उन का विचार था कि ये साहब नामदान के स्थान पर नहीं पहुंचेंगे परंतु वह पहला आदमी था वहां पहुंचने वाला और उसे सब से ज्यादा तजरबा हुआ। तो यह चेतनता का मार्ग है, पूर्ण पुरुषों का रास्ता है और आप को उन की कृपा अथवा महानता से (यह मार्ग) मिलता है। उन्होंने इसे मुश्किल से आसान बना कर पेश किया है। अगर ऐसा न होता तो जिज्ञासु को इस की प्राप्ति के लिए पुराने जन्मों के संस्कार और सालों का अध्ययन जरूरी होता।[144]

मेरे अमेरिका पहुंचने से पहले वहां ऐसे लोग थे जो मेरे बारे में कुछ नहीं जानते थे लेकिन अंतर में सत्गुरु के और बाबा सावन सिंह जी के स्वरूप के दर्शन कर रहे थे। जब शारीरिक तौर पर वे मुझ से मिले तब उन्होंने बताया कि वे महीनों पहले से मेरा अंतर में दर्शन कर रहे हैं, कुछ तो एक साल या इस से भी अधिक पहले से कर रहे हैं। भाइयो, यह सब उन (हजूर) का काम है, मेरा नहीं।[145]

जब मैं पश्चिम में गया तो मैंने इसी बात का प्रचार किया कि एकता पहले ही मौजूद है लेकिन हम इसे भूल गए हैं। मेरे सारे प्रवचन मुफ्त होते थे। वहां आम तौर पर प्रवचन मुफ्त नहीं होते, प्रवचन सुनने के लिए लोगों को कुछ देना पड़ता है। यह धन या तो प्रवचन के समय इकट्ठा किया जाता है या पहले ही टिकटों द्वारा उगराही कर ली जाती है। जब मैंने दान की टोकरियां हटवा दीं तो किसी ने कहा कि क्या आप को अपने लिए कोई धन नहीं चाहिए, तो मैंने कहा, "नहीं।" अमेरिका में पहले प्रवचन के समय ही एक आदमी ने 5,000 डालर देने चाहे। जब मैंने कारण पूछा तो वह बोला कि आप ने बड़ा सुंदर प्रवचन किया है, मैं इस काम की तरक्की के लिए देना चाहता हूँ। मैंने उसे बताया कि यह प्रभु की दात है और जैसे प्रभु की बाकी दातें मुफ्त मिलती हैं, यह भी मुफ्त दी जाती है। क्या महापुरुषों के वचनों के कोई अधिकार सुरक्षित होते हैं? जब लोगों ने देखा कि मेरे सारे प्रवचन मुफ्त दिए गए हैं, उन्हें यह समझ न आई कि इस का क्या भेद है। मैंने

बताया कि यह मानव शरीर प्रभु का मंदिर है, इस बात को हम भूल गए हैं जिस को मैं ताज़ा करने आया हूँ। इसलिए सब को कुदरत की ओर लौटना चाहिए और अपने वास्तविक स्वरूप को जानना चाहिए।[146]

जब मैं अमेरिका के दौरे पर था तो मैंने वहां मुफ्त प्रवचन दिए। एक दिन जब मैं 'प्रभु और इन्सान' पर प्रवचन दे रहा था तो एक रूसी भाई खड़ा हो कर कहने लगा कि मैं आप को 5000 डालर देता हूँ। मैंने उसे कहा कि मैं पैसे इकट्ठे करने नहीं आया। अपने हजूर के चरणों में बैठ कर जो कुछ मैंने पाया है, वह प्रभु की मुफ्त दात है और इसलिए मुफ्त दी जाती है। इस पर पहले-पहल लोगों को हैरानी हुई लेकिन बाद में वे इस पर बहुत प्रसन्न हुए। इस नए असूल से सारी दुनिया में महापुरुषों की प्रशंसा होने लगी। मुझे अमेरिका, यूरोप, सुदूर-पूर्व, आस्ट्रेलिया, मध्य-पूर्व, अफ्रीका आदि से निमंत्रण आ रहे हैं और वे कहते हैं कि हमने प्रभु की दात के बारे में सुना है जो सब को मिलती है। भाइयो, देने वाला मैं कौन होता हूँ? देने वाला अपनी कृपा से और आज तक आए सब महापुरुषों की कृपा से जिन को हम, मुआफ करना, पूरा सम्मान नहीं देते, बांट रहा है।[147]

एक बार जब मैं अमेरिका के दौरे पर था, एक बीबी मुझे मिली। वह ईसा से मिला करती थी और बातें करती थी। वह वहां मेरे सब प्रवचन सुन रही थी और कुछ लोगों का विचार था कि नाम दान के समय वह जरूर आएगी, लेकिन वह नहीं आई। तो लोगों ने उस से पूछा कि नाम दान के दिन आप क्यों नहीं आई? "मैं ईसा से बातचीत करती हूँ।" मैंने उस से पूछा, "क्या तुम ईसा से मिलती हो?" उसने कहा, "हां।" "और वह आप से बातें करता है?" उस ने कहा, "हां।" "ठीक है, अब जब वह मिले तो पूछना कि मैं आगे क्या करूं?" इस के बाद कई दिन ईसा उसे नहीं मिला। जब वह मिला तो इस ने पूछा, "मैं आगे क्या करूं।" उस ने सत्गुरु (मुझ) से नाम दान लेने को कहा। अगले दिन मुझे लाऊसविल्ले से वाशिंगटन जाना था। शाम को 6-7 बजे उस का फोन आया, "मैं नाम दान लेना चाहती

हूँ।" "क्यों?" "ईसा ने मुझे आप के पास भेजा है।" मैं कहता हूँ कि गुरु – पावर, प्रभु – पावर और ईसा – पावर एक ही हैं। वह खुद प्रकट होती रहती है और कभी मरती नहीं। एक बार जिस रूह का हाथ पकड़ लिया, वह दुनिया के अंत तक उसे नहीं छोड़ती।[148]

अमेरिका की अपनी पहली यात्रा के समय जब कुछ दिन के लिए मैं लास एंजिलिस में था तो एक अंधा डाक्टर भजन अभ्यास में बैठने के लिए आया। अंधों को भी अंतर रोशनी आती है, केवल अंतर्मुख होने का सवाल है। बैठक के बाद उसने माना कि अंतर में प्रकाश है। वह प्रकाश सब मनुष्यों के अंतर मौजूद है। ईसा का यही अभिप्राय था जब उस ने कहा, "ध्यान रखो कि जो रोशनी आप के अंतर में है उस पर स्याही का पर्दा न फिर जाए।"[149]

मुझे कैलीफोर्निया में एक आदमी मिला जो कहने लगा कि मेरा गुरु कहता है कि आप के अंतर की आंख खोल दी गई है। जब मैंने पूछा कि क्या उसे अंतर में कुछ नज़र आता है, तो उस ने कहा, "नहीं।" मैंने उस से पूछा कि आपने कैसे भरोसा किया? उस ने कहा कि मेरे गुरु ने ऐसा कहा तो मैंने सोचा कि ऐसा हो गया होगा। मैंने उसे कहा कि अंधाधुंध विश्वास न करो बल्कि अपनी आंखों से देखो।

एक और आदमी आया जिस ने कहा कि मेरा गुरु कहता है कि आप को मर कर मुक्ति मिल जाएगी। मैंने उस से पूछा, "इस बात का क्या सबूत है?" लोग सच्चाई पाना चाहते हैं। यह मैंने सारी दुनिया में देखा है। लोग सच्चाई की तलाश में किताबों, रीति – रिवाजों तथा दूसरे साधनों में सालों भटकते रहते हैं परंतु उन्हें इस का प्रैक्टीकल अनुभव नहीं मिलता।

मैं सान Ýांसिसिको में एक बड़े विद्वान से मिला। वह इंटरनैशनल धार्मिक सम्मेलनों का जो जापान, Ýांस, जर्मनी आदि देशों में हुए हैं, कर्त्ता – धर्त्ता है। उस ने मेरी एक टाक सुनी जिस में मैंने इस विषय को लिया था। अंत में उस ने बताया कि आप की बात ठीक है लेकिन मैंने अभी तक अंतर में प्रकाश नहीं देखा है। इस में शक नहीं कि लोग इसे

पाना चाहते हैं और उनमें से कई समझदार, खुल – दिले और बात को समझने की इच्छा रखने वाले हैं।[150]

पहली विश्व यात्रा से भारत वापस आते हुए पहले से बने प्रोग्राम के अलावा मेरा विचार जर्मनी जाने का बन गया। मेरे साथ के एक भाई ने कहा, "वे लोग आप को कैसे पहचानेंगे क्योंकि उन्होंने आप को पहले कभी नहीं देखा है?" दूसरे देशों में कम से कम प्रोग्राम तो पहले से बना होता था। अगर वे आप को आप के कपड़ों से पहचानना चाहें तो आप उन्हें कैसे जानेंगे? मैंने उस से कहा, "वह जो मुझे भेज रहा है, इंतजाम भी खुद की करा लेगा। मुझे चिंता करने की जरूरत नहीं है।" जब जहाज़ जर्मनी में उतरा तो वहां कुछ लोग हाथों में गुलाब के फूल लिए मिले। तब मैंने उसे कहा, "ये मुझे रिसीव करने आए हैं?" वे हमारी तरफ भागते हुए आए और कार में रखने के लिए सामान मांगा। तो वह अपना काम खुद करता है। कमीशन प्रभु की ओर से आता है और वह प्रभु उस द्वारा चुने हुए इन्सानों के माध्यम से काम करता है।[151]

1955 में जब मैं अमेरिका से बर्लिन आ रहा था तो वहां जर्मन भाषा न जानने के कारण मैंने एक दो – भाषिया (ट्रांसलेटर) रख लिया। कुछ समय बाद सुनने वाले भाई उस को कहने लगे, "आप बंद करो, आप सही अनुवाद नहीं कर पा रहे हो। हम आप से ज्यादा उन की आंखों से समझ रहे हैं।" रिसैप्टिव होने से शब्दों के मुकाबले ज्यादा जीवन – दान मिलता है। अगर आप 'ठंडा' या 'गर्म' शब्द को न भी जानते हों तो भी आप को ठंडक या गर्मी तो महसूस होगी। यह कमाल की बात है।[152]

(2) दूसरी विश्व यात्रा – –1963 – 64

भारत से विदेश के लिए रवाना होने से पहले मैंने प्रवचन के समय संगत से पूछा, "क्या आप नहीं चाहते कि आप के पश्चिमी भाई रूहानियत का लाभ उठाएं? अगर ऐसा विचार है तो अपने हाथ खड़े करो। आप इस चीज़ का इतने समय से लाभ उठा रहे हैं और आप के

पश्चिमी भाई इसे चाहते हैं। क्या आप मुझे कुछ दिन के लिए स्पेयर नहीं करोगे?" और वे 'न' नहीं कह सके। मेरे ऐसा कहते ही वे सिसकियां भरने लगे और ऊंचा – ऊंचा रोने लगे। तब मैंने कहा, "जो भाई मेरे जाने के हक में हैं, वे हाथ खड़े करें।" इस पर सब को हाथ खड़े करने पड़ गए।[153]

अब मैं विश्व धर्म संघ के अध्यक्ष के तौर पर पश्चिम में कई धर्मों और देशों के ज्यादा से ज्यादा प्रतिनिधियों को 1964 के अंत में हो रही कांफ्रेंस में शामिल होने का निमंत्रण देने जा रहा हूँ ताकि सभी इकट्ठे मिल बैठ कर एक दूसरे को समझें। इस का मतलब सब धर्मों का एक बनाना नहीं है बल्कि यह है कि सभी लोग अपने – अपने धर्मों में रहते हुए एक दूसरे को समझें। अफसोस है कि अब हम एक दूसरे के धर्म को न समझते हुए यह सोचते हैं कि केवल हम ही सही रास्ते पर हैं जब कि दूसरे महापुरुषों ने भी अपने ज़माने की भाषा में वही बात कही है। हम सब का सत्कार करते हैं क्योंकि सच्चाई एक है। जो इस के बारे में जानते हैं, वे समय – समय पर सच्चाई का ब्यान करते रहते हैं। मनुष्य गलती का पुतला होने के कारण इसे भूलता रहता है, फिर कोई हस्ती प्रभु के बच्चों को प्रभु के रास्ते पर डालने के लिए आ जाती है।

इस काम के लिए बैरनवान ब्लामबर्ग जो कि विश्व धर्म संघ के सह – अध्यक्ष हैं, भी मेरे साथ रहे। हम यूरोप के लगभग सभी देशों में गए। हम धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक प्रधानों से मिले और उन के सामने ये बातें पेश कीं। अब एक यही आशा बची है – इन प्रधानों की बात लोग मानते हैं। अगर इन का देखने का दृष्टिकोण बदल जाए तो आप देखेंगे कि दुनिया में शांति की आशा की जा सकती है।

सारे यूरोप से हमें इस के बारे में सही प्रतिक्रिया मिली। मैं वैटीकन शहर के लोगों से भी मिला और उन से लंबी बात हुई। मुझे पोप पाल से मिलने का मौका भी मिला। अब वे गैर – ईसाई धर्मों की एक कान्Ýस बुलाने के बारे में विचार कर रहे हैं ताकि सब मिल बैठ कर

एक – दूसरे को समझ सकें।

मैं आयरलैंड के प्रधान मंत्री डी वलेरा तथा दूसरे कई देशों के प्रधान मंत्रियों, मेयरों और सामाजिक नेताओं से मिला। यहां अमेरिका में मुझे श्री मैक कार्मिक, स्पीकर, प्रतिनिधि सभा से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ और मैंने उन्हें बताया, "देखिए, प्रभु के बहुत से बच्चे आप की सेवा में देख – रेख के लिए दिए गए हैं। आप सब को प्रभु ने अपनी कृपा से राजनेता बनाया है। अगर एक राजनेता उस को मिले प्रभु के बच्चों की ठीक से संभाल नहीं कर पा रहा है तो दूसरे राजनेताओं को उस की मदद करनी चाहिए। अगर उस को किसी प्रकार की सहायता की जरूरत हो तो पूरी की जानी चाहिए। इस प्रकार युद्ध टल सकते हैं, लाखों लोग इस प्रकार मरने से बच जाएंगे जैसा कि पीछे दो विश्व युद्धों में हो चुका है।" यह बात उन्हें बहुत जची और इस का सही असर हुआ। एक – दूसरे को (प्रेमपूर्वक) समझना ही विश्व धर्म संघ का उद्देश्य है। जब हमें समझ आएगी तो पता चलेगा कि हम में मानवता के तौर पर, आत्मिक तौर पर तथा एक प्रभु के पुजारी होने के कारण एकता पहले ही मौजूद है।[154]

रोम में मैं रोमन कैथोलिक चर्च के बिशप से मिला और चर्च के दूसरे धर्मों के साथ संबंध के बारे में बात की। जब हम ने बैठ कर दिल से दिल की बात की तो वे कहने लगे कि सच में जो चीज़ हम आपस में मिल कर समझ सकते हैं, वह दूसरे किसी ढंग से नहीं समझी जा सकती। साईस के तौर पर भी अगर दो चार्ज की हुई चीज़ें आमने – सामने होंगी तो उन में आग भड़केगी। आपस में मिल कर बैठने से ऐसी संभावना नहीं रहती। धर्म, जाति या फिरके चाहे अलग – अलग हों लेकिन हम एक प्रभु के बच्चे होने के कारण आपस में भाई – बहन हैं, क्या ऐसा नहीं है?

तो एक प्रभु के नाम पर मिल बैठना ही दुनिया में भिन्न – भेद मिटाने का रास्ता है। मनुष्य जीवन का मिलना प्रभु की महान कृपा से होता है क्योंकि इस योनि में ही प्रभु की प्राप्ति हो सकती है। यदि बाहरी

चिन्ह – चक्रों का ख्याल किए बगैर हम सब आपस में मिल बैठें तो ख्याल अंतर जाएगा और अंतर का आकाश नज़र पड़ेगा। चारदीवारी की जकड़ में रहते हम इसे किस प्रकार पा सकते हैं? मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण समाजों में रहेगा, उन्हें चाहे हम धर्म कहें, वे पहले ही अनगिनत हैं।

महापुरुष भी किसी न किसी धर्म या समाज में जरूर पैदा होते हैं लेकिन वे इन सब से ऊपर उठ कर सब को आत्मा के लैवल से देखते हैं।[155]

रोम में वैटिकन में मैंने गैर – ईसाई धर्मों के इंचार्ज पादरी से 2 – 3 घंटे लंबी बात की। जब हम इस बारे में सारी बात कर चुके तो उस ने कहा, "जो आप कहते हैं, ठीक है।"

अब जब आप को ईसा की सही शिक्षा पता चलेगी तो आप सारे ढांचे क्यों नहीं बदलेंगे? मैंने पोप जान की मिसाल उन्हें दी। जब उस ने शुरू किया तब उस ने अपनी कमेटी से भी सलाह नहीं की। उस ने हुक्म दिया, "ऐसा करो।" अगर (पोप) जान ऐसा हुक्म दे सकते हैं तो यहां यह क्यों नहीं हो सकता? उस ने कहा, "अगर अब हम ऐसा करें तो आधे पादरी बगावत कर देंगे। हम उन्हें समय पर ठीक कर लेंगे।"

तो सच सच है। कोई भी जागृत पुरुष इस का अनुभव करा सकता है। यह दूसरी बात है कि कुछ लोग ईर्ष्यालु ढंग से सोचते हैं कि सच केवल हमें ही मिला है। शायद ईसाई भी कहते हों कि किसी दूसरे धर्म के मानने वालों को सच्चाई मालूम नहीं। सच्चाई सच्चाई है।[156]

विदेशी दौरे के समय मुझे पश्चिम के कई राजनैतिक लीडरों से मीटिंग करने का मौका मिला और मैंने उन्हें याद दिलाया कि उन्हें देखभाल के लिए प्रभु के बच्चे दिए गए हैं जिन की बेहतरीन ढंग से देखभाल करना उन का फर्ज़ बनता है। जियो और दूसरों को जीने दो – भारत का सब से बड़ा सिद्धांत है। अगर किसी देश के नेतागण प्रभु द्वारा देखभाल के लिए दिए उन के बच्चों की पूर्ण देखभाल करने में असमर्थ रहते हैं तो दूसरे देशों को उस की मदद करनी चाहिए। लाखों

लोगों का खून बहाने से क्या लाभ? कई नेताओं ने इस बात को समझ कर मान लिया और दो स्थानों पर युद्ध टल गया। मैं ये नुकते केवल इसलिए उठा रहा हूँ क्योंकि दुनिया की सारी मुश्किलों का हल रूहानियत है – केवल इसी आधार से प्रभु के नाम पर सब मनुष्य इकट्ठे हो सकते हैं।[157]

अच्छे काम को तुरंत कर डालो लेकिन बुरे काम को टालते जाओ। इसे जीवन का असूल बना लो। इसे किसी बड़ी शक्ति (प्रभु) के लिए छोड़ दो। इस दौरे में मैं टाइरोल के लोगों से मिला। ईरान के कुछ लोगों ने टाइरोल के क्षेत्र पर कब्जा कर रखा है। वे विद्रोह करते हैं और उन के पास बम तथा हथियार हैं। मैंने गवर्नर से मिल कर एक घंटे तक बातचीत की। वह कहने लगा, "मुझे समझ नहीं आता कि मैं क्या करूं।" मैंने उसे कहा, "इंतजार करो, रास्ता निकल आएगा।" और फिर क्या हुआ? हमारा अब तक आपसी पत्र – व्यवहार चलता रहता है। युद्ध नहीं हुआ।[158]

लंदन में मैं एक ऐसे आदमी से मिला जो रूहों को बुलाने की विद्या का माहिर था। वह रूहों को बुलाता था जो आकर बोलती थीं। उस की फीस पांच पौंड थी। मैंने कहा, "ठीक है, हम देंगे।" मैं वहां गया। मेरे साथ 3 – 4 लोग और थे। उस ने हमें एक कमरे में बंद कर लिया और खुद भी वहीं बैठ गया। अंदर पूर्ण अंधेरा था। ऐसे ही 10 मिनट, 15 मिनट, आधा घंटा, पूरा घंटा बीत गया। कुछ नहीं आया। अपने समय का वह इस विद्या का माना हुआ माहिर था। तब मैंने फीस देनी चाही। उस ने कहा, "मैं आपसे पैसे नहीं लूंगा।" "क्यों, बताइये?" "आज वातावरण ठीक नहीं था।"

तो ऊंची रूहों को नहीं बुलाया जा सकता। निचली या दरमियानी रूहों से संपर्क हो सकता है। वे भी चोला छोड़ने के समय जितनी भी समझ रखती हैं, चोला छोड़ने पर उस से अधिक बुद्धिमान नहीं बन सकतीं। अगर मैं या आप इस कमरे से बाहर जाते हैं तो क्या आप समझते हैं कि कमरा छोड़ने से हम देवता बन जाएंगे? आप वही बनोगे

जितनी कि आप ने तरक्की पहले की है।

रूहों को बुलाने की विद्या में वे (रूहें) नुकसान करती हैं। उदाहरण के तौर पर, जो रूहें शराबियों की हैं, वे शराबियों के शरीर में प्रवेश करेंगी। क्रोध से भरपूर रूहें क्रोधित लोगों में प्रवेश करेंगी। इन्हें ईसा ने 'बुरी रूहें' कहा है। यह प्रेत विद्या है। साधारण आदमी को भी समझ आने वाली बात है।[159]

तो हमारा काम रूहों को बुलाने की विद्या का नहीं है, वह अलग विद्या है। आप दूसरी विद्याओं से काम ले सकते हैं, परंतु हमारा उद्देश्य उच्चतम मंडल में पहुंच कर प्रभु को पाना है। वह तब ही हासिल हो सकता है जब हम अपने आप को मन – इंद्रियों के पंजे से छुड़ाएं तथा 'मरना सीखें ताकि सदा का जीवन पा जाएं।' अगर आप ऐसा करोगे तो आप ऊंचे मंडलों की रूहों से भी संपर्क कर सकोगे, उनसे आमने – सामने मिल सकोगे। मिसाल के तौर पर मैं अब यहां हूँ ; अगर भारत में होता तो आप संपर्क न कर पाते। जब मैं यहां हूँ तो हर कोई मुझे देख सकता है। इसी प्रकार अगर उन ऊंचे मंडलों में चढ़ोगे जहां वे ऊंची रूहें रह रही हैं तो आप उन्हें मिल सकते हैं। कई मंडल हैं – निचले, ऊंचे और पवित्र रूहानी मंडल।[160]

जब मैं पहली विश्व – यात्रा के समय लंदन में था तो मैंने एक प्रवचन में कहा कि प्रभु ईंट – पत्थरों से बने मंदिरों (आदि सब धार्मिक – स्थानों) में नहीं रहता तो एक ईसाई भाई उठ कर बोला, "आप ने यह कह कर हमारे सब गिरजाघरों पर एटम बम गिरा दिया है।" हम ने गिरजाघर, मस्जिदें और मंदिर अपने हाथों से बनाए हैं परंतु प्रभु ने यह मानव – तन अपने हाथों से बनाया है। इस सच्चे प्रभु के मंदिर का रहने वाला इन्सानी हाथों से बने मंदिरों में भटके – यह अफसोस की बात नहीं तो क्या है? हम ने मंदिर खुद इस शरीर के नमूने पर बना कर वहां रोशनी रखी। वह इस शरीर का नमूना है जिस में ज्योति दिन – रात जल रही है। कभी – कभी नमूनों को बचाने के लिए हज़ारों सच्चे मंदिरों (शरीरों) को कुरबान कर दिया जाता है। क्या

ऐसा नहीं होता? अगर किसी धर्म द्वारा किसी दूसरे की बिल्डिंग की निरादरी हो तो इस कारण हजारों मर जाते हैं।

सारे बाहरी पूजा – स्थान उनके लिए हैं जिन की (अंतरीय) आंख नहीं खुली। फिर भी हम दिल से उन की कद्र करते हैं। क्यों? क्योंकि वहां हम उस प्रभु की याद में बैठते हैं जिस के लिए वे बनाए गए हैं। जब बच्चा माता के पेट में होता है तो वहां कौन सी मशीनरी उस के आंख, कान, हाथ, पैर आदि बनाती है? यह कोई गुप्त शक्ति है जिस का इन्सान को पता नहीं। वह पावर उस (सच्चे) मंदिर (शरीर) में रहती है जिसे उस ने खुद बनाया है।[161]

हम सब प्रकाश – पुत्र हैं। मैं हैरानी में था कि मैं कैसे आप को संबोधित करूं क्योंकि मैं अपने में तुम को देखता हूँ और अपने को तुम्हारे अंदर देखता हूँ। मेरे विचार में आप को सब से सही तौर से 'अपने मित्र' संबोधित करना ठीक रहेगा। मैंने आप को दास नहीं बनाया बल्कि बराबर का दर्जा दिया है क्योंकि बराबर के लैवल का व्यक्ति ही दूसरे बराबर के व्यक्ति को जान सकता है। किसी के अधीन लोग उस के असली स्टेटस का पता नहीं लगा सकते। आप सब मेरे दोस्त हैं और मुझे सब प्यारे हैं तथा मैं आप सब का सत्कार करता हूँ। 1955 में जब से मैं आप से जिस्मानी संपर्क में आया हूँ, चाहे मैं शारीरिक तौर पर भारत में था परंतु आप की मधुर याद हमेशा बनी रहती थी। दिन में मुझे वहां बहुत काम करना पड़ता है लेकिन रात को आपके पत्रों के उत्तर लिखवाता हूँ। दिन में मैं वहां होता हूँ लेकिन रात में आप के साथ होता हूँ। यह दुनिया का दूसरा रूप है, जब वहां रात होती है तब यहां दिन होता है। मैं हमेशा काम में मशरूफ रहता हूँ, यहां या वहां।

आप के प्रेम – विभोर भावों की, जो समय – समय पर आप मुझे भेजते रहते हैं, मैं कद्र करता हूँ। मैं यहां रहना चाहता हूँ परंतु नौकरी के कारण मैं वहां बंधा हुआ हूँ। आप को पता है कि पत्थर की दीवारें या लोहे का पिंजरा किसी का घर नहीं बन सकते। इतना विश्वास मैं आप को दिलाता हूँ कि चाहे शारीरिक तौर पर मैं वहां बंधा हुआ था

परंतु मन और आत्मा कर के मैं सदा आपके साथ था। इस के बाद मेरे अंतर वाला प्रभु आपके साथ रहेगा और हर काम में आप का मार्गदर्शन और मदद करेगा। हमारे हजूर की कृपा से यह चीज़ आप को दी जा रही है, दी जाती थी और आगे भी दी जाती रहेगी।

जब से मैं यहां आया हूँ घर की तरह महसूस कर रहा हूँ, मुझे कभी घर की याद नहीं आई और मैं आप द्वारा सब तरफ से मिले प्रेम के कारण भारत को भूल गया हूँ। वहां मैं अपने दोस्तों के बीच होता हूँ। चाहे मैं दिन में यहां होता हूँ लेकिन रात को मुझे भारत के भाइयों को अटैंड करना पड़ता है, ठीक उसी तरह जैसे मैं भारत में रहते हुए आप को अटैंड करता हूँ। आप सब मुझे प्यारे हैं। चाहे आप यहां हों या भारत में, इस से मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं आप को इन्सान के तौर पर या शरीर में बसी आत्मा के तौर पर देखता हूँ। आप प्रकाश – पुत्र हैं।

यह मौजूदा दौरा हजूर महाराज के हुक्म की पालना के अधीन था। उन्होंने मुझे आदेश दिया था कि सब धर्मों के लोगों के लिए एक कामन ग्राऊंड बनाओ। वे इन्सान के तौर पर समान हैं, शरीर में आई आत्माएं हैं। उन का हुक्म था कि पूर्व – पश्चिम के सभी इन्सानों के लिए एक सांझी स्टेज बनाई जाए। तो यह उन की कृपा है कि नए तरीके से ऋषियों और महापुरुषों की वही पुरानी तालीम पेश की जा रही है। वेदों में – अर्थववेद और ऋग्वेद में कहा गया है कि हज़ारों की संख्या में मिल कर प्रभु का गुणानुवाद करो।[162]

टिप्पणी: – महाराज जी को भारत से एक पत्र मिला – "अमेरिकनों के प्रेम में खो कर हमें भूल मत जाना।"

मैंने भारत से चलने से केवल दो दिन पहले ही उन्हें यात्रा के बारे में बताया, दो दिन पहले शाम को उन्हें बताया। हवाई जहाजों या रेलों में वे लोग भागे चले आए। मेरे अचानक चलने के बावजूद भी वहां भीड़ को काबू करना मुश्किल हो गया। दिल्ली में ज्यादा भीड़ थी। बंबई में भी थी। जहाजों में हम कैदी की तरह होते हैं, वहां आप किसी से बात नहीं सकते, मिल नहीं सकते। उनकी सब हिदायतें माननी पड़ती

हैं। लोगों के पास बंबई में सिवाय इस के कोई चारा नहीं है।

ऐसा उन्होंने ठीक ही लिखा था लेकिन मैं कहीं खोया नहीं। मैं प्रभु द्वारा आप को और उन को मिले प्रेम की कद्र करता हूँ।[163]

मेरी पहली विश्व यात्रा के समय पूर्व और पश्चिम की तरफ से एक मीटिंग बुलाई गई। अमेरिका के दौरे पर आए दूसरे लोग भी इस मीटिंग में शामिल हुए। मैं भी उन में एक था। हर एक ने बताया कि वह कहां से आया है। जब मेरी बारी आई तो मैंने उन्हें बताया, "कहा जाता है कि पूर्व पूर्व है और पश्चिम पश्चिम है, और दोनों कभी मिल नहीं सकते, लेकिन असल में कोई पूर्व पश्चिम नहीं है। सारी सृष्टि प्रभु का घर है, सारे देश इस के कमरे हैं। चीज़ों के नाम हम ने अपनी सहूलत के लिए रखे हैं। बात तो यह है। अगर आप को इस असलियत का ज्ञान हो गया तो नतीजा क्या होगा? आप का देखने का नज़रिया बदल जाएगा, आप देखोगे कि हम सब प्रभु के पुत्र हैं। प्रभु का हमारा सच्चा पिता होने और आपस में भाई – भाई का रिश्ता होने के सिद्धांत में परिपक्वता महसूस होगी। तो रूहानी क्रांति से मेरा यह अभिप्राय है।[164]

ध्यान रखिए यह कोई नया धर्म नहीं है, अभी तक कोई अलग चिन्ह चक्र नहीं है। जब तक मेरा जीवन है, मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। अगर मेरे बाद लोग ऐसा करेंगे तो उन की किस्मत रही। लेकिन याद रखो कि यह कोई नया धर्म नहीं है। यह केवल सांझी स्टेज है जिसे रूहानी सत्संग कहा जाता है और जहां सभी धर्मों के लोग सैंकड़ों – हजारों की संख्या में भारत में मिल बैठते हैं। उन्हें केवल नैतिक जीवन की, पवित्रता की शिक्षा दी जाती है और प्रभु को पाने का संपर्क दिया जाता है।

जब हिन्दु मुझे बुलाते हैं तो मैं वहां जाता हूँ और वहां जा कर उन के ही धर्म – ग्रंथों से पेश करता हूँ कि उन के धर्म ग्रंथ क्या कहते हैं। मैं सिख गुरद्वारों में मैं जाता हूँ ; मैं वैनकोवर में गुरद्वारे में गया और बताया कि आप के धर्म ग्रंथ में यह लिखा है। आप समझे, मैं क्या कहना चाहता हूँ? कि चाहे सब धर्मों के बाहरी चिन्ह चक्र अलग – अलग

हैं लेकिन अंतरीय सच्चाई एक है। मैं सब प्रकार के गिरजों में जाता हूँ, मैं Orthodox ईसाईयों से मिला हूँ, Coptics, Byzantines, Protestants, रोमन कैथोलिक, यहूदियों आदि सब से मिला हूँ। सब की मूलभूत शिक्षा एक ही है। मैंने यहूदी – गिरजों में भी प्रवचन दिया है। आप जानते हैं कि उन्होंने इसे कितना पसंद किया? मूसा को ये हुक्म ज्योति और गर्ज के रूप में मिले। उसने इस का हवाला दिया है। अफसोस है कि हम इस सच्चाई को भूल गए हैं। अनुभवी पुरुषों की कमी के कारण हम समझते हैं कि हम अधिक जानते हैं। सच्चाई एक है। आप शिक्षा की डिग्री प्राप्त करने के लिए किसी स्कूल में प्रवेश लेते हैं। आप को शिक्षा प्राप्त होनी चाहिए। जब आप किसी स्कूल या कालेज से निकलते हैं तो आप के पास डिग्री होती है। क्या अपनी डिग्री पर लिखते हैं कि आप ने ईसाई कालेज से MA की है या हिन्दु कालेज से? आप ऐसा कभी नहीं करते। इसी तरह यह रूहानियत की डिग्री है, जिस का ज़िक्र पहले ही हमारे धर्म – ग्रंथों में है परंतु हम इसे भूल गए हैं। हमें किसी ऐसी हस्ती की जरूरत है जिसे रास्ते का पता हो, बस। वह हमें भी इस का अनुभव दे सकता है।[165]

मैं कहता हूँ कि सभी धर्मों के नेतागणों को उन के काम से हटा देना चाहिए, उन की तनखाह बंद कर देनी चाहिए। तब पता चलेगा कि धर्म का काम करने वाले कितने रहते हैं। उन के पास ढेर सा धन जीने, आनंद मनाने, पीने और खाने के लिए जमा है। वे एक घंटे के करीब मात्र चिल्लाते (भाषण देते) हैं। यह क्या है? मैं प्रार्थना करने को छोड़ने के लिए नहीं कहता। मैं केवल उन द्वारा अपनाए रवैये के बारे में बता रहा हूँ। यह व्यापार की तरह है। ईसा ने जब नकदी बदलने वाले लोगों से छुटकारा पाया तो कहा, "तुम यहां से निकल जाओ। तुम ने मेरे पिता के घर को व्यापारखाना बना दिया है।"

मैंने अपने राष्ट्रपति के समारोह (राष्ट्रपति कैनेडी की शव यात्रा) को टैलीविज़न पर देखा। पादरी सारे रास्ते शराब पीता और पिलाता रहा। क्या यह प्रभु के प्रेम का नशा है? सिस्टम का सम्मान करते हुए मुझे

कहना पड़ता है कि उस (रूहानी) नशे से हट कर लोग यह नशा करने लगे हैं। इस लिए महापुरुष जब आते हैं तो देखने का नज़रिया बदलते हैं। वे लोगों पर जबरदस्ती लागू नहीं करते बल्कि वे उन्हें जागृत करते हैं। क्या आप को मेरी बात में कुछ सच्चाई नज़र आती है?[166]

अमेरिका के यूनिटी चर्च में मैंने प्रवचन किया कि आपने यूनिटी चर्च तो अभी बनाया है लेकिन यूनिटी (एकता) तो सृष्टि के आरंभ से ही मौजूद है। मनुष्य स्तर पर हम सब एक हैं, सब की दो आंखें, नाक, दो बाजू, दो पैर आदि हैं। आत्मा करके हम चेतनता की अंश हैं और चाहे हम उसे किसी नाम से याद करें, हमारा प्रभु एक है। वह न हिन्दु है, न ईसाई, न मुसलमान आदि। इस स्थान पर जहां आप बैठे हैं, कोई 'ism' (मत) नहीं है। हिन्दु हिन्दु रहे, ईसाई ईसाई रहे, मुसलमान मुसलमान रहे आदि। आप जिस भी धर्म में हैं उस में बने रहें और उस के बाहरी चिन्ह चक्र बनाएं रखें परंतु सब से जरूरी काम अपने आप को जानना और प्रभु को पाना जरूर कर लेना चाहिए।[167]

एक दिन मैं यूनिटी चर्च में गया और पादरी से पूछा, "आप की शिक्षाएं क्या हैं।" उस ने मुझे एक किताबचा दिया। मैंने उसे पढ़ा। उस में लिखा था, "क्राईस्ट जीसस से पहले था।" क्राईस्ट क्या है? 1955 में जब मैं यहां था तो एक आदमी मेरे पास आया और सवाल किया, "ईसा कब वापस आ रहा है?" मैंने उस से कहा, " क्या उस ने कभी आप को छोड़ा भी है? बात यह है। उस ने तो कहा है, 'मैं तुम्हें कभी नहीं छोडूंगा, दुनिया के आखिर तक भी।' अगर उस ने आप को छोड़ा ही नहीं तो वापस आने का सवाल ही कहां है?"[168]

अपनी पिछली अमेरिका यात्रा के समय मैंने 25 दिसंबर, 1963 को एक प्रवचन दिया कि क्राईस्ट जीसस से पहले भी था, जिस में बताया कि क्राईस्ट – पावर और गुरु – पावर एक ही चीज़ है। इसी प्रकार शब्द, वर्ड, इज़हार में आई प्रभु – पावर और खुद प्रभु एक ही हैं। इन्सानी जिस्म पर काम कर रही प्रभु शक्ति को हम गुरु कहते हैं। वह प्रवचन 'God Power, Christ Power and Master Power' के नाम से

छप चुका है।[169]

अपने पिछले अमेरिका के दौरे के समय मुझे क्रिसमिस के त्योहार पर प्रवचन देने का मौका मिला। मैंने लोगों से कहा कि क्राईस्ट तो जीसस से बहुत पहले भी था। ईसा को दुनिया में आए करीब 2000 वर्ष हुए हैं लेकिन क्राईस्ट पावर दुनिया में जिज्ञासु लोगों की रूहानी तरक्की में मदद देने के लिए हमेशा रहती है। इसलिए ईसा ने ज़ोर दे कर कहा है, "मैं वह हूँ जो मैं हूँ।" महापुरुष कभी मरते नहीं। वे हमेशा रहते हैं। प्रभु – पावर जब किसी इन्सानी जिस्म पर प्रकट होती है तो उसे जीवित गुरु कहते हैं। ज़रा समझने की कोशिश करें कि गुरु – पावर, प्रभु – पावर ही होती है।[170]

कल एक बीबी ने मुझे फोन किया कि मेरा पुत्र चोला छोड़ गया है। मैं उसे प्यार करती हूँ और मिलना चाहती हूँ, क्या मैं उसे मिल सकती हूँ? मैंने उस से पूछा, "तुम उस से क्यों मिलना चाहती हो? वह जीवन में आप को पुत्र बन कर मिला। पिछले जन्मों के संस्कार पूरे करने पड़ते हैं और ऐसे ही (संस्कार पूरे करके) वह चला गया।" उस ने कहा, "नहीं, मैं उस से मिलना चाहती हूँ और इस के बदले जो आप कहेंगे, करूंगी।" "ठीक है", मैंने कहा। "यदि तुम वहां जाओ और यदि उस को अगला शरीर न मिला हो, तब शायद तुम उसे पा सको परंतु इस से आप की रूहानी कमाई खत्म हो जाएगी। आप को नाम मिला है।" कुछ समय बाद वह आ कर बोली, "मैं गलत कर रही थी।" "आप उस के लिए प्रार्थना कर के मेरी मदद कर सकते हैं।" बातें बड़ी स्पष्ट हैं लेकिन हमारे चश्मे ही धुंधले हैं।[171]

मैं कहता हूँ कि टैलीविज़न हमें बरबाद कर रहा है। इस दौरे में मैं कनाडा के लोगों के एक समूह से मिला जो दुखी हो कर अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजना चाहते। सरकार उन पर बच्चों को स्कूल भेजने के लिए ज़ोर डाल रही है। वे कहते हैं, "हमें वह शिक्षा नहीं चाहिए जो आप दे रहे हैं। हम अपने बच्चों को घर में रख कर पवित्र जीवन, ब्रह्मचर्य और नेक जीवन की शिक्षा देंगे।" सरकार उन के विरूद्ध है

और उन्हें जेलों में डाला जाता है। वैनकोवर में एक भूख – हड़ताल हुई। हमारी आपसी बात हुई और मामला मेरे और ब्लामबर्ग के सामने आया। हम ने उन्हें समझाया, "उन्हें अपने स्कूल चला कर अपने अध्यापक रखने दो। जो उन्हें नैतिक नहीं लगता, आप उन पर क्यों ठोसते हो?" आजकल स्कूलों में क्या हो रहा है? अध्यापकों का जीवन पवित्र नहीं। कुछ बच्चे घर पर ही बिगड़ जाते हैं, कुछ गलियों में और रहे – सहे स्कूलों में बिगड़ जाते हैं।

प्रश्नकर्ता: मुझे मालूम हुआ है कि बैरन और आप इस के बारे में प्रधान मंत्री से मिले थे, क्या यह ठीक है?

महाराज जी: हां हां। वे आयरलैंड से आए थे। हम ने बात की तो वे मान गए। वहां भूख हड़ताल हो गई थी और वे भूख से मर रहे थे। हम ने उन्हें खाने के लिए मदद दी।

प्रश्नकर्ता: मुझे पता है, हम उन के बारे में अमेरिका में पिछले पांच साल से पढ़ रहे हैं। वे अपने कपड़े भी उतार देते हैं।

महाराज जी : हां।

प्रश्नकर्ता: और वे कहते हैं कि वे पागल से हो गए थे परंतु अब मैं बताता हूँ कि वे बहुत आध्यात्मिक हो गए हैं।

महाराज जी: वे पागल नहीं, रूहानी पुरुष हैं। वे रूहानियत में आस्था रखते हैं। उन के नेता हमारे पास आए थे, वे भूख से मर रहे थे, कुछ जेल में थे और कुछ बाहर ठंड से ठिठुर रहे थे। यह चाहिए था। ऐसा कौन कर सकता था?

प्रश्नकर्ता: हमारे अखबारों ने हमें अलग ही बात बताई थी।

महाराज जी: वह बिल्कुल गलत है। मुझे पता है कि क्या हुआ था और क्या उस का हल निकाला गया था। अब सरकार उन्हें अधिकार देना मान गई है। मैंने उन्हें बताया, "आप उन्हें अपने स्कूल क्यों नहीं चलाने देते। उन्हें अपनी इच्छानुसार अपने बच्चों को पालने दीजिए। आप उन पर इस मामले में जबरदस्ती क्यों करते हो?" और

आजकल लोग अपने बच्चों को भ्रष्ट स्कूलों में भेजना पसंद करते हैं। हमारा सारा ढांचा ही खराब है। लोग शायद मुझे कहें कि मैं इस के बारे में क्या फजूल बातें कर रहा हूँ लेकिन ये आम समझ की बातें हैं। मैं आप को समझा रहा हूँ। फिर मैं चला आया, लेकिन उन का समझौता हो गया और सरकार ने उन की मांग मान ली। वे जेलों में थे। कुछ नंगे थे, भूखे थे और ठंड से ठिठुर रहे थे। मैंने उन्हें लगभग 15 दिन का राशन दिया ताकि वे भूखे न मरें। मिस्टर खन्ना वहां थे, क्या आप जानते हैं? (महाराज जी ने 200 डालर खाना खिलाने के लिए दिए थे।)

महाराज जी: हां।[172]

प्रश्नकर्ता: जो शिक्षा आप दे रहे हैं क्या उस के लिए आप का कोई उत्तराधिकारी है?

महाराज जी: मैं बहुत से लोगों को शिक्षा दे रहा हूँ, देखते हैं किसे प्रभु नियुक्त करता है। सच तो यह है कि सत्गुरु में भी प्रभु ही बैठा काम करता है। जब प्रभु चाहेगा वह उत्तराधिकारी अपने – आप सामने आ जाएगा। मैं चाहता हूँ कि आप सब सिलैक्ट हो जाएं परंतु उस के लिए आप को जीवन बनाना पड़ेगा। मैं चाहता हूँ कि आप सब इस शिक्षा के दूत बनें। जी हां।

मैंने आप को बताया कि 1955 में जब मैं पहली बार विश्व यात्रा पर आया तब दो बच्चे मेरे पास आए। मैं बच्चों को अक्सर भजन पर बिठाता हूँ और उन को अंतर प्रकाश के दर्शन हुए। तब मैंने उन से पूछा, "तुम क्या बनना चाहते हो?" उन्होंने कहा कि हम गुरु बनना चाहते हैं। "ठीक है, आप को रास्ते पर डाल दिया है, इस की कमाई करते रहो तो आप को गुरु – पद के लिए चुना जा सकता है।" यह यहां लोगों द्वारा चुनाव नहीं होता जैसे हम राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री चुनते हैं। यह सिलैक्शन प्रभु की ओर से होती है।[173]

प्रश्नकर्ता: परंतु भारत में आप किसी भी आदमी को नामदान के लिए आज्ञा नहीं देते।

महाराज जी : एक – दो अपवाद को छोड़ कर अभी तक नहीं। परंतु यहां (पश्चिम में) कौन आ सकता है? वह सत्गुरु – पावर कहीं भी काम कर सकती है, एक बच्चा भी नामदान दे सकता है और उस से जिज्ञासु को अनुभव होगा। ध्यान रखें कि इस में माध्यम का कुछ नहीं बल्कि उस पावर के कारण लाभ मिलता है जो उस माध्यम द्वारा काम करती है। मैंने किसी को यह अधिकार नहीं दिया है। मैंने ऐसा अपवाद रूप में किया है वह भी पूर्णतया हुक्म से। यहां (विदेश में) जब नामदान दिया जाता है तो लोग (प्रतिनिधि) केवल पांच नाम बताते हैं। वे बाकी कुछ नहीं देते। इस का हुक्म मैं खुद देता हूँ। "ठीक है, उन्हें बिठा दो, उन को अनुभव मिलेगा।" और अनुभव मिलता है।[174]

आज भी भारत से मुझे पत्र मिला है जिस में लिखा है कि वह (पत्र भेजने वाला) ट्रक के नीचे आ गया था। उस ने आगे लिखा है कि महाराज जी मेरे साथ खड़े थे और उन्होंने मुझे बचाया। याद रखो गुरु जिस्म नहीं होता। किसी मानव – तन पर प्रकट प्रभु पावर गुरु होती है। हम उस मानव – तन का भी सत्कार करते हैं जिस के द्वारा प्रभु – पावर काम करती है।[175]

शायद केवल यही पाठ या हुक्म मैं आप को अपने जीवन को सब क्षेत्रों में, खास कर रूहानी क्षेत्र में ऊंचा उठाने के लिए दे सकता हूँ क्योंकि आप जिस से प्रेम करते हो, उस से बंधे हुए हो। ईसा ने कहा, "मेरे वचन आप के हृदय में बसें और तुम मेरे हृदय में बसो।" "आप कैसे उस के हृदय में बस सकते हो?" पहला, कहना मानने से और दूसरा, समर्पण से। 'जिस के बारे में सोचोगे वैसे बनोगे।' सिखों के पांचवें गुरु हमें बताते हैं कि अगर शिष्य गुरु को याद करता है तो गुरु क्या करता है? वह किसे याद करेगा? अपनी प्यारी रूहों को।

यह कभी भी मत सोचो कि गुरु में बैठा प्रभु आप को भूल गया है। मिसाल के तौर पर, अपने प्रवचन के शुरू में मैंने आप को बताया था कि जब मैं भारत में था, मैं रात को यहां आप के साथ होता था। अब जब मैं यहां हूँ, रात को मैं वहां होता हूँ। वह मुझ में काम कर रही

प्रभु पावर है, मानव – पुत्र नहीं।[176]

(3) तीसरी विश्व यात्रा – – 1972

यही बात मैंने थोड़े शब्दों में आप को बतानी थी कि हमें क्या करना है और यह रास्ता मिल जाने के कारण हम कितने खुशकिस्मत हैं। अब हम ने कमाई करनी है। इस में आप का कुछ खर्च नहीं होता। हमारे हजूर फरमाया करते थे कि इस में आप का क्या खर्च होता है? नींद के एक या दो घंटे। आठ घंटे सोने की बजाय छः घंटे सोओ। आप को इस का कुछ पैसा नहीं देना, यह कुदरत की तरफ से मुफ्त सौगात है। दूसरी सभी दातों की तरह यह मुफ्त है। पिछली बार जब मैं यहां आया था – और भारत में भी – मैंने अपने सभी प्रवचन मुफ्त रखे हैं, कोई टिकट नहीं, कोई दान नहीं लेता। क्यों? क्योंकि यह प्रभु की दात है। जो किताबें मैंने लिखी हैं, क्या आप को पता है? उन के कोई अधिकार सुरक्षित नहीं रखे। मैं जानता हूँ कि यह प्रभु की दात है।[177]

इस से उन का यह भाव था कि 'जब तक मैं दुनिया में हूँ, मैं दुनिया की रोशनी हूँ।' सभी महापुरुष यही कहते हैं। जब वे वापस जाते हैं तो कहते हैं कि हम अपने पिता के घर वापस जा रहे हैं – हमें मत रोको, हमें कुछ मत कहो। जब बाबा जैमल सिंह जी के चोला छोड़ने का समय आया तो कहने लगे, "देखो, मैं अपने पिता के पास जा रहा हूँ, मुझे कोई न रोके।" जब हमारे हजूर जिस्मानी तौर पर बीमार थे तो हम ने प्रार्थना करते थे, "हजूर, कृपा कर के आप अपने सत्गुरु से प्रार्थना करो कि आप को कुछ समय और यहां रहने दें।" उन्होंने कहना, "मैं उन्हें ऐसा नहीं कहूँगा, मैं जाने को तैयार हूँ। आप चाहो तो उन्हें प्रार्थना कर सकते हो।" आज सुबह, आप को पता है? एक बीबी बता रही थी कि मेरा गुरु मेरा इंतज़ार कर रहा है। रूहानियत की जबरदस्त लहरें आई हुई हैं।[178]

एक फकीर एक बार राजा के महल में दाखिल हो कर अंदर जा बैठा। कुछ समय बाद राजा वहां से गुजरा और उस फकीर को वहां बैठा देख कर बोला, "क्या तुम्हें पता है कि तुम कहां बैठे हो?"

फकीर ने उत्तर दिया कि मैं सराय में बैठा हूँ। राजा क्रोधित हो कर बोला, "क्या तुम्हें सराय और राज महल में कोई फर्क नज़र नहीं आता?" तब फकीर ने पूछा कि आप से पहले यहां कौन रहता था। राजा बोला कि मेरे पिता रहते थे और उस से पहले मेरे दादा रहते थे। इस पर फकीर बोला, "फिर यह राज महल सराय नहीं तो और क्या है?"[179]

पिछली बार जब मैं अमेरिका से वापस गया तो लोगों ने मुझे एक लाख डालर भेंट किए। मैंने लेने से इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा, "न क्यों करते हो? मिशन को यहां बढ़ाने के लिए।" तब वे कहने लगे, "अच्छा होता यदि आप ये डालर ले जाते – आप तो हमारे दिल साथ ले जा रहे हैं।" नतीजा यह हुआ कि लोग जंगल की आग की तरह भागे चले आने लगे। यह चीज़ हरेक को जचती है। सभी महापुरुषों की मूलभूत शिक्षा एक जैसी ही रही है, चाहे समाज और रीति – रिवाज अलग – अलग हों। ये जलवायु तथा वातावरण के अनुसार बदलते रहते हैं परंतु सब का लक्ष्य (प्रभु – प्राप्ति) एक ही है।

महापुरुष सब से प्रेम करते हैं। प्रभु को कैसे और कहां ढूंढें – इस के लिए कई रास्ते हैं। यह (सुरत – शब्द योग) प्राकृतिक है जिसे बच्चा भी कर सकता है। बाहरी ज्ञान कम हो या न भी हो तो भी आप प्रभु के दर्शन कर सकते हैं। वह न लिखी जाने वाली कुदरती भाषा और न बोली जाने वाली बोली है। बात तो यह है कि हम इसे भूल गए हैं।[180]

पिछली बार मैं 1963 में आया था। शारीरिक रूप से अलग रहते हुए अब 9 साल हो चुके हैं। आप में से कुछ भाइयों ने इस दौरान भारत में आश्रम की यात्रा करने की कृपा की है। मुझे अपने मित्रों, भाइयों और बच्चों के वहां अपने घर पर पहुंचने पर बड़ी खुशी होती है। भारत पहुंचने का मुख्य मकसद रूहानी तरक्की में बढ़ोतरी करना है। तो वहां से सभी भाई कुछ न कुछ सहीनज़री और रूहानी तरक्की ले कर वापस आए। कुछ भाई वहां आ कर मुझे मिलते रहे लेकिन आप सभी पत्र – व्यवहार द्वारा मेरे दिल में सदा बसे रहे। माता – पिता क्या कभी

बच्चे को भूल सकते हैं चाहे बच्चे सैंकड़ों की गिनती में क्यों न हों।

हम सब प्रभु के बच्चे हैं। पिछले साल मेरा आने का विचार था– पक्का विचार था। मैंने इस की पूरी तैयारी के लिए भारत में अलग–अलग स्थानों की हवाई यात्रा के लिए टिकटें खरीद लीं ताकि वे भाई उस छ: महीने में उत्साह बनाए रखें जिस समय कि मैं बाहर रहूं परंतु उस सख्त परिश्रम के कारण मैं बीमार पड़ गया। तो कुदरत ने मुझे बिल भेजा जिस के बारे मुझे इल्म नहीं था। आप देखो, मैंने पिछले साल यहां आना था। प्रेम का धागा आप की तरफ से भी और मेरी ओर से बड़ा मजबूत है। सत्संग संबंधी तथा दूसरी कई रुकावटों के बावजूद मैंने अब आने का प्रोग्राम बनाया, चाहे इस में कुछ देरी भी हुई। ताई हरदेवी कहने लगी, "आप जाओ, मैं महीना–भर यहां रह कर सब कामों को हल कर लूंगी।" तो यह उस की कुरबानी है भले ही वह एक दिन के लिए भी अलग नहीं रही। आप के प्रेम के कारण उस ने यहां आने की कुरबानी की है। उस ने आप सब के लिए अपना प्रेम भेजा है। प्रेम का प्रकटावा शब्दों में नहीं हो सकता। हां, इसे आप आंखों की रोशनी द्वारा महसूस कर सकते हैं, रेडियेशन से मैं आप को प्यार भेजता हूं। दो दिन मैं यहां हूं। मेरा ख्याल है कि आप इस से फायदा उठाएंगे और सभी मिल कर प्रभु की याद में बैठेंगे। आप को रास्ते पर डाल दिया गया है, मेरा अब यहां आने का मतलब यह है कि आप साधन में तरक्की करें और सही–नज़री को प्राप्त करें। सही–नज़री क्या है? इस का आपको पता चल गया है। सही–नज़री से सही विचार बनेंगे और सही विचारों से शुभ वचन पैदा होंगे जिस से शुभ कर्म होंगे।[181]

अगर समय कम पड़ता हो तो आप इसे लंबा करने के लिए क्या करेंगे? समय की टांगों में चेन बांध दो। प्रभु की याद कभी मत भुलाओ, इस से समय लंबा हो जाएगा।[182]

मैं शारीरिक रूप से हमेशा आप के साथ रहना चाहता हूँ लेकिन यह संभव नहीं है। ग्रहणशीलता बढ़ाओ जिस से आप के और उस के दरम्यान कुछ न रहे। यह आप पर निर्भर करता है। मैं आप की तरह ही

इन्सान हूँ। आप में से कई संदेशवाहक बन सकते हैं। यह मत कहो कि मैं कोशिश करूंगा, यह कहना आधी 'न' है। इस की कमाई करो।

सत्गुरु की मधुर याद हमेशा बनाए रखो और एक महीने में आप की आश्चर्यजनक तरक्की होगी। मैं यह बात दिल की गहराई से कह रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप मनुष्य जीवन से पूरा फायदा उठा कर सही मायनों में तरक्की करें। प्रभु–पावर आप के अंतर है। गुरु जब नाम देता है तो आप के अंदर बैठ जाता है और आप के हर कर्म को देखता है। जब आप अपना (परमार्थी) काम करते हैं तो उसे प्रसन्न करते हैं।

अगर आप डायरी रखें और (अभ्यास में) समय लगाएं तो आप को लगातार 24 घंटे प्रभु के दर्शन होने शुरू हो सकते हैं। 'मैं उसे याद करता हूँ जो मुझे याद करता है।' प्रभु हमेशा आपके साथ है। केवल अपना मुंह उधर करो तथा संपर्क बनाए रखो। आप देखेंगे कि बिना मांगे ही आप की मुश्किलें हल हो जाएंगी।[183]

इस सब का क्या मतलब है? अगर हम दूसरों को खुश रखेंगे तो हम खुद भी खुश हो जाएंगे। अगर हम दूसरों को मुश्किल में डालेंगे तो खुद भी मुश्किल में फंस जाएंगे। अगर हम खुश रहना चाहते हैं तो दूसरों को खुश रखें।[184]

पहली चीज़, खून–पसीने की कमाई है और पवित्र भोजन वह है जो पवित्र हाथों द्वारा प्रभु की याद करते हुए बनाया और परोसा गया हो।[185]

दूसरी चीज़, जैसा कि मैंने आप को बताया, कि हम अमीर या पढ़े–लिखे होने पर अथवा उच्च पदवी या जायदाद के मालिक होने के कारण दूसरों से नफरत करते हैं। हम समझते हैं कि वे हमारी पदवी के अनुकूल नहीं हैं और हमारी सोसायटी में फिट नहीं हो सकते। यह दिल की घृणा आप के अपने मन पर असर करती है।

तीसरी चीज़ है– मुआफ करो और भूल जाओ। आखिरकार सभी इन्सान एक जैसी मुहारत नहीं रखते, हर आदमी अपने विकास और ज्ञान के आधार पर काम करता है। उसे नम्रता से समझाइए और

इस के बाद भूल जाइए। इस विचार को भी भूल जाएं कि उस ने वैसा किया है। इस से मन में विष पैदा होता है जो आप पर असर करेगा।

चौथी चीज़ है – पवित्रता – मन, वचन और कर्म की। अगर आप के मन में कोई अपवित्र ख्याल आ भी जाए या आप उस का विचार करें तो सिर से पैर तक आप के सारे शरीर में ज़हर फैल जाएगा जिस के बारे में दूसरों को मालूम नहीं होगा, केवल आप को पता चलेगा। कभी – कभी लोग कहते हैं कि हम कर्म से नहीं करते, केवल बातों से मनोरंजन करते हैं। वे ऐसे अपवित्र ख्यालों के बारे में बातें करते रहते हैं लेकिन वही चीज़ें (बुरा) असर डालती हैं। जैसा मैंने एक दिन पहले भी खोल कर समझाया था कि हर ख्याल का अपना असर होता है। जैसा तुम बीजोगे वैसा बीजा जाएगा। चाहे यह तुच्छ समझ कर बीजा गया हो या मनोरंजन के लिए किया गया हो इस का असर होगा।

तो यह आंखों की पवित्रता है । दूसरों की ओर कामुक ख्याल से मत देखो, शत्रुता या घृणा का भाव न रखो क्योंकि मानवता के तौर पर यह उचित नहीं है। कानों से किसी की बुराई मत सुनो क्योंकि एक ही विचार आप को शंकालु बना देता है और आप संबंधित व्यक्ति को शक की निगाह से देखने लगते हैं चाहे वह बिल्कुल सही भी हो। इस कारण किसी के ऐसा कहने पर कि उस ने ऐसा देखा है या सुना है, कभी विश्वास न करो जब तक अपने कानों से न सुनो और अपनी आंखों से न देखो।

फिर ज़बान की पवित्रता की बात आती है। जो चीज़ सात्विक नहीं अगर आप को उस के खाने का शौक है या स्वादिष्ट लगती है तो वह आपके पेट को खराब करने लगती है। आंख, कान, जबान और स्पर्श – सब की पवित्रता होनी चाहिए। इन छोटी – छोटी बातों से हम दूसरों से बुरा असर लेने लगते हैं। बात तो यह है।

पवित्रता खुद एक वरदान है। जैसा मैंने आप को बताया कि विवाहित जीवन अगर धर्म – ग्रंथों के अनुसार हो तो रूहानियत के मार्ग में कोई रुकावट नहीं बनता। यह जीवन में एक जीवन – साथी को साथ

लेना है जो धार्मिक बंधन से होना चाहिए न कि खाली समझौते के तौर। प्रभु ने आप को (पति – पत्नी के तौर पर) एक साथी दिया है जो दुनिया के दुख – सुख में काम आए तथा दोनों मिल कर प्रभु को पाएं और जरूरत मुताबिक बच्चे पैदा करें। तो संयम का जीवन एक वरदान है – जो धारण करते हैं वे इसे महसूस करते हैं। ऐसी पवित्रता की रेडियेशन की रंग और बू होती है, इस बात का ध्यान रखो। विचार गहरा असर रखते हैं। यह चौथी चीज़ है। अगर पवित्रता है तो आप सब अच्छाइयों का घर बन जाओगे, आप भजन में बैठोगे तो आश्चर्यजनक तरक्की करोगे।

पांचवीं चीज़ है कि प्रभु की C.I.D के मुफ्त के नौकर मत बनो। वह ऐसा है – फलाना ऐसा है – फलाना ऐसा है – आप हमेशा ऐसा ही सोचते रहते हैं। प्रभु है, वह सब देख लेगा। अगर आप का कोई मित्र कुछ गलती कर रहा है तो उसे एकांत में नम्रतापूर्वक समझा दो – देख भाई, यह ठीक नहीं, अपना जीवन बरबाद मत करो, मुझे आप से हमदर्दी है। प्लेग के चूहे की तरह उस की बात को सभी जगह फैलाते न फिरो।[186]

***

अपने मन को सदा व्यस्त रखो। जब काम करो तो पूरे ध्यान से करो। काम पूजा है। खाते समय पूरा ध्यान खाने में रखो क्योंकि खाना प्रभु की दात है। प्रभु का शुक्राना करो। अगर खाते समय आप का ध्यान खाने पर होगा तो उस खाने का अच्छा असर पड़ेगा। खाते समय कभी – कभी आपका ख्याल कहीं और होता है, आप को यह भी पता नहीं चलता कि आप ने कितना खा लिया है। अभ्यास के समय पूरा ध्यान अभ्यास में लगाओ। ये चीज़ें हम पर असर करती हैं, मैं आप को बड़ी सच्ची बातें बता रहा हूँ।[187]

अध्याय 7

मानव केंद्र, देहरादून की स्थापना – 1969

छोटी उम्र से ही मेरा एक उद्देश्य था। मुझे पढ़ने का बहुत शौक था और बहुत सी किताबों के अध्ययन के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि इंसान का बनना सबसे बड़ा आदर्श है। इसके बाद इंसानी सेवा की बारी आती है तथा भू-सेवा तीसरे स्थान पर है। मानव केंद्र में इन तीनों उद्देश्यों को मूर्तरूप दिया गया है । जवानी के दिनों में मैंने लोगों की सेवा करनी चाही खासकर उनकी जो अस्पतालों में बीमार थे और दवाइयां नहीं खरीद सकते थे। मैं प्रतिदिन के कामों को निपटा कर सुबह शाम हर रोज उनकी देखभाल और सहायता के लिए जाया करता था। यहां मानव केंद्र में हमने एक अस्पताल खोला है जिसमें गरीबों का मुफ्त इलाज होगा। गरीब और वृद्ध लोग जिनके पास कोई मकान नहीं उनके लिए वृद्ध आश्रम बनाया है । भू-सेवा के लिए खेतीबाड़ी और डायरी फार्म के विभाग हैं। वहां अंडाकार शकल का मानसरोवर है जिस की लंबाई 350 व चौड़ाई 200 फुट है। इस के आसपास का वातावरण एक आदर्श जगह है जो केवल अभ्यास के लिए निश्चित है। प्रकृति ने वहां पवित्र पानी का बड़ा चश्मा देकर हमारी मदद की है जो मानसरोवर और मानव केंद्र को पानी की आपूर्ति करता है। जैसा कि स्पष्ट है, आजकल शिक्षा प्रणाली में सदाचार की कमी है जो कि आदर्श नागरिक और भाईचारे की बुनियाद है। मानव केंद्र की शिक्षा योजना में इसे शामिल किया जायेगा। मानव केंद्र का उद्घाटन उत्तर प्रदेश के वित्त मंत्री ने किया जिन को प्रस्तावित योजना बहुत जची। यहां हमने एक छोटा स्कूल भी शुरू किया है जहां विश्वविद्यालय स्तर तक की सुविधाएं बढ़ाई जायेंगी। यह भी सम्भावना है कि एक भाषा स्कूल शुरू

किया जाए ताकि अलग-अलग भाषाएं बोलने वाले आपसी विचार विमर्श कर सकें। एक पुस्तकालय भी खोला गया है जिसमें हरेक धर्म और दर्शन की पुस्तकें होंगी। यदि आप सब धर्मों के पवित्र ग्रंथ पढ़ें तो आप पाएंगे कि सब महापुरुषों की बुनियादी शिक्षा एक सी रही है। वे सब यही कहते हैं कि मानव जाति एक है और परमात्मा के पास वापस जाने का रास्ता भी एक है जो हर इन्सान के घट में ज्योति और श्रुति के रूप में मौजूद है। प्रभुसत्ता से इन्सान का मिलाप केवल मनुष्य योनि में ही हो सकता है। अपने धर्म में रहो परंतु तब तक आराम से न बैठो जब तक तुम वापस अपने निज घर न पहुंच जाओ। फिर वह प्रभु खुद आपको अपने साथ मिला लेगा।[188]

तो मेरे कहने का मतलब है कि इस ख्याल से मैंने मानव केन्द्र की स्थापना की । नीचे ज़मीन ऊपर आसमान-सबसे बड़ा मन्दिर यह है और छोटा मन्दिर "हरि मन्दिर एह शरीर है जिसमें सच्चे की जोत।" जितने बाहर मन्दिर बनाए गए, गिरजे बनाए गए, मस्जिदें बनाई गई, वे गुम्बददार (सिर की शकल की) या नाक की शकल की हैं । उनमें दो चिन्ह रखे, एक ज्योति, एक नाद । तो हम जागती ज्योति के पुजारी हैं, हम सब ज्योति पुत्र है। परमात्मा की सन्तान होने के नाते हम सब आपस में भाई-भाई और बहन-भाई हैं और यह मानव केंद्र जो है- यह आज हमारे सब दुखों का एकमात्र इलाज है ।

तो यह थोड़ा कुछ नमूना आपके सामने है। मैंने वहां मानव केंद्र में थोड़ी मानव सेवा और जोड़ दी है मानव निर्माण के साथ । गरीब लोग जो साधन विहीन हैं, उनके लिये वहां अस्पताल है, मुफ्त इलाज के लिये। दूसरे, बूढ़े लोग जिन का कोई आसरा नहीं, उनके लिए वृद्ध आश्रम है जहां वे आराम से अपने आखिरी दिन गुजार सकें। पश्चिम में तो उनके लिये पेंशनें हैं, यहां कोई इन्तज़ाम नहीं। तो उनके लिये वृद्ध आश्रम में रहने के लिए जगह और थोड़ा खाने-पीने का सामान है। और तीसरे, पशुपालन है, भू-सेवा के अन्तर्गत जिससे शुद्ध घी-दूध मिल सके। परन्तु मुख्य उद्देश्य व आदर्श मानव निर्माण है।[189]

इस संबंध में यह आवश्यक है कि साधारण मनुष्य के दिल और दिमाग में निष्काम प्रेम और निष्काम सेवा की भावना भर दी जाये और मानव – सेवा, भू – सेवा और पशु – सेवा पर विशेष बल दिया जाये। 1969 में इस विचारधारा को मूर्तरूप दिया गया जबकि भारत और विदेशों में मानव निर्माण के मानव केंद्रों की स्थापना करने का निर्णय लिया गया। भारतवर्ष में शिवालिक और हिमालय पर्वत श्रेणी की तलहटी में देहरादून के पास मानव केंद्र स्थापित किया गया है। वहां पर गरीबों के लिए अस्पताल और वृद्ध आश्रम बनाये गये हैं। आधुनिक उन्नत वैज्ञानिक कृषि तथा पशुपालन का काम भी इस योजना में शामिल है। एक विशाल शिक्षा भवन बन रहा है जो कि संसार के समस्त धर्मों के ग्रन्थों से सुसज्जित होगा जहां लोग आकर उन तथ्यों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे जो सब धर्मों के मूल में हैं। विभिन्न भाषा – भाषियों को एक – दूसरे की बात समझने में मुश्किल न पड़े, इसके लिये भाषाओं का एक स्कूल शुरू करने की व्यवस्था है।[190]

***

अध्याय 8

विश्व मानव एकता सम्मेलन – फरवरी 1974

विश्व मानव एकता के कार्यक्रम की शुरुआत मानव एकता के ऐतिहासिक जलूस से हुई जो 3 फरवरी को सुबह दस बजे गांधी ग्राऊंड से चला और चांदनी चौक, लाल किला, दरियागंज होता हुआ दोपहर ढाई – तीन बजे रामलीला मैदान में सम्मेलन के ठिकाने पर पहुंचा जहां (तत्कालीन) उप राष्ट्रपति श्री गोपाल स्वरूप पाठक सम्मेलन के उद्घाटन के लिए आने वाले थे। दिल्ली ने बड़े – बड़े जलूस देखे हैं परन्तु यह जलूस हर लिहाज से अपनी शान का निराला जलूस था। हर समाज, धर्म, मान्यता एवं विचारधारा के लोग इसमें शामिल थे। बाहर विदेशों से आए हुए पांच सौ से अधिक डेलीगेट अपने – अपने देशों के नाम के झण्डे उठाए मानव एकता के नारे लगाते चल रहे थे। इनमें Ýांस, जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली, युगोस्लाविया, यूनान, ब्रिटेन, नाईजीरिया, घाना (अफ्रीका), कनाडा, उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा कई अन्य देशों के लोग डेलीगेटों के इस महासागर में शामिल थे।

जलूस की शान संख्या में नहीं होती, झण्डों – बाजों – खेल तमाशों में नहीं होती, वह संगठन व अनुशासन में, कायदे – करीने और तरतीब में, सुव्यवस्था – सुनियन्त्रण में, सलीके और सफाई में, कार्यक्रम के हर मरहले पर, मार्च के हर कदम पर, समय की पाबंदी में होती है। इस चीज़ का अधिकतर श्रेय बख्शी जगदेव सिंह, श्री प्रेमचंद गुप्ता और पं0 हरस्वरूप शर्मा को जाता है जिनके माहिर हाथों में जलूस का प्रबंध था। उन्होंने प्रबंध के छोटे से छोटे ब्यौरे पर ध्यान ही नहीं दिया बल्कि उस पर जान मारी की। बख्शी जगदेव सिंह के कथनानुसार "सोचा था कम से कम जिम्मेदारी अपने सिर लूं लेकिन फिर अन्तरीय प्रेरणा मिली कि

जान तोड़कर काम करो, नाम के लिए नहीं, काम के लिए काम करो।" यही हाल श्री प्रेमचंद गुप्ता और श्री हरस्वरूप शर्मा का था। वह अन्तरीय प्रेरणा कहो, सन्तों का प्रताप कहो, मानव – मानव को दिव्य सूत्र से जोड़ने वाली परम् सत्ता का वरदान और बरकत कहो, जलूस से लेकर सम्मेलन के हरेक समारोह में, भाषण करने वालों के हरेक भाषण में झलक दिखा रही थी। उसी परम् सत्ता का चमत्कार था कि जो काम जिसे सौंपा गया, चाहे वह योग्य था या अयोग्य, इस सलीके और निपुणता से पूरा हुआ कि देखते ही बनता था।

जलसे – जलूसों के अनुभवी लोगों के अनुमानानुसार दो लाख से अधिक संख्या थी लोगों की जो इस विराट जलूस में शामिल हुए। पूरे जलूस को एक जगह से गुजरने में डेढ़ – दो घण्टे का समय लगता था। इस विराट जनसमूह को कायदे और तरतीब में रखना और फिर इस जमाने में और बिना सिक्योरिटी के विशेष प्रबन्ध और व्यवस्था के, चमत्कार से कम नहीं था। इतनी बड़ी जनसंख्या के हजूम (इकट्ठ) के हुल्लड़ बन जाने (बेकाबू हो जाने) का खतरा रहता है, लेकिन जिस कायदे – करीने से पूर्व और पश्चिम के 32 देशों और जातियों के इन्सानों का यह जलूस दिल्ली के भरे – पूरे बाजारों और सड़कों से गुजरा वह जीवित प्रमाण था इस बात का कि इन्सान – इन्सान सब एक हैं, वे कोई हों, कहीं हों। विभिन्न आकृतियों, शक्लों – बनावटों, वेश – भूषाओं और भाषाओं के लोगों का यह रंगारंग जलूस अपनी शान और तरतीब से उन नारों की सार्थकता प्रकट कर रहा था, जो जलूस के एक सिरे से दूसरे सिरे तक विश्व की विभिन्न भाषाओं में लगाए जा रहे थे, "एक बनो, नेक बनो।" एकता की आधारशिला नेकी (सदाचार) है, इन्सानियत (मानवता) है, अन्यथा वह एकता के नाम पर एक हुल्लड़ है। और, "इन्सान इन्सान सब एक हैं", जैसे इन्द्र – धनुष की सतरंगी किरणें एक ही इकरंग ज्योति से उपजती हैं और अपनी रंगारंगी में उस दिव्य एकता की अभिव्यक्ति कर उसी एक ज्योति में समा जाती हैं, इसी प्रकार कौमों – नस्लों – ज़बानों – पहरावों की विविधता और भेद के बावजूद

इन्सान अव्वल और आखिर इन्सान ही है – यह इस ऐतिहासिक जलूस का संदेश था।

ढाई – तीन बजे के करीब जलूस रामलीला मैदान पहुंचा जहां घण्टा भर बाद होने वाले उद्घाटन समारोह के लिये मंच सजा हुआ था। सारा पण्डाल खचाखच भरा हुआ था।[191]

ऐसे कई अधिवेशन पहले भी हो चुके हैं, परंतु वे सब धर्म के आधार पर हुए, इसी कारण जितनी चाहिये थी उतनी एकता नहीं ला सके। इस अधिवेशन की खास बात यह है कि यह मानव एवं मानवता की दृष्टि से किया जा रहा है जिसका मार्ग सुकरात, गौतम बुद्ध, इशु – मसीह, कबीर, गुरु नानक व अन्य पैगंबरों व सन्त – महात्माओं ने प्रशस्त किया था, इस लिये सच्ची एकता लाने में सफल होगा। मानव के नैतिक, शैक्षणिक व आर्थिक धरातल को ऊंचा करना – यह एक बहुत बड़ी चुनौती हमारे सन्त – महात्माओं व धर्माचार्यों के सामने है। मानव की आर्थिक दशा का सुधार बहुत जरूरी है क्योंकि A hungry man is an angry man – भूखा आदमी क्रोधी आदमी होता है और उसके सामने परमात्मा की बात करना उसका मुंह चिढ़ाना है।

एक ही तरह सब मनुष्य पैदा होते हैं, एक सी सुविधायें और अधिकार प्रभु की ओर से सबको मिले हैं, अन्दर और बाहर की बनावट भी सब की एक है। सब चेतन स्वरूप (आत्मा) हैं। परमात्मा महाचेतनता का सिन्धु है तो वह (आत्मा) बिन्दु है। तो मानवता करके, आत्मा करके और एक परमात्मा के पुजारी होने करके हम सब एक हैं – परमात्मा सबका पिता है और इंसान सब भाई भाई हैं। महापुरुषों ने हमेशा इस बात पर जोर दिया है कि यह मानव शरीर सच्चा हरि मन्दिर है जिसे उस परमात्मा ने माता के गर्भ में अपने हाथों से बनाया है। वह प्रभु इंसानी हाथों से बने धर्मस्थानों में नहीं रहता, वह इस तन के हरि मन्दिर में रहता है जो उसने अपने रहने के लिए आप बनाया है। हम (आत्मा) भी उसी में रहते हैं। तो यह एक सुनहरी मौका है, यह मनुष्य जीवन, जिसमें हम परमात्मा को पा सकते हैं।

मुझे विश्वास है कि हम में से हरेक भाई इस अधिवेशन के महत्व को जानता है जिसमें हर समाज और विचारधारा के लोग शामिल हुए हैं और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अलगाव की दीवारें तोड़ने और देशों व जातियों को मिलाने तथा मानव एकता का मार्ग प्रशस्त करने के लक्ष्य की पूर्ति के लिये खुले दिल से हमारा साथ देगा और हर तरह की मदद भी देगा।

आओ हम प्रण करें कि अपने तंग दायरों की निष्ठा से ऊपर उठ कर हम समस्त मानवता को जोड़ने, मिलाने और ऊपर उठाने के काम में जी – जान से जुटेंगे और तब तक एक होकर, एक मन से जुटे रहेंगे जब तक यह काम पूरा नहीं हो जाता।[192]

कल से लेकर अब तक सारे महापुरुषों ने तरह – तरह से आपको सन्देश दिये और खोल कर समझाया कि जिन्दगी का आदर्श क्या है। कई लोगों ने इस बात को इस कान से सुना और उस कान से निकाल दिया, कइयों ने शायद ऐसा किया हो कि कुछ याद कर लें ताकि लोगों को सुना सकें। इन दोनों से काम नहीं बनेगा। काम तब बनेगा कि जो कुछ उन्होंने फरमाया, उसको समझा है तो अमल में लाओ। भगवान कृष्ण ने 18 अध्याय गीता के तरह – तरह से पेश किये और यहां तक कि अपना विराट स्वरूप भी अर्जुन को दिखाया। आखिर क्या कहा, "हे अर्जुन! तूने सुना?" ये दो लफ्ज बड़े मायने रखते हैं, "हे अर्जुन! तूने सुना, कितनी भ्रांति दूर हुई?" सुनने का फायदा यही है कि तुम्हारे जीवन में कितना हिस्सा उसका बैठा और आगे आप उस पर अमल करोगे। अमल तो यही है कि हम सब एक हैं। मानव जाति एक है। लेबल सब अपने – अपने मुबारिक रहें। ये लेबल यही बतलाते हैं कि हम किस स्कूल में पढ़ रहे हैं, प्रभु को पाने के लिए और अपने आपको जानने के लिए। ऐसे महापुरुष हमेशा आते रहे और हमें समझाते रहे। हम पूछते भी रहे – बहुत – परन्तु कमी क्या रही:

पूछत हैं पथिक केते मार्ग न धरें पग।
प्रीतम के देश कैसे बातन से जाइये।

कड़छी सुबह से शाम तक हलवे में फिरती रहे, क्या उसमें मिठास आ सकती है? खाने से आएगी, हजम होने से आएगी। तो हमारी बड़ी खुशकिस्मती है, मालिक ने सामान किया है, महापुरुषों को एकत्र किया है और सब में वही तरह – तरह से बोल रहे हैं, समझाने के लिए। अब अपने आप से सवाल करो कि आपने क्या समझा, कितनी भ्रांति दूर हुई? बस। कम से कम इतना मान जाओ कि सब एक हैं, इन्सान इन्सान में कोई फर्क नहीं, सब में वही आत्मा विराजमान है, सबका वही एक इष्ट है, हम सब उसी के पुजारी हैं, No high low. सबसे बड़ा कौन है?

सबसे उत्तम गिनो चण्डाला।। जाके मन बसे गोपाला।।

बस, जिसने मनुष्य जन्म पाकर उस प्रभु का अनुभव कर लिया वही सबसे ऊंचा है। तो महापुरुष आते रहते हैं। They come to make people see who do not see, वे अन्तर का दिव्य चक्षु खोलते हैं, शिव चक्षु खोलते हैं, शिवनेत्र कहो, Third eye कहो, Single eye कहो। तो पिछले दो दिनों को ध्यान में रखते हुए आज आप यह दिल से फैसला करो कि आपने क्या समझा और क्या अमल होगा आज से।

हमारी खुशकिस्मती है जो ऐसा समय मिल रहा है, This is golden opportunity. पर यह बात ध्यान रखो कि कितनी भ्रांति दूर हुई है। इन्सान सब एक हैं। मेरी शुभ कामना है कि मालिक दया करे, हम बात समझें और अमल के काबिल बनें तो दुनिया में सुख हो जायेगा।[193]

पहले धर्मों के level (स्तर) पर बहुत – सी कान्Ý सें हुई। उससे बहुत सारी तंगदिली, तंगनजरी जो थी वह कम हो गई है। उससे जितना काम बनना था, पूरा नहीं हुआ। इस कारण man level (मानव के स्तर) पर यह अपनी किस्म की पहली कान्फ्रेंस हो रही है। मैं पश्चिम में अभी गया था। उनको यह बात बहुत appeal की (पसन्द आई) है। यहां भी सब तरफ से इसकी जरूरत महसूस हो रही है। अगर इंसान बन जाए तो परमात्मा भी उसको ढूंढता फिरता है। इकबाल शायर ने कहा

कि हज़रत मूसा कोहेतूर पर खुदा से बातें करने गए, क्या उन्हें मालूम नहीं था कि खुदा खुद इंसान की तलाश में है।

इन्सान कौन है? जो हो ideal नमूना (मानवता का), जिसमें प्रभु का प्यार हो, और सब में वह प्रभु बसता है, इसलिये सबसे प्यार करता हो। जिसके शरीर और आत्मा से प्यार बरसता हो, इन्सानियत बरसती हो, सबसे प्यार और सबके लिए दिल में इज्जत हो, सबकी भावना का जो आदर करे– जो अपने इर्द–गिर्द हों, जो अपने से ऊपर हों और जो नीचे हों उनके लिए भी दिल में इज्जत हो। वह परमात्मा सब में विराजमान है। इन्सान सबसे ऊंची गति रखता है। तो इस level (स्तर) से यह कान्फ्रेंस की जा रही है।[194]

मैं यहां इस कान्फ्रेंस में आप सबको पाकर बहुत खुश हूँ जो कि मानव के स्तर पर हुई। मेरे विचार से अपने आप में यह पहली ऐसी कान्Ýस है जैसी कि शताब्दियों पहले राजा अशोक के समय हुई थी। धर्म के स्तर पर ऐसी कई कान्फ्रेंसें हुई होंगी परंतु मानव के स्तर पर यह एक महान क्रांति थी– जो वहां मौजूद थे वे आप को एक महान सच्चाई बताने के लिए इसके साक्षी हैं मौजूद हैं।[195]

विश्व मानव एकता सम्मेलन के प्रस्ताव

प्रस्ताव क्रमांक (1)

विश्व मानव एकता सम्मेलन को एकता की पुकार पर संसार के सारे भागों से जनसामान्य के व्यापक सहयोग पर गहरा संतोष है।

शांति और एकता की मांग समझते हुए सम्मेलन का निष्कर्ष रहा कि आज इस बात की तीव्र और गंभीर अपेक्षा है कि मानवीय हृदयों में प्रेम, अहिंसा, सत्य, सहिष्णुता तथा मानव की निष्काम सेवा के शाश्वत मूल्य विचार, वाणी तथा कर्म के क्षेत्र में प्रस्थापित किये जायें।

सम्मेलन सभी धर्मो के महापुरुषों से मानवता को भय तथा आतंक से स्वतंत्र करने के प्रयास में निर्देशन तथा सहयोग की आशा

करता है ताकि आज के मानव को अन्तर्वास शांति से परिपूर्ण मानव के रूप में रूपान्तरित किया जा सके।

सम्मेलन का निष्कर्म रहा कि सारे धर्म मूलत: एक हैं। उनका मुख्य लक्ष्य प्रेम तथा नि:स्वार्थ सेवा की ओर मानव को ले जाना है।

प्रस्ताव क्रमांक (2)

विश्व वंद्य संत कृपाल सिंह जी महाराज के प्रयास से उनकी अध्यक्षता में आयोजित विश्व मानव एकता परिषद ने, जिसमें भारत तथा विश्व के धार्मिक व राजनैतिक नेताओं ने प्रतिनिधियों के रूप में भाग लिया, विश्व एकता के लिए विपुल लोक भावना को प्रदर्शित किया है और यह आवश्यकता अनुभूत की गई है कि हमारे युग में सारी मानवता में व्याप्त इस एकत्व भावना को साकार करने के लिए क्रियात्मक साधनों की खोज कर उनका नियोजन करे:

यह निश्यच किया गया कि:

1. एक विश्व की भावना की आवश्यकता पर लोकमत का जागरण विश्व मानव एकता सम्मेलन करे।

2. यूनेस्को तथा संयुक्त राष्ट्र संघ को विश्व मानव एकता सम्मेलन को भविष्य में एक अधिकार सम्मत संस्थान के रूप में मान्यता देने का अनुरोध करे।

3. विश्व मानव एकता सम्मेलन समउद्देशीय समस्त संस्थानों से विश्वव्यापी स्तर पर सम्पर्क स्थापित करे ताकि सबकी गतिविधियों का अधिक व्यापक एवं व्यवस्थित समन्वय हो सके।

4. विश्व मानव एकता सम्मेलन क्षेत्रीय व राष्ट्रीय प्रतिनिधियों को विभिन्न देशों में इसी प्रकार के सम्मेलन आयोजित करने के लिए भेजे जिनके द्वारा सारे धर्मो के बीच समन्वय की भावना पर प्रकाश डाला जा सके।

5. ये प्रतिनिधि जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों से इस बात का अनुरोध करें कि वे अपने प्रशासकीय क्षेत्रों में पाठशालाओं तथा प्रौढ़

शिक्षण संस्थानों में धर्मो के पक्षपात रहित तुलनात्मक अध्ययन का काम आगे बढ़ायें।

6. विश्व मानव एकता सम्मेलन धार्मिक नेताओं तथा योग्य – शिक्षकों को आमंत्रित करे ताकि उनके तरीकों का तुलनात्मक अध्ययन हो सके। इसके लिए विभिन्न धार्मिक नेताओं के अनुयाइयों के व्यापक सम्मेलन भी हों।

प्रस्ताव क्रमांक (3)

विश्व मानव एकता सम्मेलन का निश्चय है कि यूनेस्को से इस बात का अनुरोध किया जाये कि वह संसार के युवकों को संसार के धर्मो में व्याप्त एक जैसे आचरणीय प्रतिमानों को समझने के लिए प्रोत्साहित करे। इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक दूसरे के धार्मिक मतों का व्यवस्थित अध्ययन हो तथा वर्तमान मानवता की नैतिक आधार भूमि में उनकी देन का अनुमोदन किया जाये। सामान्य जनों के लिए सूचना – प्रसारण की दृष्टि एवं श्रव्य (सुने जाने वाले) साधनों द्वारा इन बातों के प्रचार को प्रोत्साहित करे।

प्रस्ताव क्रमांक (4)

विश्व मानव एकता सम्मेलन इस मन्तव्य को गहरे विश्वास के साथ अंकित करता है कि विश्व के एक अवयव के रूप में सारी मानवता एक है। एक व्यक्ति का सुख दुख सारी मानवता को प्रभावित करता है।

***

सम्मेलन का विश्वास है कि मानवीय एकता का आधार प्रेम पर आधारित आध्यात्मिक जागृति है।[196]

अध्याय 9

भारतीय संसद को संबोधन – 1 अगस्त, 1974

हम कौन हैं, हम चेतन – स्वरूप आत्मा हैं; हम इस शरीर के चलाने वाले हैं । यह मशीनरी हम से चलती है जिसे प्रभु कंट्रोल करता है । यह सारा परमात्मा का पसारा है परन्तु प्रभु ईंटों – पत्थरों के मंदिरों में नहीं रहता । मैंने इग्लैंड में जब यही बात कही तो एक बिशप उठ खड़ा हुआ। जब भी महापुरुष आए तब उन्होंने कहा कि सब मानव बराबर हैं। हम उसी प्रभु की संतान हैं और उसी एक की उपासना अलग अलग ढंग से करते हैं । महापुरुषों के जाने के बाद समाज बने । 'ध र्म' शब्द का मतलब है – वापस प्रभु के साथ जुड़ना । सामाजिक संस्थाएं इसी उच्च उद्देश्य से बनीं कि ज्यादा से ज्यादा लोग इस मनुष्य तन से पूरा लाभ उठा सकें । सभी धर्मो का मूलतत्व समान है; उनमें अंतर केवल जलवायु, आचार – विचार, संस्कृति, रीति – रिवाजों आदि में भेद के कारण हैं ।[197]

हरिद्वार में पिछले दिनों हुए कुंभ मेले में मैंने वहां इकट्ठे हुए सभी साधुओं से कहा कि मनुष्य के तौर पर हम सब एक समान हैं, कोई ऊंच – नीच नहीं । मैंने उन्हें यह भी कहा कि पुराने ज़माने में हर 12 वर्ष बाद एक त्यौहार मनाया जाता था जिसमें ब्रह्म पर विचार के अलावा जीवन के तौर – तरीकों तथा देश में पनप रही कठिनाइयों के हल करने पर विचार – विमर्श हुआ करता था । मैंने फिर बताया कि भारत समेत सारी दुनिया इस समय एक अत्यंत कठिन दौर से गुज़र रही है जिसमें मदद करना हमारा भी कर्तव्य है । हमारा घर जल रहा है । प्रधानमंत्री और पूरा शासकीय तंत्र पूरी तनदेही से इन कठिनाइयों से मुकाबला कर रहा है लेकिन एक आम आदमी के तौर पर हम असफल

हो रहे हैं। फिर भी, "हे प्रभु, अब सब तेरे ही हाथ में है।" गुरु नानक देव जी ने भी प्रभु से प्रार्थना की कि संसार में आग लगी हुई है, किसी तरह इन कठिनाइयों से हमें उबार । मैंने उन्हें बताया कि संतों को प्रभु के निकट माना जाता है । मैंने आपके सम्मुख सारी समस्या रख दी है, मेरा काम पूरा हो गया। इस से प्रभावित होकर उन्होंने परस्पर सहयोग के लिए सर्वसम्मति से एक कमेटी का गठन किया है । उन्होंने सरकार की कारगुज़ारी की प्रशंसा की ।[198]

अब हमारे सामने दो बातें हैं: एक तो यह कि हमने जो धर्म – संप्रदायों के आवरण ओढ़ रखे हैं और अपने आपको भारतीय मानने की जगह पहले हिन्दु – मुसलमान समझते हैं, वह त्यागना होगा । सबसे पहले हम इन्सान हैं और बाद में वह जैसे हमने लेबल लगा रखे हैं । फिर देश के प्रति हमारे कर्त्तव्य आते हैं, हमें देशभक्त होना चाहिए । फिर हम सब को मिल कर सारे समाज को मानव एकता का अहसास कराने का प्रयास करना चाहिए । यह तभी संभव होगा जब चारों ओर सही – नज़री होगी।[199]

***

अध्याय 10

अगस्त 1974 के प्रवचन

मैं चाहता हूँ आप सभी स्वतंत्र रहें – शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सभी स्तरों पर । निर्भरता घोर अपराध के समान है । कभी किसी पर निर्भर न रहें । आपकी मदद के लिए बाहर से सहायता मिल सकती है। सत्गुरु कहता है, "मैं आपके भीतर ही हूँ, अंदर आओ ।"[200]

स्वतंत्रता दिवस मनाने का सबसे अच्छा तरीका है बाहरी बंधनों से मुक्ति पाना । शरीर की इस तंग गुफा से बाहर आकर अंतर्मुख हो जाएं । इससे आप सभी तरह के बंधनों से मुक्ति पा जाओगे । अत: इस तरह उस शक्ति के संपर्क में आओ जिसे हम प्रभु कहते हैं ।[201]

अभी आप सब बँधे हुए हैं, अपने अतीत के गुलाम हैं। कठिनाई यदि है तो वह आपके भीतर है । अभी घोर अंधकार है । आँखें बंद करने पर आपको कुछ दिखता नहीं । हमारा अंतर्चक्षु खुलना चाहिए । यह अंतर की आंख वही खोल सकता है जिसका खुद का अंतर्चक्षु खुला हुआ है । कैसे? अपना ध्यान अंतर सामने नज़र आ रहे अंधकार के बीचों – बीच केन्द्रित करो । वहां जो नज़र आए, उसे लगातार, बारीक – बीनी से देखते रहो कि वहां क्या है? फिर वहां ज्योति प्रकट होगी, आपकी अंतरीय आंख खुलेगी । 'अगर आप की दो से एक आंख बन जाए तो आपका सारा शरीर प्रकाशमान हो जाएगा।' यह एक पहलू है । दूसरा है, सत्गुरु का प्रकट होना और अंतिम है पूर्ण मुक्ति।[202]

यह विचार बहुत अच्छा है। सुबह को करना ठीक है। बैठ जाओ परंतु आप यहां दोबारा मुझे नहीं पाएंगे। मैं कुछ ही दिनों के लिए

हूँ।

यदि आप उसे अंतर में चाहते हैं तो ठीक है । शुरू में कुछ समय के लिए बाहर बैठकर अभ्यास करना ठीक है, लेकिन स्वतंत्र रूप से भजन करना हमेशा अच्छा होता है । आप जो चाहते हैं वे सवाल पूछिए । यदि आप सत्गुरु को अंतर में पाना चाहते हैं तो उसे बाहर क्यों ढूंढ रहे हो? ग्रहणशीलता विकसित करो।[203]

सौ प्रतिशत हुक्म मानना तथा ग्रहणशीलता बढ़ाना। तब आपको सौ प्रतिशत सफलता मिलेगी ।[204]

***

अध्याय 11

References

1. Don't Forget Him	The Light of Kirpal
2. The Ocean of Intoxication	Sat Sandesh Eng., 1975/04
3. The Ocean of Intoxication	Sat Sandesh Eng., 1975/04
4. Celebrate a True Birthday	Sat Sandesh Eng., 1970/02
5. The Most Natural Way	Sat Sandesh Eng., 1971/08
6. A Thief in the Form of a Friend	Sat Sandesh Eng., 1975/02
7. A Thief in the Form of a Friend	Sat Sandesh Eng., 1975/02
8. ?	
9. The Coming Spiritual Revolution	Sat Sandesh Eng., 1973/03
10. Be True To Your Own Self	Sat Sandesh Eng., 1976/06
11.Be True To Your Own Self	Sat Sandesh Eng., 1976/06
12. The Power of Ojas	Sat Sandesh Eng., 1974/11
13. He Came to Make Us Satsangis	Sat Sandesh Eng., 1968/04
14. Be True To Your Own Self	Sat Sandesh Eng., 1976/06
15. Be True To Your Own Self	Sat Sandesh Eng., 1976/06
16. Within This Mortal Form	Sat Sandesh Eng., 1974/09
17. On Lust and Anger	Sat Sandesh Eng., 1975/06
18. The Word Made Flesh	Sat Sandesh Eng., 1970/12
19. The Power of Ojas	Sat Sandesh Eng., 1974/11
20. Mind Your Own Business	Remembrance 1988/7 + 8
21. Mind Your Own Business	Remembrance 1988/7 + 8
22. What is True Darshan	Sat Sandesh Eng., 1973/07
23. Enter at the Strait Gate	Sat Sandesh Eng., 1974/07
24. A Thief in the Form of a Friend	Sat Sandesh Eng., 1975/02
25. To Gain His Pleasure	Sat Sandesh Eng., 1970/12
26. Decide Your Aim in Life	Sat Sandesh Eng., 1975/05
27. What is True Living?	Sat Sandesh Eng., 1975/10
28. Be True To Your Own Self	Sat Sandesh Eng., 1976/06
29. What is True Living?	Sat Sandesh Eng., 1975/10
30. Love is the Way	Sat Sandesh Eng., 1976/02
31. How I Met My Master	Sat Sandesh Eng., 1975/07
32. To Celebrate a True Birthday	Sat Sandesh Eng., 1970/02
33. To Celebrate a True Birthday	Sat Sandesh Eng., 1970/02
34. The Gift of the Living Master	Sat Sandesh Eng., 1973/01
35. The Night is a Jungle	Sat Sandesh Eng., 1971/04
36. The Jewel of Infinite Value	Sat Sandesh Eng., 1970/10
37. To Gain His Pleasure	Sat Sandesh Eng., 1970/12
38. To Gain His Pleasure	Sat Sandesh Eng., 1970/12
39. Decide Your Aim in Life	Sat Sandesh Eng., 1975/05
40. Right Understanding exalted	Sat Sandesh Eng., 1972/06
41. How I Met My Master	Sat Sandesh Eng., 1975/07

42. ?
43. How I Met My Master — Sat Sandesh Eng., 1975/07
44. How I Met My Master — Sat Sandesh Eng., 1975/07
45. How I Met My Master — Sat Sandesh Eng., 1975/07
46. Don't you want to go home? — Sat Sandesh Eng., 1975/01
47. What is True Darshan — Sat Sandesh Eng., 1973/07
48. Life is a Game of Chaupar — Sat Sandesh Eng., 1972/01
49. The Temple of God — Sat Sandesh Eng., 1970/03
50. The Night is a Jungle — Sat Sandesh Eng., 1971/04
51. The Heart's True Yearning — Sat Sandesh Eng., 1973/04
52. Be True To Your Own Self — Sat Sandesh Eng., 1976/06
53. To Celebrate a True Birthday — Sat Sandesh Eng., 1970/02
54. Blessed are the Pure in Heart — Sat Sandesh Eng., 1974/02
55. Change Your Habits Now — Sat Sandesh Eng., 1971/02
56. Don't you want to go home? — Sat Sandesh Eng., 1975/01
57. Chastity and Forgiveness — Sat Sandesh Eng., 1968/01
58. Never Dance to the World's tune — Sat Sandesh Eng., 1971/12
59. God hears the Cry from the Heart — Sat Sandesh Eng., 1976/01
60. Extracts from Circular No.8 — Sat Sandesh Eng., 1970/11
61. Guru, Gurudev and Satguru — The Night is a Jungle
62. He Came to Make Us Satsangis — Sat Sandesh Eng., 1968/04
63. Little Little Things — Sat Sandesh Eng., 1973/02
64. How I Met My Master — Sat Sandesh Eng., 1975/07
65. Decide Your Aim in Life — Sat Sandesh Eng., 1975/05
66. The Gift of the Living Master — Sat Sandesh Eng., 1973/01
67. Guru, Gurudev and Satguru — The Night is a Jungle
68. Three Questions — Sat Sandesh Eng., 1976/07
69. Your Life Should Show Criteria — Sat Sandesh Eng., 1974/05
70. The Jewel of Infinite Value — Sat Sandesh Eng., 1970/10
71. Decide Your Aim in Life — Sat Sandesh Eng., 1975/05
72. How I Met My Master — Sat Sandesh Eng., 1975/07
73. Decide Your Aim in Life — Sat Sandesh Eng., 1975/05
74. How I Met My Master — Sat Sandesh Eng., 1975/07
75. Mind Your Own Business — Remembrance 1988/7 + 8
76. Decide Your Aim in Life — Sat Sandesh Eng., 1975/05
77. True Master and His Mission — Sat Sandesh Eng., 1968/05
78. The Message of Christmas Day — Sat Sandesh Eng., 1974/12
79. Love is the Way — Sat Sandesh Eng., 1976/02
80. The Ocean of Intoxication — Sat Sandesh Eng., 1975/04
81. Dyed in the Color of God — Sat Sandesh Eng., 1976/09
82. Love is the Way — Sat Sandesh Eng., 1976/02
83. The Ocean of Intoxication — Sat Sandesh Eng., 1975/04
84. The Message of Christmas Day — Sat Sandesh Eng., 1974/12
85. The Mind Replies to the Soul — Sat Sandesh Eng., 1971/10

86. It is called Gurubhakti — Sat Sandesh Eng., 1975/08
87. Be True To Your Own Self — Sat Sandesh Eng., 1976/06
88. It is called Gurubhakti — Sat Sandesh Eng., 1975/08
89. Be True To Your Own Self — Sat Sandesh Eng., 1976/06
90. ?
91. Be True To Your Own Self — Sat Sandesh Eng., 1976/06
92. Be True To Your Own Self — Sat Sandesh Eng., 1976/06
93. What is a True Satsangi — Sat Sandesh Eng., 1976/03
94. The Message of Christmas Day — Sat Sandesh Eng., 1974/12
95. God hears the Cry from the Heart — Sat Sandesh Eng., 1976/01
96. Spirituality, no Spiritualism — Sat Sandesh Eng., 1976/11
97. The Whole System is Wrong — Sat Sandesh Eng., 1975/11
98. The Gift of the Living Master — Sat Sandesh Eng., 1973/01
99. True Master and His Mission — Sat Sandesh Eng., 1968/05
100. He Came to Make Us Satsangis — Sat Sandesh Eng., 1968/04
101. Guru, Gurudev and Satguru — Sat Sandesh Eng., 1968/02
102. Spirituality the Only Answer — Sat Sandesh Eng., 1970/05
103. Be True To Your Own Self — Sat Sandesh Eng., 1976/06
104. How I Met My Master — Sat Sandesh Eng., 1975/07
105. Enter at the Strait Gate — Sat Sandesh Eng., 1974/07
106. Inn of Madness — Sat Sandesh Eng., 1972/04
107. To Gain His Pleasure — Sat Sandesh Eng., 1970/12
108. Out of Bondage — Sat Sandesh Eng., 1970/01
109. The Temple of God — Sat Sandesh Eng., 1970/03
110. What is True Living? — Sat Sandesh Eng., 1975/10
111. From Poison to Purity — Sat Sandesh Eng., 1974/06
112. The Mind Replies to the Soul — Sat Sandesh Eng., 1971/10
113. Who is High, Who is Low? — Sat Sandesh Eng., 1972/03
114. The Thousand-Headed Serpent — Sat Sandesh Eng., 1970/11
115. The Esoteric Site of Religion — Talk in Grand Rapids, MI, Oct 29,1963
116. The Gift of the Living Master — Sat Sandesh Eng., 1973/01
117. Chastity and Forgiveness — Sat Sandesh Eng., 1968/01
118. A Matter of Death and Life — Sat Sandesh Eng., 1970/06
119. The Message of Christmas Day — Sat Sandesh Eng., 1974/12
120. The Temple of God — Sat Sandesh Eng., 1970/03
121. Mind Your Own Business — Remembrance 1988/7 + 8
122. Prayer — The Light of Kirpal
123. Die Before Death — Sat Sandesh Eng., 1971/05
124. Inn of Madness — Sat Sandesh Eng., 1972/04
125. Die Before Death — Sat Sandesh Eng., 1971/05
126. Enter at the Strait Gate — Sat Sandesh Eng., 1974/07
127. The Thousand-Headed Serpent — Sat Sandesh Eng., 1970/11
128. No New Faith, Mind That — Sat Sandesh Eng., 1976/12

129. Joyfully I Surrender Sat Sandesh Eng., 1972/02
130. A Thief in the Form of a Friend Sat Sandesh Eng., 1975/02
131. Mind Your Own Business Remembrance 1988/7 + 8
132. Enter at the Strait Gate Sat Sandesh Eng., 1974/07
133. I am Thine, Thou art not mine Sat Sandesh Eng., 1971/03
134. Guru, Gurudev and Satguru Sat Sandesh Eng., 1968/02
135. Your Life Should Show Criteria Sat Sandesh Eng., 1974/05
136. Solve the Mystery of Life Sat Sandesh Eng., 1973/10
137. Your Life Should Show Criteria Sat Sandesh Eng., 1974/05
138. Your Life Should Show Criteria Sat Sandesh Eng., 1974/05
139. Your Life Should Show Criteria Sat Sandesh Eng., 1974/05
140. What is True Living? Sat Sandesh Eng., 1975/10
141. Right Understanding exalted Sat Sandesh Eng., 1972/06
142. To Gain His Pleasure Sat Sandesh Eng., 1970/12
143. To Gain His Pleasure Sat Sandesh Eng., 1970/12
144. To Gain His Pleasure Sat Sandesh Eng., 1970/12
145. To Gain His Pleasure Sat Sandesh Eng., 1970/12
146. Who is High, Who is Low? Sat Sandesh Eng., 1972/03
147. To Gain His Pleasure Sat Sandesh Eng., 1970/12
148. The Word Made Flesh Sat Sandesh Eng., 1970/12
149. Enter at the Strait Gate Sat Sandesh Eng., 1974/07
150. The Most Natural Way Sat Sandesh Eng., 1971/08
151. To Gain His Pleasure Sat Sandesh Eng., 1970/12
152. Three Questions Sat Sandesh Eng., 1976/07
153. Be True To Your Own Self Sat Sandesh Eng., 1976/06
154. The Esoteric Site of Religion Talk in Grand Rapids, MI, Oct 29,1963
155. Life is a Game of Chaupar Sat Sandesh Eng., 1972/01
156. No New Faith, Mind That Sat Sandesh Eng., 1976/12
157. Spirituality the Only Answer Sat Sandesh Eng., 1970/05
158. The Ocean of Intoxication Sat Sandesh Eng., 1975/04
159. The Whole System is Wrong Sat Sandesh Eng., 1975/11
160. Spirituality, no Spiritualism Sat Sandesh Eng., 1976/11
161. The Temple of God Sat Sandesh Eng., 1970/03
162. Love is the Way Sat Sandesh Eng., 1976/02
163. Be True To Your Own Self Sat Sandesh Eng., 1976/06
164. The Coming Spiritual Revolution Sat Sandesh Eng., 1973/03
165. No New Faith, Mind That Sat Sandesh Eng., 1976/12
166. The Whole System is Wrong Sat Sandesh Eng., 1975/11
167. Spirituality the Only Answer Sat Sandesh Eng., 1970/05
168. No New Faith, Mind That Sat Sandesh Eng., 1976/12
169. Are You Even Half a Disciple? Sat Sandesh Eng., 1972/09
170. Guru, Gurudev and Satguru Sat Sandesh Eng., 1968/02
171. How I Met My Master Sat Sandesh Eng., 1975/07

172. The Whole System is Wrong Sat Sandesh Eng., 1975/11
173. No New Faith, Mind That Sat Sandesh Eng., 1976/12
174. Be True To Your Own Self Sat Sandesh Eng., 1976/06
175. Dyed in the Color of God Sat Sandesh Eng., 1976/09
176. Love is the Way Sat Sandesh Eng., 1976/02
177. The Gift of the Living Master Sat Sandesh Eng., 1973/01
178. The Gift of the Living Master Sat Sandesh Eng., 1973/01
179. All the World is a play (Talk given in India before departure) The Third World tour of Kirpal Singh (p.31)
180. Masters come to fulfil (Cologne, West Germany, Aug. 26, 1972) " (p.37)
181. Masters come to fulfil (Cologne, West Germany, Aug. 26, 1972) " (p.38)
182. Darshan in North Carolina (October 4, 1972) " (p.39)
183. Darshan in North Carolina (Oct. 4, 1972) " (p.40)
184. Do not Bend your elbows (Fair fax, Virginia, Sept. 25, 1972) " (p.67)
185. Little Little Things (Chicago, Illinois, Nov. 1, 1972) " (p.134)
186. Little Little Things (Chicago, Illinois, Nov. 1, 1972) " (p.134,135)
187. Little Little Things(Chicago, Illinois, Nov. 1, 1972) " (p.137)
188 Solve the Mystery of Life Sat Sandesh Eng., 1973/10
189 आपकी रोशनी से हजारों दीपक जगेंगे सत्संदेश हिन्दी 1973/11(पृष्ठ 8)
190 विश्व मानव एकता सम्मेलन के खुले अधिवेशन में हजूर संत कृपाल सिंह जी महाराज का अध्यक्षीय भाषण सत्संदेश हिन्दी 1974/1-2 (पृष्ठ 27)
191 विश्व मानव एकता सम्मेलन का ऐतिहासिक जलूस सत्संदेश हिन्दी 1974/3-4 (पृष्ठ 7-8)

जीवन – चरित्र

192	विश्व मानव एकता सम्मेलन के खुले अधिवेशन में हजूर संत कृपाल सिंह जी महाराज	सत्संदेश हिन्दी 1974/1-2 (पृष्ठ 28)	
193	विश्व मानव एकता सम्मेलन की तीसरी बैठक	सत्संदेश हिन्दी 1974/3-4 (पृष्ठ 26-27)	
194	विश्व मानव एकता का खुला अधिवेशन	सत्संदेश हिन्दी 1974/3-4 (पृष्ठ 29)	
195	Your Life Should Show Criteria	Sat Sandesh Eng., 1974/5	
196	विश्व मानव एकता सम्मेलन के प्रस्ताव	सत्संदेश हिन्दी 1974/3-4 (पृष्ठ 66-67)	
197.	भारतीय संसद को संबोधन (1 अगस्त 1974)	कृपाल दया के सजीव सागर (दिल से दिल की बात, भाग-4)	(पृष्ठ 3)
198	,,	,,	(पृष्ठ 5)
199	,,	,,	(पृष्ठ 7)
200	मैं आपके भीतर हूँ और आपको आजाद करने आया हूँ (14 अगस्त, 1974)	,,	(पृष्ठ 131)
201	,,	,,	(पृष्ठ 131)
202	वास्तविक स्वतंत्रता आपके भीतर की है (15 अगस्त, 1974-सवेरे)	,,	(पृष्ठ 140)
203	सभी प्याले भरे हुए हैं (15 अगस्त, 1974-शाम)	,,	(पृष्ठ 148)
204	सत्गुरु आपको नीचे नहीं गिरने देगा, यह बात पक्की है (17 अगस्त, 1974)	,,	(पृष्ठ 159)

***

भाग – 2

भाग – 2

अध्याय – 12

प्रसिद्ध तिथियां व घटनाएं

1894:

– 6 फरवरी – कृपाल सिंह का जन्म 6 फरवरी को सैयद कसरां, जिला रावलपिंडी (अब पाकिस्तान) में हुआ। इनके पिता का नाम हुक्म सिंह और माता का नाम गुलाब देवी था। वे तीन भाइयों में सबसे छोटे थे। सबसे बड़े भाई का नाम प्रेम सिंह और उससे छोटे का नाम जोध सिंह था। आपका पालन-पोषण एक सिख घराने में हुआ।

– अक्तूबर – बाबा जैमल सिंह बीबी रुक्को के साथ मरी की पहाड़ियों में कोहमरी (अब पाकिस्तान) सड़क से गुजरे जहां हजूर बाबा सावन सिंह बतौर एस0 डी ओ0 सरकारी काम की निगरानी कर रहे थे।

– 15 अक्तूबर – बाबा जैमल सिंह जी ने बाबा सावन सिंह जी को नाम दान दिया।

1898:

– बाबा जैमल सिंह जी ने ब्यास नदी के किनारे डेरा बाबा जैमल सिंह की नींव रखी।

1899:

– कृपाल सिंह जी ने एडवर्डज़ चर्च मिशन हाई स्कूल, कोहाटी गेट, पेशावर में प्रवेश लिया।

1903 :

– 29 दिसंबर – बाबा जैमल सिंह जी ने चोला छोड़ा।

1906:

– कृपाल सिंह जी ने रामानुज का जीवन वृत्तान्त पढ़ा तो उनके मन में ख्याल आया कि अगर रूहानियत की यह दौलत कभी मुझे प्राप्त हुई तो मैं भी उसी तरह लुटा दूंगा जिस तरह रामानुज ने लुटाई थी।

1908:

– एक दिन आप एक बजुर्ग नास्तिक, दरबारी लाल से पेशावर के शाही बाग में मिले तो उसने पूछा, "शाही बाग कहां है?" "जहां तुम इस वक्त खड़े हो, यही शाही बाग है," आपने उत्तर दिया। यह बात सुनकर वह बोला, "यहां तो कुछ पेड़ हैं, कुछ पौधे और झाड़ियां हैं। यह शाही बाग कैसा?" आप उसके इशारे को समझ गए और उससे पूछा, "आप क्या साधन करते हैं?" उसने भृकुटियों के मध्य माथे पर हाथ रखा और कहने लगा, "असली शाही बाग यहां है– दोनों भृकुटियों के मध्य आंखों के पीछे।"

– आपको देव गुरु भगवान के बेटे ने पेशावर में देव समाज की अन्तरंग सभा में शामिल होने का निमन्त्रण दिया।

– आप पेशावर में बाबा काहन से मिले तथा बाद में भी मिलने जाते रहे। बाबा सावन सिंह जी भी इस फकीर के पास जाया करते थे।

– "हमारे हजूर भी पेशावर में बाबा काहन के पास जाया करते थे। मैं अपने विद्यार्थी जीवन में बाबा काहन के पास जाया करता था।" (Morning Talks, p.139).

1908 – 09:

– "जब मैं नौवीं कक्षा में पढ़ता था तो अध्यापक को मुझ पर इतनी तसल्ली थी कि वह अपनी अनुपस्थिति में उस कक्षा को पढ़ाने के लिए मेरे पास छोड़ देता था जिसमें मैं विद्यार्थी था।" (The light of

Kirpal, p.423)

– "जब मैं स्कूल में पढ़ता था तो प्रोफैसर रेखागणित का एक प्रश्न कक्षा में लाया और कहा कि यह रेखागणित का प्रश्न हम पिछले वर्ष से हल नहीं कर सके। उसने मुझे और एक या दो और विद्यार्थियों को कहा, "कल रविवार है, कल इसे हल करने की कोशिश करो।" अगली सुबह मैं बैठ गया। पहले तो प्रश्न को मैंने एक लम्बे तरीके से हल किया और फिर एक छोटे तरीके से। सोमवार को हम स्कूल गए तो उन्होंने (अध्यापक ने) पूछा, "क्या तुम किसी नतीजे पर पहुंचे? क्या तुमने इस प्रश्न को हल कर लिया है?" मैंने जवाब दिया, "हां, मैंने इसे दो तरीकों से हल किया है।" फिर मैंने इसे बोर्ड पर हल कर के दिखाया। अध्यापक कुदरती तौर पर ऐसे विद्यार्थियों को पसन्द करते हैं।" (The Light of Kirpal, P.161)

1911:

– उनकी शादी कृष्णावन्ती से हुई।

– आपको अपनी माता गुलाब देवी के देहान्त का 6 महीने पहले ही एहसास हो गया था और आप ने उन्हें दुनियावी लगाव छोड़ने को कहा था।

– बाबा सावन सिंह जी सरकारी सेवा से रिटायर हो कर स्थायी तौर पर डेरा बाबा जैमल सिंह, ब्यास में रहने लगे।

1912:

– कृपाल सिंह जी ने पेशावर में मिलिट्री इंजीनियरिंग सर्विस जाइन की।

– कृपाल सिंह जी की बदली लेखा विभाग, लाहौर हो गई।

– आपने एक ठेकेदार से रिश्वत लेने से इन्कार कर दिया और कहा कि सरकार मुझे इस काम की तनखाह देती है।

– कृपाल सिंह जी ने एक युवा स्त्री को दम तोड़ते देखा और एक बूढ़े आदमी का शव भी चिता पर देखा। श्मशान भूमि में आपने

मुन्शी गुलाब सिंह की समाधि पर अंकित यह लेख भी पढ़ा:

"ऐ जाने वाले देख जरा, हम भी तेरी तरह जमीन पर चलते – फिरते इन्सान थे लेकिन आज खाक होकर इस पत्थर के नीचे दबे पड़े हैं।"

एक के बाद एक इन तीन घटनाओं की कृपाल सिंह जी के दिल पर गहरी चोट लगी। सारी सारी रात वे जिन्दगी के रहस्य पर विचार करते रहते।

– "1911 या 1912 में मैं अपने दिल की हालत बताता हूँ। उन दिनों मेरे अन्तर प्रभु को पाने की प्रबल इच्छा थी। एक बार मुझे एक दम तोड़ रही जवान स्त्री के पास बैठने का मौका मिला जिसका मुझ पर बड़ा प्रभाव पड़ा। जीवन की पवित्रता के कारण मुझ में यह गुण आ गया था कि मैं भविष्य को पढ़ लेता था लेकिन जीवन का रहस्य अभी नहीं खुला था। दम तोड़ रही स्त्री का दृश्य जैसे ही मेरी आंखों के सामने हुआ तो उसने मेरे दिल की तड़प को और बढ़ा दिया। मैंने यह महसूस किया कि कोई चीज इस में से निकल गई है लेकिन मैं समझ नहीं सका कि यह क्या चीज़ है। मृत्यु शैया पर पड़ी स्त्री ने शरीर छोड़ने से पहले अपने मित्रों और रिश्तेदारों को बुलाया। एक पल में ही उसने अपनी आंखें बन्द कर लीं जो फिर न खुल सकीं। मेरी हाजरी में उस ने कैसे अन्तिम सांस ली, यह देख कर मैं उलझन में पड़ गया। मैं अपने सामने मृतक शरीर को देख कर दंग रह गया। प्राण – शक्ति उसमें से निकल गई थी और मुझ में वह अभी काम कर रही थी। मैं शव – यात्रा में दूसरे लोगों के साथ श्मशान भूमि तक गया। रास्ते में मेरी आंखों ने शव को देखा परंतु कुछ हल न निकाल सकीं। विद्वान और अकलमंद लोग भी इस रहस्य को नहीं सुलझा सके। श्मशान पहुंच कर मैंने एक बूढ़े आदमी के शव को चिता पर रखे देखा। उस चिता के पास ही एक चिता पर उस युवा स्त्री को देखा जिसे हम अपने कंधों पर उठा कर लाए थे। दोनों घटनाओं में काफी फर्क था – –एक जवान और एक बूढ़ा। इस घटना से मेरे दिल पर और गहरी चोट लगी। कोई भी मौत के चुंगल से नहीं बच

सकता। दोनों मेरे सामने मृतक पड़े थे और मैं जानना चाहता था कि जिन्दगी क्या है।" (Search for Truth, Sat Sandesh Eng., March, 1969)

– "जब मैंने स्कूल की पढ़ाई पूरी की तो मुझे फैसला करना था, क्या? मेरे सामने दो चीजें थीं – परमात्मा और दुनिया। मुझे तकरीबन 7 या 8 दिन लगे, एक रात सुनसान जगह पर बैठे मुझे ख्याल आया कि मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है। मैं आपसे उस प्रश्न के बारे में बात कर रहा हूँ जो मुझे 1912 में आया। मैंने निर्णय किया – कि प्रभु पहले और दुनिया उसके बाद।" (The Light of Kirpal, p.209)

1912:

– एक बार कृपाल सिंह जी के पास केवल एक आना (1/16 रुपये) रह गया था जबकि वेतन मिलने में अभी एक सप्ताह बाकी था। पूरा सप्ताह आपने उस एक आने के भुने चने खाकर और पानी पीकर गुजारा किया तथा जीवन में कभी किसी से उधार नहीं मांगा।

1915:

– "हजूर के चरणों में जाने से काफी समय पहले 1915 में मुझे बुखार आया जो तकरीबन आठ महीने रहा। मैं मुंह ढांप कर प्रभु की याद में लेटा रहता था। ("Be True to Your Own Self," Sat Sandesh, Eng,. June, 1976).

1917:

– **मई** – अपने अभ्यास के दौरान आप को भविष्य में 7 साल बाद बनने वाले अपने सत्गुरु बाबा सावन सिंह जी के अंतर में दर्शन होने शुरू हो गए जिन को आप गुरु नानक समझते थे। शायद यह आपके पिता के आर्शीवाद का फल था जो उन्होंने आप को बुढ़ापे में बीमारी के समय सेवा के बदले दिया था।

– "मेरा असली जन्म 1917 में हुआ जिस दिन मैं अपने शरीर

से ऊपर उठ कर हजूर के साथ दिव्य मण्डलों की सैर करने लगा।" ("To Celebrate a true Birthday," Sat Sandesh Eng., Feb., 1970).

1919:

– कृपाल सिंह जी ने लाहौर में एक समाज सेवा कोर तैयार की जो एनफ्लुएंजा की बीमारी के शिकार लोगों की देखभाल करती थी। यह बीमारी 1918 में सारे भारत में फैल गई थी। यह संगठन इस बीमारी से गुजरे लोगों के शवों के दाह – संस्कार का काम भी करता था।

1921:

– कृपाल सिंह जी की बदली डेरा इस्माइल खां में 36 सिख रेजीमेंट में बतौर लेखा अफसर हो गई। वहां एक भयानक डाकू ने, जो भारतीय कमांडिंग अफसर का अंगरक्षक था, दहशत फैला रखी थी, लेकिन कृपाल सिंह जी की गैरहाजिरी में वह उनके निवास स्थान की सफाई किया करता था। एक दिन जब अचानक ही वह कृपाल सिंह जी को कमरे के पास मिला तो उसने हाथ जोड़कर कहा कि जब मैं आपको देखता हूँ तो मेरे सारे पाप मेरी आंखों के सामने आ जाते हैं और मैं कांपने लगता हूं। कृपाल सिंह जी ने उसे प्रभु का सिमरण करने को कहा और उसकी मदद की जिससे कि उसकी जिंदगी बदल गई।

– 14 सितंबर – बेटे दर्शन सिंह का जन्म कौंटरीला, जिला रावलपिंडी में हुआ।

1924:

– फरवरी – लाहौर में रहते समय कृपाल सिंह जी के मन में ब्यास दरिया देखने का विचार आया। एक रविवार को सुबह आप ब्यास रेलवे स्टेशन पहुंचे। स्टेशन मास्टर से पता चला कि दरिया के किनारे एक संत भी रहते हैं। कृपाल सिंह जी ने डेरे की राह ली। वहां आप बाबा सावन सिंह जी से मिले और जान गए कि ये तो वही महापुरुष हैं जिनके

मैं सात साल (1917 से 1924 तक) से अन्तर में दर्शन कर रहा हूँ। उसी महीने इन को नाम दान मिल गया।

1927:

– उन्होंने हजूर बाबा सावन सिंह जी के चोला छोड़ने का दृश्य अन्तर में देखा जब कि वास्तव में बाबा जी ने 21 साल बाद 1948 में चोला छोड़ा।

1929:

– बेटे जसवन्त सिंह का जन्म।

– कृपाल सिंह जी को उनके सत्गुरु ने लाहौर में एक केंद्रीय स्थान पर सत्संग करने का हुक्म दिया।

– एक बार बाबा सावन सिंह जी संत कृपाल सिंह जी के गांव सैयद कसरां गए। सत्संग के बाद वहां स्कूल के हैडमास्टर ने खड़े हो कर पूछा, "सरदार साहिब, जहां तक आप अधिकारी लोगों को नाम देते हैं यह तो ठीक है लेकिन जब आप उन लोगों को नाम देते हैं जो इसके अधिकारी नहीं वह ठीक नहीं लगता।" हजूर ने जबाब दिया, "भाई, यदि आप अधिकारी लोगों की बात करते हो तो मैं यकीन से कह सकता हूँ कि मैं भी अधिकारी नहीं था जब बाबा जी ने मुझे नाम की दौलत बख्शी" और कहा, "यदि एक धनवान आदमी अपनी दौलत गरीबों को लुटाना चाहता है तो इससे किसी को कोई एतराज नहीं होना चाहिए।"

– एक बार हजूर सत्संग के लिए गांव सैयद कसरां गए। वहां भारी इकट्ठ था। अकालियों ने भी हजूर के मिशन के विरूद्ध एक बड़ा दीवान सजाया था। सत्संग के बाद सुबह और शाम लोग लंगर छकते थे। एक दिन दोपहर के 2 बजे के बाद जब लंगर की सेवा समाप्त हो चुकी तो सैंकड़ों अकाली भाई आए और लंगर छकना चाहा ताकि इन्तजाम करने वालों को परेशानी आए। वे थोड़ी देर भी इंतजार करना नहीं चाहते थे। जब कृपाल सिंह जी को यह घटना बताई गई तो वे

उसी वक्त लंगर घर में आ गए और उन्होंने देखा कि लंगर में कुछ भी नहीं बचा था, इसलिए उन्होंने और लंगर तैयार करने को कहा। अकाली भाइयों ने लंगर जल्दी देने के लिए जोर डाला। उसी वक्त हजूर बाबा सावन सिंह जी लंगर घर में आए और कहा, "कृपाल सिंह, आप इन लोगों को खाना जल्दी से क्यों नहीं देते जब कि लंगर काफी बचा पड़ा है। आप रोटियों की टोकरी उठाओ, इसे कपड़े से ढांप लो और इसी तरह सब्जियों को भी और बांटना शुरू करो।" ऐसे ही किया गया। रोटी और सब्जियां बांटी गई, अकाली भाइयों ने पेट भर खाना खाया और किसी भी चीज की कमी नहीं पाई गई।

– कृपाल सिंह की बदली रावलपिंडी हो गई।

– "शुरू में मैं अभ्यास में बहुत समय देता था। मेरी रावलपिंडी बदली हो गई। पहले दिन जब मैं वहां पहुंचा तो सबको इसका पता लग चुका था कि हजूर का एक शिष्य है लोग ऐसा कुछ कह रहे थे। इस बात का बीबी हरदेवी को भी पता चला जो यहां बैठी है। इससे पहले वह मुझे नहीं जानती थी। लोगों ने कहा कि वह यहां पर है और हजूर का बहुत बड़ा शिष्य है। उसने कहा कि उसमें क्या विशेषता है? वह अभ्यास में हर रोज 6 घंटे बैठता है। उसने कहा, "अच्छा, यदि वह इतने घंटे बैठता है तो मैं भी 6 से 7 घंटे तक भजन की बैठक बनाऊंगी – फिर मैं उससे मिलूंगी।" (How I met My Master, Sat Sandesh Eng,. July, 1975)

1934:

– 30 सितंबर 1 बजे दोपहर – डेरा बाबा जैमल सिंह में बाबा सावन सिंह जी ने बड़े सत्संग घर का नींव – पत्थर रखा।

1935:

– रावी रोड पर लाहौर सत्संग घर की जगह खरीदी गई।

– कृपाल सिंह जी ने 'गुरमत सिद्धान्त' नामक पुस्तक (पंजाबी भाषा में) लिखनी शुरू की जो परमार्थ का एक बड़ा खज़ाना है। यह ग्रंथ

कृपाल सिंह जी की प्रार्थना पर उनके सत्गुरु बाबा सावन सिंह जी के नाम से प्रकाशित हुआ।

1936:

–बाबा सावन सिंह जी ने लाहौर सत्संग घर का नींव पत्थर रखा तथा कृपाल सिंह जी को इसके निर्माण कार्य की जिम्मेदारी सौंपी।

1939:

– कृपाल सिंह जी ने डेरा बाबा जैमल सिंह, ब्यास में बाबा सावन सिंह जी की हाज़िरी में उनके हुक्म से तकरीबन 250 लागों को नामदान दिया।

–11 सिंतबर–बाबा सावन सिंह जी ने आपको एक पत्र लिखकर उत्साहित किया कि सत्संग करो और अभ्यास से आध्यात्मिक तरक्की को पूरा करो। फिर कहा कि मैं आप पर बहुत खुश हूं क्योंकि आप तन, मन, धन से सेवा कर रहे हैं।

1942:

–बाबा सावन सिंह जी डलहौजी का अपना अगला प्रोग्राम रद्द करके जल्दी डेरा ब्यास वापस आ गए। ऐसा उन्होंने कृपाल सिंह जी के पत्र पहुंचने पर किया जिसमें कृपाल सिंह जी ने लिखा था कि उनसे हजूर की और जुदाई सही नहीं जाती।

1944:

–5 सितंबर–उनके बड़े भाई जोध सिंह ने चोला छोड़ा।

1946:

–22 जुलाई–सबसे बड़े भाई प्रेम सिंह भी चलाना कर गए।

1947:

–**मार्च**–कृपाल सिंह जी 36 साल की सेवा के बाद डिप्टी

असिसटैंट कंट्रोलर आफ मिलिट्री एकाऊंटस के पद से रिटायर हुए। आपकी विदायगी पर हरेक की आंखों में आंसू थे। आपको अफसर और अधीनस्थ दोनों प्रेम करते थे और सब ने इनके काम की सराहना की।

–**15 अगस्त**–भारत के बंटवारे के फौरन बाद करीब 150 मुसलमान भाई अकालियों के डर से डेरा ब्यास में बाबा सावन सिंह जी की शरण में आ गए। हजूर ने कृपाल सिंह को कहा कि मुसलमानों के काफिले की तलाश करो जो पाकिस्तान जा रहा हो और इन को हिफाज़त के साथ काफिले में मिला देना।

–**सितम्बर**–बाबा सावन सिंह जी ने डाक्टरी मुआयना कराने के लिए अमृतसर जाने से पहले तीन कमेटियों का गठन किया। पहली कमेटी डेरे के प्रबंध के लिए थी, दूसरी डेरे की जमीन के विकास के लिए और तीसरी सत्संग कमेटी थी जिसका इंचार्ज कृपाल सिंह को बनाया गया था।

–अक्तूबर 11–कृपाल सिंह जी अपने सत्गुरु द्वारा बुलाए जाने पर अमृतसर पहुंचे। एक सप्ताह में बाबा जी की तबीयत में सुधार नजर आया।

–12 अक्तूबर, सुबह 7 बजे–बाबा सावन सिंह जी ने कृपाल सिंह को नाम दान देने का काम सौंपा।

–कृपाल सिंह जी द्वारा पेश की गई रूहानी सत्संग की योजना को बाबा सावन सिंह जी ने स्वीकृति दी। इसमें रूहानियत के बाहरी पर्दो को उतार कर वैज्ञानिक रूप दिया गया।

1948:

–**28 मार्च**–डेरे में हजूर के जीवन काल में कृपाल सिंह जी ने अंतिम सत्संग किया।

–1 अप्रैल–बाबा सावन सिंह जी के साथ संत कृपाल सिंह जी की अन्तिम मुलाकात। बाबा सावन सिंह जी ने अपनी रूहानी दौलत आंखों ही आंखों में संत कृपाल सिंह जी को सौंप दी।

– 2 अप्रैल – हजूर बाबा सावन सिंह जी ने चोला छोड़ दिया।

– 6 अप्रैल – संत कृपाल सिंह जी डेरा ब्यास छोड़ कर दिल्ली के लिए रवाना हो गए। थोड़ी देर बाद आप ऋषिकेश चले गए जहां पांच महीने एकान्तवास में रहे तथा वहां कई महात्माओं से मिले जिनमें श्री शिवानन्द और महर्षि राघवाचार्य प्रमुख थे।

– सितम्बर आरंभ – कृपाल सिंह जी ने अपने सत्गुरु के हुक्म से पहला नाम दान गोपाल दास को दिया।

– 2 दिसम्बर – संत कृपाल सिंह जी ने दिल्ली में अपना मिशन नियमित रूप से नामदान के साथ शुरू किया।

1950:

– हजूर बाबा सावन सिंह जी के निर्देशों के अनुसार रूहानी सत्संग की स्थापना की।

1951:

– 11 जून, शाम – सावन आश्रम, शक्ति नगर, दिल्ली संगत को समर्पित किया गया। दिन बहुत गर्म था और बादल का निशान तक न था लेकिन जब वहां महाराज जी ने पहला सत्संग शुरू किया तो मोटी – मोटी बूंदें पड़ने लगीं। हजूर ने कहा कि सावन ने खुद अपनी दया मेहर की वर्षा की है।

1954:

– दिसम्बर – सत्सन्देश मैगजीन हिन्दी और उर्दू भाषाओं में छपनी शुरू हुई।

1955:

– 31 मई – संत कृपाल सिंह जी ने दिल्ली से पहली विश्व यात्रा शुरू की।

– 5 नवंबर – पहली विश्व यात्रा की समाप्ति के बाद दिल्ली वापस लौटे।

1956:

– 9 दिसंबर – संत कृपाल सिंह जी ने दिल्ली में यूनैस्को के नौवें आम सैशन को सम्बोधित किया। उनका भाषण "World Peace in the Atomic Age"(एटोमिक युग में विश्व शांति) विश्व शांति के लिए मार्गदर्शक है।

1957:

– 17 – 18 नवंबर – विश्व धर्म संघ की पहली कान्Ýस दिल्ली के लाल किले में दीवान – ए – आम हाल में हुई जहां संत कृपाल सिंह जी को सर्वसम्मति से विश्व धर्म संघ का अध्यक्ष चुना गया।

– "इस की दिल्ली में एक बहुत बड़ी कांÝस हुई जिसमें 250 से ज्यादा प्रतिनिधियों को निमंत्रित किया गया। वे अलग अलग धर्मो और देशों से आए और वहां दो लाख से ज्यादा लोग इकट्ठे हुए।" "The Esoteric side of Religion", a talk given in Grand Rapids michigan, Oct, 29, 1963)

1958:

– पाकिस्तान की पहली यात्रा:

– पाकिस्तान में रह रहे शिष्यों की लगातार प्रार्थना पर हजूर 1958 में लाहौर गए और वहां पांच दिन रह कर आध्यात्मिकता का उपदेश दिया। पाकिस्तान में सैंकड़ों मुसलमान सत्संगी भाई सरहद पर हजूर के दर्शनों का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। लाहौर में सत्संगी भाइयों ने हजूर के ठहरने तथा सत्संग का प्रबंध उसी स्थान पर किया हुआ था जहां देश विभाजन से पहले बाबा सावन सिंह जी के शिष्य सत्संग के लिए इकट्ठे हुआ करते थे। हजूर कोठी नं0 31, शालीमार गार्डन – टाऊन में महमूद शौकत जो महाराज जी के पाकिस्तान में मुख्य प्रतिनिधि हैं, के निवास – स्थान पर ठहरे।

1959:

– पाकिस्तान की दूसरी यात्रा:

– लाहौर रेलवे स्टेशन पर हजूर का विशेष स्वागत किया गया और उनके साथ गए किसी भाई – बहन की जांच पड़ताल नहीं की गई। इस बार भी हजूर शौकत के घर ही ठहरे जहां सैकड़ों सत्संगी भाई उन के दर्शनों के लिए पाकिस्तान के अलग अलग भागों से आए हुए थे।

1960:

– दूसरा विश्व धर्म सम्मेलन कलकत्ता में हुआ जिसमें संत कृपाल सिंह जी को सर्वसम्मत्ति से दोबारा विश्व धर्म संघ का अध्यक्ष चुन लिया गया।

1962:

– संत कृपाल सिंह जी पहले गैर ईसाई थे जिन्हें Order of St. John of Jerusalem, Knights of Malta की उपाधि से सम्मानित किया गया।

– 6 अक्तूबर – संत कृपाल सिंह जी को रामलीला कमेटी द्वारा रामलीला ग्राऊंड, दिल्ली में भारत के तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू की हाजिरी में भारत का राट्रीय संत घोषित किया गया।

1963 :

– अप्रैल – पाकिस्तान की तीसरी यात्रा:

– इस बार फिर हजूर शौकत के ही घर ठहरे। पाकिस्तान की सभी यात्राओं में हजूर घर के हरेक कमरे में कम से कम छ: लोगों को बिठाकर नाम देते थे। पुराने सत्संगी भाई अपने पुत्रों और पोतों को दीक्षा दिलवाने के लिए लाए।

1963 :

– **8 जून** – संत कृपाल सिंह जी ने दिल्ली से विश्व की दूसरी

यात्रा शुरू की।

1964:

– **31 जनवरी** – दूसरी विश्व यात्रा समाप्त करके हजूर दिल्ली वापस आए।

1965:

– विश्व धर्म संघ की तीसरी कान्Ý्रस रामलीला ग्राऊंड, दिल्ली में हुई। संत कृपाल सिंह जी को फिर सर्वसम्मति से विश्व धर्म संघ का अध्यक्ष चुना गया।

1968:

– **जनवरी –** सत्संदेश मासिक मैगज़ीन का अंग्रेजी और पंजाबी में प्रकाशन शुरू हुआ।

– **अप्रैल** – हरिद्वार में अर्ध – कुम्भ मेला लगा जिस में हजूर ने कैम्प लगा कर सत्संग किया जिससे मेले में पहुंचे लाखों तीर्थ यात्रियों ने लाभ उठाया।

1969:

– **6 फरवरी** – हीरक जयंती समारोह।

– इस मौके पर अति विशिष्ट सामाजिक, धार्मिक नेताओं तथा श्रद्धालुओं ने हजूर को बधाई दी।

1970:

– 6 फरवरी – मानव केन्द्र, देहरादून का उद्घाटन।

– मानव केंद्र के बारे में एक प्रत्यक्ष – दर्शी भाई ने महाराज जी

की उपस्थिति में घटित निम्नलिखित घटनाएं ब्यान कीं:-

-मानव केंद्र, देहरादून में एक शाम को एक शिष्य ने संत कृपाल सिंह जी को 5 रुपये बतौर सेवा पेश किए और यह समझ कर रोने लगा कि यह बहुत कम है। हजूर ने सेवा ली और कहा, "आपने मुझे 5 रुपये दिये, मेरे लिए 5 लाख के बराबर हैं। ये पैसे आपने मुझे दिये हैं। क्या ये मेरे हो चुके?" तो शिष्य ने कहा, "हां महाराज जी।" "मैं ये अब किसी को भी दे सकता हूं?" शिष्य ने हां में जवाब दिया। तब महाराज जी ने उस शिष्य से कहा, "लो पकड़ो।" यह देखकर जब वह रोने लग पड़ा तो ताई जी के कहने पर हजूर ने वह सेवा रख ली।

-एक बार मानव केंद्र, देहरादून में एक ट्रैक्टर सरोवर की ऊंची सतह को लेवल कर रहा था। ड्राईवर ट्रैक्टर को खड़ा करके गुड़ चने खाने लगा। एक छोटे बच्चे ने, जो ड्राईवर के साथ बैठा था, अचानक ही ट्रैक्टर को स्टार्ट कर दिया और ट्रैक्टर बच्चे और ड्राईवर समेत 5-6 फुट नीचे बिल्कुल उलटा गिर पड़ा लेकिन सभी के लिए आश्चर्यजनक बात यह थी कि दोनों को थोड़ी सी भी खरोंच नहीं आई तथा ट्रैक्टर को भी कोई नुकसान नहीं पहुंचा।

-एक शाम को जब हजूर अपने निवास स्थान पर बरामदे में टहल रहे थे तो एक शिष्य ने प्रार्थना की कि वह अभ्यास में तरक्की नहीं कर रहा। महाराज जी ने उससे पूछा कि वह जब आंखें बन्द करता है तो अंतर में क्या नज़र आता है? शिष्य ने कहा, "कुछ खास नज़र नहीं आता।" महाराज जी ने उसी वक्त कहा, "अपना ध्यान उस ना-खास में टिकाओ" और यकीन दिलाया कि इस तरह से अभ्यास में तरक्की होगी।

-विश्व धर्म संघ का चौथा सम्मेलन संत कृपाल सिंह जी की अध्यक्षता में रामलीला ग्राऊंड, दिल्ली में हुआ। वहां संत कृपाल सिंह जी को चौथी बार विश्व धर्म संघ का अध्यक्ष चुना गया।

-**अप्रैल 3 –** संत कृपाल सिंह जी की धर्मपत्नी माता कृष्णावंती का देहान्त हो गया।

1971:

-**29 जून**-महाजन नर्सिंग होम, दिल्ली में हजूर का एक सफल आप्रेशन हुआ।

1972:

-**14 मार्च –** तत्कालीन राष्ट्रपति वी.वी. गिरी मानव केन्द्र, देहरादून पधारे।

- **26 अगस्त**-संत कृपाल सिंह जी तीसरी विश्व यात्रा के लिए दिल्ली से रवाना हुए।

1973 :

-**2 जनवरी**-हजूर तीसरी विश्व यात्रा समाप्त करके दिल्ली पहुंचे।

-**6 फरवरी**-संत कृपाल सिंह जी का अस्सीवां जन्म दिन मनाया गया।

-**7 फरवरी**-संत कृपाल सिंह जी को राजा महिंद्र प्रताप ने दिल्ली के विज्ञान भवन के कांÝस सैंटर में अभिनन्दन पत्र से सम्मानित किया जो भारत के कई धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक नेताओं की ओर से था।

–2 अप्रैल-मानव केंद्र, देहरादून में राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया। वहां अस्पताल, वृद्धाश्रम, स्कूल और फार्म का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया।

– **अप्रैल** – विज्ञान भवन, नई दिल्ली में स्वतंत्रता सेनानी सम्मेलन।

– 13 **अप्रैल** – श्री जी0 एस0 पाठक, भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति का मानव केंद्र, देहरादून में आगमन।

– 14 **अप्रैल** – उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री अकबर अली खान का मानव केंद्र में आगमन।

– **जून** – काश्मीर का दौरा

– अक्तूबर – पंजाब का दौरा

– दिसंबर – बम्बई का दौरा

1974:

– जनवरी – संत कृपाल सिंह जी ने दूसरे मानव केंद्र, कंडारी, जिला बड़ौदा (गुजरात) का उद्घाटन किया।

– **3 – 6 – फरवरी** – संत कृपाल सिंह जी ने दिल्ली में विश्व मानव एकता सम्मेलन बुलाया और उस की अध्यक्षता की जिसमें आस्ट्रेलिया, आस्ट्रिया, कनाडा, कोलंबिया, इक्वेडोर, इंग्लैंड, Ýास, जर्मनी, घाना, यूनान, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, माल्टा, नाईजीरिया, थाईलैंड और अमेरिका से प्रतिनिधि शामिल हुए।

– 12 **अप्रैल – कुम्भ मेला हरिद्वार** – संत कृपाल जी ने राष्ट्रीय एकता कान्Ý!l बुलाई और इसकी अध्यक्षता की जिसमें 5 लाख साधुओं के मुखिया पहली बार इकट्ठे बैठे। उन्होंने मता पास किया कि सभी धार्मिक पुरुषों को राष्ट्रीय एकता का संदेश फैलाने के लिए दूर दूर तक जाना चाहिए।

– 26 – 27 जुलाई – संत कृपाल सिंह जी ने दिल्ली में राष्ट्रीय संत समागम का आयोजन किया।

– **29 जुलाई** – संत कृपाल सिंह जी ने 1087 जीवों को अन्तिम नाम दान दिया।

– **15 अगस्त – भारत का स्वतंत्रता दिवस** – सावन आश्रम में हजूर ने हिंदी में अन्तिम सत्संग किया जिसमें उन्होंने इन्सान की मन – इंद्रियों से निजी स्वतंत्रता पर बल दिया।

– **17 अगस्त – अन्तिम दर्शन** – हजूर ने विदेशी शिष्यों को सावन आश्रम दिल्ली में अंग्रेजी में अंतिम वचन फरमाए।

– **21 अगस्त – शाम** – संत कृपाल सिंह जी ज्योति जोत समा गए।

Sources :

- **Sat Sandesh- The message of the Masters**
- **How I Met My Master**

  Talk given by Sant Kirpal Singh on January 24, 1964 in Washington, D.C. Printed in Sat Sandesh, July 1975
- **The Night is a Jungle**

  Ruhani Satsang-Divine Science of the Soul, 2nd edition (1984)
- **Morning Talks**

  Ruhani Satsant - Divine Science of the Soul, 5th edition (1988)
- **The Light of Kirpal**

  Sant Bani Press, Sant Bani Ashram, Sornobornton, NH, 4th edition (1966)
- **A brief life- sketch of Hazur Baba Sawan Singh Ji Maharaj**

  by Sant Kirpal Singh (included in: A great Saint - Baba Jaimal Singh)

  The Beloved Master

  by Bhadra Sena, Ruhani Satsang, Sawan Ashram, Shakti Nagar, Delhi-7, India. 1st edition (1963)

- **The Saint and His Master**

  by M.B. Sahai and R.K. Khanna, Ruhani Satsang, Sawan Ashram, Shakti Nagar, Delhi-7, India. 1st edition (1968)

- **Portrajt of Perfection**

  SK Publications, KIrpal Ashram, 2 Canal Road, Vijay Nagar, Delhi 110009, India. 2nd edition (1994)

- **The Ocean of Grace Divine**

  Bhadra Sena (editor), Kirpal Printing Press, 29/1, Shakti Nagar, Delhi 110007, India. 1st edition (1976)

- **Pita-Poot (Father & Son-Sawan and Kirpal)**

  Hindi Book by Harish Chander Chadha, Editor Hindi Sat Sandesh, Ruhani Satsang, Sawan Ashram, Shakti Nagar, Delhi - 110007, India. 1st edition (1970).